लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–9

इल पैन्टामिरोन–2

जियामबतिस्ता बासिले

1634–36

अंग्रेजी अनुवाद जौन एडवर्ड टेलर – **1847**

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-9
Book Title: Il Pentamerone-2
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

इल पैन्टामिरोन–2........ 7

17 3–1 कैनैटैला 9

18 3–7 कौरवैतो........ 23

19 3–8 बेवकूफ........ 35

20 4–1 मुर्गे के सिर में पत्थर........ 48

21 4–3 तीन सम्मोहित राजकुमार........ 58

22 4–5 ड्रैगन........ 72

23 4–7 दो केक........ 91

24 4–8 सात फाख्ताऐं 103

25 4–9 रैवन........ 127

26 5–2 महीने 151

27 5–3 पिन्टोसमाल्टो........ 161

28 5–4 सुनहरी जड़........ 172

29 5–5 सूरज चॉद और तालिया........ 190

30 5–8 नैनीलो और नैनैला 200

31 5–9 तीन सन्तरे 211

32 अन्त........ 231

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इल पैन्टामिरोन–2

लोक कथाओं के इतिहास में तीन मुख्य काल हैं – प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल।[2] मध्य काल में लिखी गयी तीन पुस्तकें बहुत मशहूर हैं – इल डैकामिरोन–1351, स्ट्रारपरोला की रातें–1550–1553, इल पैन्टामिरोन–1634–1636। तीनों इटली के लेखकों ने लिखी हैं। इसी समय में छपाई भी शुरू हुई सो ये तीनों पुस्तकें लिखने के बाद ही छप गयीं पर छपी ये अपनी ही भाषा में। दुर्भाग्य से इनका अनुवाद करने में कुछ समय लग गया और जब तक इन पुस्तकों का अंगेजी में अनुवाद नहीं किया गया ये दुनियॉ में नहीं फैल पार्यी।

इल पैन्टामिरोन प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में तीसरी सबसे पुरानी पुस्तक है। अपनी इस "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" संग्रह में हमने इसे शामिल कर लिया है। पैन्टामिरोन की ये कथाऐं इटली में इटली के एक कवि और दरबारी ने लिखी थीं। ये लोक कथाऐं अरेबियन नाइट्स की कहानियों की शैली पर आधारित है।

इसके लेखक हैं जियामबतिस्ता वासिले और इन्होंने इसको नैपिल्स में नैपोलिटन भाषा में 17वीं सदी में यानी 1634–1636 में लिखा था। ये एक दरबारी और कवि थे। इसकी भाषा ने इसको दुनियॉ से 200 साल तक छिपा कर रखा। इसमें 50 कहानियॉ हैं जिन्हें 10 स्त्रियों ने 10–10 कहानियॉ 5 दिनों तक रोज सुनायी हैं। दुर्भाग्य से ये कथाऐं उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं हो सकी थीं। उनकी मृत्यु के बाद में इनको उनकी बहिन ने प्रकाशित करवाया।

परियों की कथाओं के नाम से तो बहुत सारी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं पर केवल यही एक पुस्तक ऐसी है जिसकी सारी कहानियॉ इस श्रेणी में रखी जा सकती हैं और यह ऐसी कथाओं का पहला संग्रह है। ग्रिम ब्रदर्स[3] जिनका नाम कहानियों की दुनियॉ में बच्चा बच्चा जानता है उन्होंने भी इस संग्रह को पहला परियों की कथाओं का संग्रह बताया है और इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। यह संग्रह दुनियॉ में बहुत दिनों तक सबसे अच्छा संग्रह माना जाता रहा था।

इसका पहला अनुवाद जर्मन भाषा में 1846 में हुआ था। फिर इसके दो अनुवाद अंग्रेजी में हुए। एक अनुवाद सन् 1847 में जौन ऐडवर्ड टेलर ने किया जिसमें उन्होंने 32 बेतरतीबवार चुनी हुई कथाऐं दीं। इसके अलावा इसमें केवल कथाऐं ही हैं। दूसरा अनुवाद 1893 में सर रिचर्ड फ्रान्सिस बरटन[4] ने किया जिसमें इस पुस्तक की सारी कथाऐं हैं और पूरी हैं। इसका तीसरा अनुवाद इटैलियन भाषा में 1925 में हुआ। उसके बाद इटैलियन भाषा के अनुवाद से एक और अनुवाद अंग्रेजी में 1934 में नौरमैन एन पैनज़र[5] ने किया। फिर एक नया अनुवाद अंग्रेजी में 2007 में वेन स्टेट यूनिवर्सिटी अमेरिका ने प्रकाशित किया। इसके बाद इसको पैनगुइन बुक्स ने इसे 2017 में प्रकाशित किया। हमारा यह अनुवाद 1847 में किये गये अंग्रेजी अनुवाद से लिया गया है जिसे जौन एडवर्ड टेलर ने किया था। यह पुस्तक कई वैब साइट्स पर मौजूद है।[6]

---

[2] Read a brief history of folktales of the world at : http://www.sushmajee.com/folktales/1-introduction.htm

[3] Grimm Brothers

[4] Sir Richard Francis Burton. "Il Pentamerone". London : Henry & Co. 1893. 2 vols. Available at : https://burtoniana.org/books/1893-Pentamerone/burton-1893-Pentamerone-2in1-fixed.pdf

[5] Norman N Penzer, 1934.

[6] These tales have been taken from the Web Site : http://fairytales.com
The text of this book is based on John Edward Taylor's translation from 1847. 32 tales.
Also available at : https://www.worldoftales.com/Italian_folktales.html
Also available at http://www.surlalunefairytales.com/pentamerone/index.html

हिन्दी में इसका यह पहला अनुवाद है।

इस पूरे काहानी संग्रह का लोक कथाओं या परियों के कहानी संग्रहों मे बहुत बड़ा महत्व है। वह ऐसे कि जब तुम ये कहानियॉ पढ़ोगे तो तुम्हें हर कहानी पढ़ कर यही लगेगा कि “अरे ऐसी कहानी तो हमने पढ़ी है।” इस प्रकार यह कहानी संग्रह आने वाले कहानीकारों के लिये एक आधार बना और बहुत सारी कहानियॉ इन कहानियों के आधार पर लिखी गयीं।

इन कहानियों की एक खासियत और है वह यह कि इसकी हर कहानी उस कहानी के एक बहुत ही छोटे से परिचय से शुरू होती है और एक कहावत से खत्म होती है। हमें कहानी कहने वाले का नाम नहीं पता चल सका है क्योंकि टेलर ने उसे कहीं दिया हुआ ही नहीं है।

इसकी दूसरी खासियत है इसके अंग्रेजी रूप में इसकी भाषा बहुत ही सुन्दर है जिसमें कई नयी कहावतें कई नयी उपमाऐं और किसी बात को कहने के कई नये ढंग मिलते हैं जिनसे कहानी की शैली में चार चॉद लग जाते हैं। यह कहानी को थोड़ा सा साहित्यिक रूप देने में सहायता करती है। पर इसके साथ ही एक बात और ध्यान देने योग्य है कि इन कहानियों की बहुत सारी उपमाऐं और रूपक और कहावतें हमारे भारत के ऐसे अलंकारों से बहुत ही भिन्न हैं और भारतीयों के लिये अनजाने हैं इसलिये उन्हें समझने की आवश्यकता नहीं है उसे भाषा और संस्कृति का भेद समझ कर स्वीकार कर लेना चाहिये।

इस विषय में हम एक बात और कहना चाहेंगे। विकीपीडिया में पैन्टामिरोन की सारी कहानियों की लिस्ट मिलती है। वही लिस्ट हमने यहॉ इस पुस्तक में सबसे पीछे दे रखी है। टेलर ने इस पुस्तक से केवल **32** कथाऐं अनुवाद की हैं जो उन्होंने बीच बीच में से चुनी हैं। इस पुस्तक का पहला भाग हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं जिसमें उसकी **16** कहानियॉ दी गयी थीं। यह उसका दूसरा भाग है जिसमें उसकी शेष **16** कहानियॉ दी जा रही हैं — “इल पैन्टामिरोन **17–32**”। पर फिर भी ये केवल **32** कहानियॉ ही हैं। बची हुई **19** कहानियॉ एक और पुस्तक “इल पैन्टामिरोन की कथाऐं” जिनका अनुवाद सर रिचर्ड बरटन ने किया है में से दी गयी हैं।

इस तरह से इसकी सारी **50** कहानियॉ तीन पुस्तकों में दी गयी हैं।

इन कहानियों का शीर्षक देते समय दो नम्बर दिये गये हैं। एक तो कहानी का सामान्य नम्बर जैसे **1 2 3 4** आदि। और दूसरा नम्बर दिन का नम्बर और कहानी का नम्बर बताता है जैसे **4–5**। इसमें **4** नम्बर दिन का है और **5** नम्बर पॉचवीं कहानी का। इसलिये यह नम्बर ऐसे लिखा हुआ है — **9 1–9**। यानी इस पुस्तक में यह कहानी नवीं कहानी है जबकि पैन्टामिरोन में यह कहानी पहले दिन नवीं कहानी सुनायी गयी है।

आशा है कि लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें की सीरीज़ में **386** साल पुरानी यह पुस्तक आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये इटली की ये पुरानी लोक कथाऐं अब पहली बार हिन्दी में।

17 3–1 कैनैटैला[7]

गेहूँ की रोटी से ज़्यादा अच्छी चीज़ माँगना बुरी बात है क्योंकि एक आदमी आखीर में वह माँगता है जिसे लोग फेंक देते हैं। उसको ईमानदारी से सन्तुष्ट रहना चाहिये। क्योंकि जो सब कुछ खो देता है और जो पेड़ों के ऊपर चलता है वह दिमाग से पागल होता है और उसके रास्ते में बहुत खतरे होते हैं। यही बात एक राजकुमारी के दिमाग में भी थी जिसकी मैं अब कहानी सुनाने जा रही हूँ।

एक बार की बात है कि हाई हिल[8] का एक राजा था जिसको बच्चों की बहुत इच्छा थी। इतनी जितनी कि पोर्टर्स को भी दफ़न की नहीं होती जिससे वे मोमबत्तियाँ इकट्ठी कर लेते हैं। आखिर उसकी पत्नी ने एक छोटी सी बेटी को जन्म दिया जिसका नाम उन्होंने रखा कैनैटैला।

बच्ची हाथों हाथ बढ़ती गयी और जब वह एक लट्ठे जितनी लम्बी हो गयी तो राजा ने उससे कहा — "मेरी बच्ची। अब तुम ओक के पेड़ के बराबर बड़ी हो गयी हो अब तुमको अपने रूप के अनुसार शादी कर लेनी चाहिये।

क्योंकि मैं तुम्हें अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करता हूँ और तुम्हें खुश देखना चाहता हूँ तो तुम मुझे बताओ कि तुम्हें कैसा पति चाहिये। किस तरह का आदमी तुमको खुश कर सकेगा – कोई

[7] Cannetella. (Tale No 17) Day 3, Tale No 1

[8] High Hill – name of a place

विद्वान किस्म का या कोई बेवकूफ सा। कोई लड़का या फिर थोड़ा बड़ा आदमी।

कत्थई गोरा या काला। लम्बा जैसे रोशनी के खम्भे होते हैं या फिर छोटा जैसे खूँटे होते हैं। जिसकी कमर पतली हो या फिर वह बैल जैसा मोटा हो। तुम अपने आप चुनो मैं राजी हूँ।"

कैनैटैला ने उसे धन्यवाद दिया पर उसने कहा कि वह किसी आदमी से शादी नहीं करेगी। पर राजा के बार बार जिद करने पर उसने कहा — "आपके इतने प्यार के लिये मैं कृतघ्न नहीं होना चाहती और आपकी इच्छा के अनुसार चलना चाहती हूँ। मुझे ऐसा पति चाहिये जिसके जैसा दुनियाँ में और कोई न हो।"

उसका पिता यह सुन कर बहुत खुश हुआ। अब वह सुबह से शाम तक अपनी खिड़की के पास ही बैठा रहता और आते जाते सबको देखता रहता नापता तौलता रहता जो उसकी बेटी को पसन्द आ जाये।

एक दिन एक सुन्दर सा लड़का सड़क पर जाता देख कर उसने अपनी बेटी को पुकारा — "आओ बेटी कैनैटैला देखो अगर यह आदमी तुम्हारी आँखों को जँचता हो तो।"

उसने उसे ऊपर बुलवाने की इच्छा प्रगट की और उसके लिये एक बहुत ही बढ़िया दावत का इन्तजाम किया। उसमें वह सब कुछ था जो वह चाह सकता था। जब वे खाना खा रहे थे तो नौजवान के मुँह से एक बादाम नीचे गिर पड़ा।

यह देख कर वह नीचे झुका और उसे बड़े लालची ढंग से उठा कर एक कपड़े में रख लिया। जब उन सबने खाना खत्म कर लिया तो वह वहॉ से चला गया।

राजा ने कैनैटैला से पूछा — "मेरी बच्ची यह नौजवान तुम्हें कैसा लगा।"

बेटी ने कहा — "इस आदमी को यहॉ से ले जाओ। एक आदमी जो इतना लम्बा है और जो इतना बड़ा है उसको अपने मुंह से बादाम नहीं गिराना चाहिये था।"

जब राजा ने यह सुना तो वह फिर से अपनी खिड़की पर आ कर बैठ गया। एक दिन फिर उसने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान सामने से गुजरता देखा तो उसको देख कर उसने फिर से अपनी बेटी को पुकार कर उसे दिखा कर उससे पूछा — "यह नौजवान तुम्हें कैसा लग रहा है।"

कैनैटैला ने फिर उसे ऊपर बुला लिया और उसके स्वागत में फिर एक दावत रखी गयी। जब उन्होंने खाना खा लिया तो वह आदमी भी चला गया। राजा ने उससे उस नौजवान के बारे में पूछा तो वह बोली — "मैं एक ऐसे आदमी से शादी क्यों करूॅ जिसको अपना शाल उतारने के लिये दो आदमी चाहिये।"

राजा बोला — "अगर केवल यही बात है तो यह तो केवल शादी न करने का बहाना है। ऐसा लगता है कि तुम मेरी इस खुशी को टालने का कोई न कोई बहाना खोजती रहती हो। इसलिये जैसा

भी तुम्हें चाहिये निश्चय कर लो। मैं तुम्हारी शादी करने का निश्चय कर चुका हूॅ।"

राजा के ये गुस्से भरे शब्द सुन कर कैनैटैला बोली — "प्रिय पिता जी अगर आपसे मैं सच कहॅू तो आप समुद्र में खुदाई कर रहे हैं और ॲगलियों पर गलत गिन रहे हैं। मैं किसी ऐसे आदमी को अपने आपको नहीं दे सकती जिसके सिर और दॉत सोने के न हों।"

बेचारे राजा ने जब अपनी बेटी का दिमाग इस तरह से फिरते देखा तो एक ढिंढोरा पिटवा दिया कि उसके राज्य में कोई भी जो उसकी बेटी कैनैटैला की इच्छा पूरी कर देगा वह उसी को अपनी बेटी और राज्य दे देगा।

इस राजा का एक दुश्मन था जिसका नाम था फ़िओरावैन्ते।[9] उससे उसको इतनी नफरत थी कि वह उसको दीवार पर रंगा हुआ तक नहीं देख सकता था। वह एक चालाक जादूगर भी था।

जब उसने यह ढिंढोरा सुना तो उसने अपने नीच साथियों को बुलाया और उनसे उसका सिर और दॉत दोनों ही सोने के बनाने के लिये कहे। उन्होंने वैसा ही कर दिया जैसा कि उसने उनसे करने के लिये कहा था।

जब उसने देख लिया कि उसका सिर और दॉत दोनों सोने के हो गये तो वह राजा की खिड़की के सामने से गुजरा। अब राजा तो

[9] Fioravente – name of the enemy of the King

रोज ही अपनी खिड़की पर बैठा रहता था तो जिस दिन यह जादूगर वहाँ से गुजरा तो राजा ने सोचा कि उसकी बेटी को उसका पति मिल गया। उसने तुरन्त ही अपनी बेटी को आवाज लगा कर बुलाया और उस आदमी को उसे दिखाया।

जैसे ही कैनैटैला ने उसको देखा तो चिल्ला पड़ी — "हाँ यही तो है वह। वह इससे अच्छा तो हो ही नहीं सकता अगर मैंने इसको अपने हाथों से न गूँधा तो।"

जब फ़िओरावैन्ते ऊपर आ रहा था तो राजा ने उससे कहा — "ज़रा ठहरो। इतनी भी क्या जल्दी है। लोगों को लगेगा कि तुम्हारे शरीर में पारा भरा है। ज़रा सँभाल के। मैं तुम्हें अपनी बेटी और राज्य दोनों दे दूँगा और सामान और नौकर भी दे दूँगा क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह तुम्हारी पत्नी बन जाये।"

फ़िओरावैन्ते बोला — "आपका बहुत बहुत धन्यवाद पर इस सबकी कोई जरूरत नहीं। मेरे लिये तो एक घोड़ा ही काफी है अगर वह हम दोनों को ले जा सके तो। नौकर चाकर आदि तो मेरे अपने पास ही इतने हैं जितने कि समुद्र के किनारे पड़े हुए रेत के कण।"

सो कुछ देर बहस करने के बाद फ़िओरावैन्ते जीत गया और कैनैटैला को घोड़े पर अपने पीछे बिठा कर अपने घर की तरफ चल दिया।

शाम को आसमान की चक्की से जब लाल घोड़े चले गये और उनकी जगह उसमें सफेद बैल जोत दिये गये तो वे एक घुड़साल के

पास आये जहाँ कुछ घोड़े चर रहे थे। वहाँ फ़िओरावैन्ते उसको उस घुड़साल की तरफ ले गया और बोला —

"मुझे अपने घर जाना है और वहाँ पहुँचने में मुझे सात साल लगेंगे। ध्यान से सुनो। तुम तब तक इसी घुड़साल में रहो और मेरा इन्तजार करो। यहाँ से कहीं बाहर मत जाना और न किसी दूसरे को अपने आपको देखने देना। नहीं तो तुम ज़िन्दगी भर याद रखोगी।"

कैनैटैला बोली — "तुम ही मेरे मालिक हो तुम ही मेरे स्वामी हो। मैं तुम्हारे हुक्म का शब्द ब शब्द पालन करूँगी। पर मुझे यह तो बताते जाओ कि मैं यहाँ किस चीज़ पर ज़िन्दा रहूँगी।"

फ़िओरावैन्ते बोला — "ये घोड़े जो दाना अपने खाने में से छोड़ देंगे वह तुम्हारे लिये काफी होगा।"

बस अब तुम सोच सकते हो कि कैनैटैला को यह सब सुन कर कैसा लगा होगा। क्या उसने उस पल को नहीं कोसा होगा जिस पल वह पैदा हुई थी। ठंडी और जमी हुई कैनैटैला ने अपने दिमाग में तो यह सोच रखा था कि उसे खाने में क्या क्या चाहिये और यहाँ उसे मिला यह घोड़े का छोड़ा हुआ दाना।

अपनी बदकिस्मती पर रोते हुए जो उसको राजमहल से इस घुड़साल में ले आया था जो उसको सेमल की रुई के गद्दों से भूसे के गद्दे तक ले आया था और बढ़िया मुलायम स्वादिष्ट खानों से यहाँ घोड़ों के छोड़े हुए खाने तक ले आया था उसने वहाँ कई महीने

बिता दिये। कोई अनदेखा हाथ घोड़ों को खाना दे जाता था और वे जो कुछ छोड़ते उसको उसी पर ज़िन्दा रहना पड़ता था।

पर इस समय के आखीर में एक दिन जब वह खड़ी हुई एक छेद में से बाहर झॉक रही थी तो उसने एक बहुत सुन्दर बागीचा देखा जिसमे बहुत सारे फलों के बहुत सारे पेड़ लगे हुए थे – नीबू सन्तरे और दूसरे फलों के पेड़ फूलों की बड़ी बड़ी क्यारियॉ बेलें आदि आदि। यह दृश्य तो दिल को बहुत खुश कर देने वाला था।

यह देख कर उसके मन में अंगूर का एक गुच्छा तोड़ कर खाने की इच्छा हो आयी। उसने सोचा — "जो होता है होने दो। आसमान गिरता है तो गिरने दो। मैं चुपके से जाऊॅगी और उसे बिना आवाज किये तोड़ कर ले आऊॅगी।

मेरे पति से कहने वाला यहॉ कौन है। और अगर इत्तफाक से वह अगर सुन भी ले तो तो वह मेरा क्या कर लेगा। इसके अलावा ये अंगूर भी कोई मामूली किस्म के अंगूर तो हैं नहीं।" यह सोच कर वह बाहर गयी। अपने आपको ताजा किया जो भूख की वजह से बेहाल हो रहा था।

कुछ समय बाद पर समय पूरा होने से पहले ही उसका पति वापस आया तो उस घुड़साल के घोड़ों में से एक घोड़े ने शिकायत की कि कैनैटेला ने अंगूर खाये हैं।

यह सुन कर फ़िओरावैन्ते को बहुत गुस्सा आया। और वस वह उसको तलवार निकाल कर मारने ही वाला था कि कैनैटेला ने उसके

पैरों पर गिर कर उससे माफी मॉग ली। क्योंकि भूख ही भेड़िये को जंगल से खींच कर ले जाती है।

उसने उससे इतनी ज़्यादा विनती की फ़िओरावैन्तै बोला — "चलो इस बार तो तुम्हें माफ किया। मैं तुम्हें दान के तौर पर ज़िन्दा छोड़े देता हूँ पर अगर फिर कभी तुमको मेरा कहा न मानने का लालच आया और मुझे लगा कि सूरज ने तुम्हें देखा है तो मैं तुम्हारी चटनी बना दूँगा।

अब फिर ध्यान से सुनो। मैं एक बार फिर जा रहा हूँ और सात साल बाहर रहूँगा सो अपना ख्याल रखना और सीधे से रहना क्योंकि तुम आसानी से यहॉ से बच नहीं पाओगी बल्कि मैं तुम्हें नये और पुराने कामों का बदला एक साथ दूँगा।"

ऐसा कह कर वह वहॉ से चला गया। कैनैटैला तो यह सुन कर ऑसू बहाने लगी। हाथ मरोड़ने लगी। छाती पीटने लगी और अपने बाल नोचने लगी।

वह बोली — "मैं इस तरह की बदकिस्मती ले कर इस दुनियॉ में क्यों पैदा हुई। ओह पिता जी आपने मुझे क्यों बरबाद किया। पर मैं अपने पिता की ही शिकायत क्यों करूँ जब कि यह सब मेरा अपना किया धरा है। मैं खुद अपने आप ही इस बदकिस्मती की जिम्मेदार हूँ।

मैंने केवल सोने के सिर और सोने के दॉत की ही तो इच्छा की थी जिसकी वजह से मुझे इतना दुख मिला और लोहे से मौत मिली।

यह सब किस्मत की दी हुई सजा है। क्योंकि मुझे अपने पिता की इच्छा का ख्याल रखना चाहिये था। जो आदमी अपने माता पिता की इच्छा का आदर नहीं करता उसको यही पता नहीं होता कि वह जा कहॉ रहा है।”

इस तरह से वह रोज दुखी होती रही। उसकी ऑखें अब तक दो फव्वारे बन गये थे। उसका चेहरा इतना पतला हो गया था कि इस समय अगर उसका पिता भी उसको देखता तो न पहचान पाता।

एक साल गुजर जाने के बाद इत्तफाक से राजा का ताला बनाने वाला जिसे कैनैटैला भी जानती थी घुड़साल के पास से गुजरा। कैनैटैला ने उसे आवाज दी और घुड़साल से बाहर गयी।

ताला बनाने वाले ने अपना नाम तो सुना पर वह लड़की को नहीं पहचान सका क्योंकि वह तो बहुत बदल गयी थी।

जब उसने यह जाना कि वह कौन थी और वह ऐसे कैसे बदल गयी थी तो कुछ तो उसे उसके ऊपर दया आ गयी और कुछ उसने सोचा कि उसके ऊपर राजा खुश हो जायेगा उसने उसको एक बक्से में बन्द कर लिया जो उसके घोड़े पर था और हाई हिल की तरफ चल दिया।

वह आधी रात को राजा के महल में पहुॅचा। वहॉ पहुॅच कर उसने महल का दरवाजा खटखटाया। पहले तो नौकर ने उसको अन्दर नहीं आने दिया फिर उससे इस अजीब समय पर आने के

लिये बुरा भला कहा कि वह इस समय यहाँ शोर मचा कर सबकी नींद खराब कर रहा था।

राजा ने यह शोर सुना तो पता किया कि क्या बात थी। उसके नौकर ने उसे बताया कि क्या बात थी तो उसने हुक्म दिया कि ताला बनाने वाले को तुरन्त ही उसके सामने लाया जाये। क्योंकि उसको लगा कि इस अजीब समय पर उसके आने का मतलब भी कोई बहुत जरूरी काम होगा।

ताला बनाने वाले ने बक्सा घोड़े पर से उतारा और बक्से पर एक घूँसा मारा तो उसमें से कैनैटैला निकल पड़ी। उसको अपने पिता को अपने आपको पहचानने के लिये शब्दों से कहीं ज़्यादा निशानों की जरूरत थी।

अगर उसकी एक बाँह पर एक जन्म का निशान न होता तो उसको तो वहाँ से यकीनन बाहर निकाल दिया जाता। पर जैसे ही उसको सच का विश्वास हो गया उसने उसको गले लगा कर हजारों बार चूमा।

उसको तुरन्त ही गर्म पानी से नहला कर तैयार करने का हुक्म दिया गया। जब वह सिर से पाँव तक साफ हो ली कपड़े पहन लिये तब उसने उसके लिये खाना मँगवाया क्योंकि वह तो भूख से बेहोश सी हुई जा रही थी।

तब राजा ने अपनी बेटी से कहा — “यह मुझे क्या पता था कि मैं अपनी बच्ची को इस हालत में देखूँगा। किसी ने मुझे बताया ही नहीं। इतनी बुरी हालत में तुम्हें कौन लाया?”

कैनैटैला बोली — “अफसोस पिता जी। उस जंगली तुर्क ने मेरी ज़िन्दगी एक कुत्ते जैसी कर दी कि मैं बार बार मौत के दरवाजे पर खड़ी थी। मै आपको नहीं बता सकती कि मैंने कितना दुख सहा है। अब मैं आपकी छाया में हूँ अब मैं यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगी।

बल्कि मैं यहीं रह कर एक नौकरानी का काम करूँगी बजाय इसके कि किसी दूसरे के घर में जा कर रानी बनूँ। मैं यहाँ टाट के कपड़े पहन लूँगी बजाय इसके कि मैं दूसरे के घर में सोने के कपड़े पहनूँ। मैं आपके रसोईघर में सबसे नीचा काम कर लूँगी बजाय इसके कि दूसरे के घर में मैं जा कर राजदंड पकड़ कर बैठूँ।”

इस बीच फ़िओराबैन्ते घर लौटा तो उसके घोड़ों ने उसे बताया कि राजा का ताला बनाने वाला कैनैटैला को यहाँ से एक बक्से में बन्द कर के ले गया है।

यह सुन कर शर्म से लाल हो कर और गुस्से में भर कर फ़िओराबैन्ते हाई हिल की तरफ चला। वहाँ जा कर वह एक बुढ़िया से मिला जो महल के सामने ही रहती थी। उसने बुढ़िया से पूछा — “माँ जी आप राजा की बेटी से मिलवाने का क्या लेंगी?”

बुढ़िया बोली — “सौ डकैट।”

फ़िओरावैन्ते ने तुरन्त ही अपनी जेब में हाथ डाला और सौ डकैट उसको गिन कर दे दिये। बुढ़िया उसको ले कर छत पर गयी तो वहाँ उसने देखा कि कैनैटैला छज्जे पर खड़ी हो कर अपने बाल सुखा रही थी।

पर उसे लगा जैसे उसके दिल ने कहा कि कुछ है सो उसने पलट कर देखा तो उसने अपने पति को देखा तो वह तो डर के मारे अपने पिता के पास भाग गयी और बोली — "माई लौर्ड। अगर आपने मेरे लिये अभी अभी सात लोहे के दरवाजों वाला एक कमरा नहीं बनवाया तो समझिये कि मैं तो बस फिर हमेशा के लिये गयी। फिर आप कुछ नहीं कर पायेंगे।"

राजा बोला — "बेटी इतनी छोटी सी चीज़ के लिये मैं तुझे खोने नहीं दूँगा। अपनी प्यारी बेटी को सन्तुष्ट करने के लिये तो मैं किसी की आँख भी निकाल सकता हूँ।"

जैसे ही उसने यह कहा लोहे के सात दरवाजे बनवाये गये।

जैसे ही फ़िओरावैन्ते ने यह सुना तो वह फिर से उसी बुढ़िया के पास गया और उससे कहा — "मैं आपको क्या दूँ। आप अभी अभी रूज के बर्तन बेचने के लिये राजा के महल में जायें और फिर उसकी बेटी के कमरे तक पहुँच जायें।

जब आप उसके कमरे में पहुँच जायें तो इस छोटे से कागज को उसके बिस्तर के गद्दे और चादर के बीच रखने की कोशिश करें और धीमी आवाज में उससे कहें —

हर आदमी गहरी नींद सो जाये पर कैनैटैला जागती रहे।

इस तरह बुढ़िया एक और सौ डकैट में उस जादूगर का यह काम करने के लिये तैयार हो गयी। जैसे ही उसने यह चाल खेली कि उस घर के सारे लोग इतनी गहरी नींद में सो गये जैसे वे सब मर गये हों।

पर केवल कैनैटैला ही जागती रही। जब उसने दरवाजा खुलने की आवाज सुनी तो उसने इतनी ज़ोर से रोना शुरू कर दिया जैसे कि वह जल रही हो। पर किसी ने उसका रोना नहीं सुना सो कोई उसकी सहायता करने नहीं आया।

फ़िओरावैन्ते ने सातों दरवाजे तोड़ डाले और उसके कमरे में पहुँच कर उसको पकड़ लिया। उसने उसको बिस्तर सहित उठा लिया पर जैसा कि किस्मत में लिखा था होना तो वही था। उसका वह कागज जो बुढ़िया ने उसके बिस्तर में रखा था पता नहीं किस तरह से उससे वहीं कहीं नीचे गिर पड़ा।

जैसे ही वह कागज नीचे गिरा तो उसका जादू टूट गया। सब लोग जाग गये और कैनैटैला की चीख पुकार सुन कर सब वहीं आ गये। उन्होंने ओगरे को पकड़ लिया और तुरन्त ही छोटे छोटे टुकड़ों में काट दिया।

इस तरह से वह अपने बिछाये जाल में खुद ही फँस गया।

इससे यही सीख मिलती है —

किसी को इससे ज़्यादा दर्द नहीं मिलता
जितना कि वह अपनी ही तलवार के काटे जाने से सहता है

18 3–7 कौरवैतो[10]

मैंने एक बार सुना था कि जूनो "झूठ" जानने के लिये कैन्डिया के पास गया था।[11] पर अगर कोई मुझसे पूछे कि धोखाधड़ी और पाखंड कहाँ पाया जाता है तो मेरे पास बताने के लिये दरबार के अलावा और कोई जगह नहीं है जहाँ कलंक हमेशा आनन्द का मुखौटा पहने रहता है।[12] जहाँ उसी समय लोग काटते भी हैं और सीते भी हैं घायल भी करते हैं और इलाज भी करते हैं तोड़ते भी हैं और जोड़ते भी हैं। ऐसा ही एक उदाहरण अब मैं आपको अपनी इस कहानी में दूँगी जो मैं अभी आप सबको सुनाने जा रही हूँ।

बहुत पुरानी बात है कि वाइड रिवर[13] के राजा के पास एक खुश खुश नौजवान काम करता था जिसका नाम था कौरवैतो। वह सबके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करता था सो राजा उसको बहुत प्यार करता था। और क्योंकि राजा उसको बहुत प्यार करता था इसी लिये दरबार के लोग उसको नापसन्द करते थे।

इन दरबारियों के दिल और दिमाग दोनों ही बुराइयों से भरे रहते थे। जब भी राजा उस पर कोई मेहरबानी करता तो वे सब जलन से भर जाते।

इसलिये सारे दिन उनके पास करने के लिये और कोई काम नहीं था सिवाय इसके कि वे महल के हर कोने और हर जगह में उस बेचारे लड़के बारे में ही कुछ न कुछ बुदबुदाते रहते — "इस लड़के

---

[10] Corvetto. (Tale No 18) Day 3, Tale No 7

[11] Juno went to Candia to know falsehood.

[12] Where detraction always wears the mask of amusement.

[13] Wide River – a place

ने तो राजा के ऊपर क्या जादू कर दिया है कि राजा इसको इतना प्यार करता है। इसकी किस्मत इतनी अच्छी कैसे है राजा इसको रोज ही कोई न कोई इनाम देता रहता है।

हम लोग तो एक रस्सी बनाने वाले की तरह से पीछे ही जाते रहते हैं। हमारी हालत बुरी से और ज़्यादा बुरी होती जाती है। जबकि हम लोग कुत्ते की तरह से उनकी सेवा करते हैं। खेतों के मजदूरों की तरह से कड़ी मेहनत करते हैं। राजा को थोड़ा सा भी खुश करने के लिये हिरन की तरह से दौड़ते रहते हैं।

सच है कि इस दुनियाँ में पैदा होना है तो अच्छी किस्मत ले कर ही पैदा होना चाहिये। जिसकी किस्मत अच्छी नहीं है उसको तो समुद्र में डूब कर मर जाना चाहिये। पर क्या किया जाये। हम लोग तो केवल देख सकते हैं और उससे जल सकते हैं।"

ऐसे और ऐसे ही दूसरे शब्द अक्सर ही उनके मुँह से जहरीले बाणों की तरह निकलते रहते और वे कौरवैतो को पूरी तरीके से नष्ट करने के बारे में ही सोचते रहते।

यह उसके लिये बड़े अफसोस की बात है जिसको उस दरबार में सजा मिली हो। जहाँ चापलूसी पीपे[14] के भाव बिकती हो। बुरे काम और बुराइयाँ बुशैल[15] के भाव बिकती हों। धोखाधड़ी और अविश्वास टनों में बिकता हो।

---

[14] Translated for the word "Kilderkin". This name can be given to Indian "Kanastar" with a capacity of 18 Imperial Gallons

[15] Bushell is a unit of measurement for dry things – 60 pounds of wheat or 56 pounds of corn

पर इन दरबारियों की इन कोशिशों को कौन गिन सकता है जो वे कौरवैतो को दुखी करने के लिये करते रहते थे। या फिर उसके खिलाफ कोई कोई झूठी कहानी गढ़ कर और उसके बारे में राजा के विचारों को खराब करने के लिये उसे राजा को सुनाते।

पर कौरवैतो के अन्दर तो जादू था। वह ये जाल पहले से ही जान जाता था और चालों को पहले से ही पहचान जाता। वह अपने दुश्मनों की हर चाल को पहले ही समझ लेता।

वह अपने कान और ऑख दोनों खुली रखता ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह कोई गलत कदम उठा ले। उसको अच्छी तरह मालूम था कि दरबारियों की किस्मत तो शीशे की तरह होती है।

जैसे जैसे लड़का ऊँचा उठता गया वैसे वैसे दूसरे दरबारी नीचे गिरते गये।

अन्त में इस बारे में कुछ न सोच पाने की वजह से कि लड़के को राजा की ऑखों में नीचे कैसे गिराया जाये क्योंकि उनके पुराने झूठ तो काम कर नहीं रहे थे। उन्होंने सोचा कि उसको साथ कोई ऐसी बहुत ही भारी चाल खेली जाये जिससे कि वह बिल्कुल ही नष्ट हो जाये। और वह रास्ता था चापलूसी का जिस पर उनको इस तरह चलना था।

स्काटलैंड[16] से दस मील दूर जहाँ राजा रहता था वहाँ एक ओगरे रहता था जो ओगरों के देश में एक बहुत ही बड़ा जंगली जानवर था जिसको राजा ने किसी समय में बहुत तंग किया था सो उसने एक पहाड़ की चोटी पर एक अकेले जंगल में जा कर अपने आपको बहुत मजबूत बना लिया था।

वहाँ कोई चिड़िया भी पर नहीं मार सकती थी। वह जंगल घना और पेड़ों से उलझा हुआ भी इतना ज़्यादा था कि सूरज की रोशनी तक अन्दर नहीं जा सकती थी।

इस ओगरे के पास एक बहुत ही सुन्दर घोड़ा था। उसको देखने से ऐसा लगता था कि जैसे किसी ने उसे पैन्सिल से बनाया हो। और दूसरी कई आश्चर्यजनक चीज़ों के साथ उसमें एक खासियत यह भी थी कि वह आदमी की तरह बात करता था।

सब दरबारियों को मालूम था कि वह ओगरे कितना खतरनाक था उसका जंगल भी कितना घना था उसका पहाड़ भी कितना ऊँचा था और उस घोड़े को उससे लेना कितना मुश्किल था।

यह सब सोच कर वे राजा के पास गये। उन्होंने राजा को उस घोड़े के बारे में छोटी से छोटी बात बतायी और कहा कि ऐसा घोड़ा तो राजा के पास होना चाहिये।

[16] Scotland is part of Great Britain situated in its Northern part. Great Britain includes England, Wales, Scotland and Northern Ireland.

साथ ही यह भी कहा कि वह उसे पाने के लिये अपनी पूरी कोशिश करे। और कौरवैतो ही वह ठीक नौजवान था जो इस काम को कर सकता था क्योंकि वह तो आग में से भी बच निकल आने की चतुराई रखता था।

अब राजा को तो यह पता नहीं था कि इन फूलों के पीछे कोई सॉप छिपा बैठा था सो उसने तुरन्त ही कौरवैतो को बुलाया और उससे कहा — "अगर तुम मुझे चाहते हो तो किसी भी तरह तुम मेरे लिये मेरे दुश्मन से उसका घोड़ा ले कर आओ। अगर तुम मेरा यह काम कर दोगे तो तुम किसी नुकसान में नहीं रहोगे।"

कौरवैतो को यह अच्छी तरह पता था कि यह ढोल उसके दुश्मनों का ही बजाया हुआ है फिर भी राजा का हुक्म बजा लाने के लिये वह ओगरे की तरफ चल दिया।

ओगरे के घर पहुॅच कर वह दबे पॉव ओगरे की घुड़साल में घुसा उसने घोड़े के ऊपर जीन कसी और पैर जमा कर चढ़ गया और वापस घर चल दिया।

पर जैसे ही घोड़े ने देखा कि वह महल के बाहर है वह चिल्लाया — "हैलो। सावधान। कौरवैतो मुझ पर चढ़ कर जा रहा है।"

यह सुन कर ओगरे उठा और कोरवैतो को मारने के लिये अपने उन सब जानवरों को अपने साथ लिया जो उसके लिये काम करते थे। एक तरफ से बन्दर आया एक तरफ से भालू आया एक और

तरफ से चिंघाड़ता हुआ शेर आया। दूसरी तरफ से एक भेड़िया आया।

पर नौजवान लगाम और कोड़े की सहायता से उसे बिना रुके भगाता हुआ राजा के दरबार में ले आया जहाँ उसने उस घोड़े को राजा को भेंट कर दिया।

राजा ने उसे अपने बेटे से भी ज़्यादा समझ कर अपने गले से लगा लिया। उसने अपना बटुआ निकाला उसमें से क्राउन निकाल कर उसके दोनों हाथ भर दिये।

यह देख कर तो दरबारियों के दिल की जलन बहुत ऊँची पहुँच गयी। पहले तो वे छोटे पाइप की तरह से केवल जलन से फूले हुए था अब तो वे लोहार की धौंकनी की तरह फूल गये।

यह देख कर कि जो क्रो बार[17] वे उसकी अच्छी किस्मत को बर्बाद करने के लिये लाये थे उससे तो उसकी खुशहाली की सड़क और बहुत चिकनी हो गयी थी।

यह देख कर कि इस पहले हमले से दीवारें अभी भी नीचे नहीं गिरी हैं तो उन्होंने दूसरा तरीका इस्तेमाल करने का फैसला किया।

वे राजा के पास फिर गये — "आपको नया घोड़ा मुबारक हो सरकार। आप उसका आनन्द उठायें। वह आपके शाही घुड़साल का एक गहना होगा। पर यह बड़े दुख की बात है कि आपके पास

[17] Crow bar is an iron bar with a crook on one side. See its picture above.

ओगरे के घर के परदे नहीं हैं। जब तक आपके पास ओगरे के घर के परदे न हों तब तक क्या फायदा।

उसके घर के परदों का तो बस कहना ही क्या है। वे तो दूर दूर तक मशहूर हैं। इस खजाने को भी कौरवैतो के सिवा और कोई नहीं ला सकता। इस काम के लिये भी वही लड़का बिल्कुल ठीक है।"

राजा ने जो लोगों की हर धुन पर नाचता था और कड़वे फल पर चीनी मिले हुआ छिलका खाता था कौरवैतो को बुलाया और उससे कहा कि वह जा कर उसके लिये ओगरे के घर के परदे ले कर आये।

यह सुन कर कौरवैतो वहाँ से चला गया। चार सैकंड में वह पहाड़ के ऊपर था जहाँ ओगरे रहता था। वह सबकी आँखों से बचता बचाता ओगरे के कमरे में पहुँच गया और उसके बिस्तर के नीचे एक चूहे की तरह से शान्ति से छिप कर बैठ गया।

उसने रात का इन्तजार किया जब तक तारे नहीं निकल आये जैसे आसमान ने कोई कार्निवाल वाला मुखौटा पहन लिया हो।

जैसे ही ओगरे और उसकी पत्नी सोने गये तो कौरवैतो ने दीवार से सारे कपड़े निकाले और वह बिस्तर की चादर भी निकालना चाह रहा था। उसने उसको बड़े हल्के हाथों से खींचा पर तभी ओगरे की आँख खुल गयी।

ओगरे ने समझा कि उसकी पत्नी उसके नीचे से चादर खींच रही थी सो वह अपने पत्नी से बोला कि वह उसके नीचे से चादर क्यों खींच रही थी। उसको बहुत ठंड लग रही थी। इस पर ओग्रैस ने पूछा कि वह उसके ऊपर की चादर क्यों खींच रहा था।

ओगरे ने पूछा — "हमारा पलंगपोश कहॉ है।" कह कर उसने बिस्तर के नीचे की तरफ हाथ किया तो उसके हाथ में कौरवैतो का चेहरा आ गया।

उधर कौरवैतो चिल्ला पड़ा "भूत भूत। रोशनी रोशनी। भागो भागो।" और चिल्लाता रहा जब तक कि सारे घर में भाग दौड़ नहीं मच गयी।

इस बीच कौरवैतो ने कपड़े खिड़की से नीचे फेंक दिये। कपड़े फेंक कर वह खुद भी नीचे उतर गया। उसने कपड़ों का एक बड़ा सा गट्ठर बॉधा और शहर जाने वाली सड़क पर चल दिया।

महल पहुॅच कर वह राजा से मिला और साथ में दरबारियों के गुस्से से भी। वे तो बस जलन से फटे जा रहे थे।

फिर भी उन्होंने कौरवैतो के लिये एक तरकीब और सोची और उसको कामयाब करने के लिये वे फिर से राजा के पास गये जो ओगरे के परदे आदि देख कर खुशी से फूला नहीं समा रहा था। ये परदे केवल सिल्क के ऊपर सोने के ही बने नहीं थे बल्कि इनके ऊपर हजारों मशीनों और विचारों ने भी काम किया था।

अगर मुझे ठीक से याद है तो उसमें एक मुर्गा था जो सुबह होने पर बॉग देते हुए दिखाया गया था। और उसके मुँह से टस्कन भाषा में यह निकलता दिखाया गया था "अगर मैं तुम्हें देख लूँ"।

एक दूसरे हिस्से में टस्कन भाषा में लिखा हुआ था "शाम होने पर"। और भी कई बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ें बनी थीं उन पर जिन्हें ज़्यादा याद रखने की जरूरत है बजाय उनको कहने के लिये और समय की।

जब दरबारी लोग राजा के पास आये तो वह खुशी में डूबा हुआ था। उन्होंने राजा से कहा — "जब कौरवैतो ने आपकी खुशी के लिये इतना किया है तो यह काम तो उसके लिये कोई बहुत बड़ा काम नहीं है कि बस एक छोटी सी खुशी वह आपको और दे दे और वह है ओगरे का महल। वैसा महल तो एक राजा के पास होना ही चाहिये।

उसके अन्दर बहुत सारे कमरे हैं उसके अन्दर और बाहर बहुत सारे छोटे छोटे महल हैं जिनमें एक सेना ठहर जाये। और आप विश्वास नहीं करेंगे कि उसमें कितने सारे ऑगन पोर्टिको छज्जे और घुमावदार चिमनियॉ हैं जो बहुत बढ़िया बने हुए हैं। उनको देख कर प्रकृति भी शर्मा जाती है और बेहोश भी खुश हो जाते हैं।

राजा का दिमाग बहुत तेज़ था उसने यह सब बहुत अच्छी तरह समझ लिया। उसने कौरवैतो को फिर बुलाया और उससे कहा कि

उसकी एक और इच्छा हो आयी है और वह है ओगरे का महल लेने की।

उसने उससे विनती की जो कुछ सेवायें उसने अब तक उसके लिये की हैं उनमें एक इसको भी जोड़ दिया जाये तो वह उसका बहुत कृतज्ञ रहेगा। कौरवैतो वहाँ से तुरन्त ही ओगरे के महल के लिये चला गया।

वह जब ओगरे के घर पहुँचा तो ओगरे तो अपने रिश्तेदारों को बुलाने के लिये बाहर गया हुआ था। ओगरे की पत्नी वहाँ थी वह दावत की तैयारी कर रही थी।

कौरवैतो घर में घुसा और ओगरे की पत्नी तरफ दया से देखा और बोला — "गुड डे ओ भली स्त्री। तुम तो बहुत बहादुर स्त्री हो। तुम इस तरह से अपनी ज़िन्दगी क्यों बर्बाद कर रही हो। कल तो तुम बिस्तर में बीमार पड़ी थीं और अब तुम इस तरह काम कर रही हो। अपने शरीर पर कुछ तो दया करनी सीखो।"

ओग्रैस बोली — "तब तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो। मेरे पास तो कोई इस समय सहायता करवाने वाला भी नहीं है।"

कौरवैतो बोला — "मैं हूँ न तुम्हारी सहायता के लिये – छोटे से छोटी और बड़ी से बड़ी।"

ओगरैस बोली — "जैसी कि तुम मेरे ऊपर दया दिखा रहे हो तो मेरे लिये तुम ये चार लट्ठे काट दो।

कौरवैतो बोला — “बड़ी खुशी से। पर अगर चार लट्ठे कम पड़ें तो मैं पाँच लट्ठे काट दूँ।”

कह कर उसने एक नयी कुल्हाड़ी ली और बजाय लकड़ी काटने के उसने वह कुल्हाड़ी ओगरैस की गर्दन पर मार दी। ओग्रैस का सिर नाशपाती की तरह जमीन पर लुढ़क गया।

फिर वह तुरन्त ही महल के सामने की तरफ भागा गया और वहाँ जा कर एक गड्ढा खोदा जिसे उसने घास फूस से ढक दिया।

यह सब करने के बाद वह फाटक के पीछे की तरफ छिप गया। कुछ ही देर में ओगरे अपने रिश्तेदारों के साथ वहाँ आ पहुँचा तो कौरवैतो बहुत ज़ोर से चिल्लाया — “रुक जाओ रुक जाओ। मैंने उसे पकड़ लिया है।” और “वाइड रिवर का राजा अमर रहे।”

अब जब ओगरे ने यह सुना तो वह एक पागल की तरह से कौरवैतो को मसल देने के लिये उसकी तरफ दौड़ा। पर जब वह महल के फाटक की तरफ दौड़ा तो उसे गड्ढा तो दिखायी नहीं दिया वे सब उस गड्ढे में गिर पड़े। कौरवैतो ने उन सबको पत्थर मार मार कर मार दिया।

फिर उसने महल की चाभियाँ लीं और राजा को जा कर दे दीं। सब दरबारियों की जलन और उसकी बुरी किस्मत देख कर भी उसने लड़के की बहादुरी और चतुराई देख कर उसको अपनी बेटी दे दी।

दरबारियों की जलन ने तो कौरवैतो के ज़िन्दगी के पेड़ की छाल को बिल्कुल नर्म और चिकना कर दिया और उसके दुश्मन अब चुप हो कर बैठ गये। वे बिना मोमबत्ती लिये ही सोने चले गये।

पुराने बुरे कामों की सजा चाहे देर से मिले पर मिलती जरूर है

19 3–8 बेवकूफ[18]

एक अज्ञानी आदमी जो होशियार लोगों के साथ बैठता है अक्सर दूसरे लोगों से ज़्यादा प्रशंसा पाता है बजाय उस होशियार आदमी के जो अज्ञानियों के साथ बैठता है। इसके अलावा अज्ञानी आदमी को होशियार आदमी के साथ बैठने से जितना फायदा होता है उससे ज़्यादा धन और इज़्ज़त का नुकसान दूसरे किस्म के आदमी को होता है।

जैसा कि इसका सबूत पुडिंग के खाने में है आप सबको इस कहानी सुनने पर पता चलेगा जो मैं आप सबको अब सुनाने जा रही हूँ।

एक बार एक ऐसा आदमी था जिसके पास इतना पैसा था जितना कि समुद्र। पर जैसे कि दुनियाँ में कहीं पूरी खुशी नहीं है ऐसा ही कुछ उसके साथ भी था। उसके एक बेटा था जो बहुत ही आलसी था और किसी काम का नहीं था। वह एक बीन और खीरे में भी भेद नहीं बता सकता था।

वह आदमी उसकी बेवकूफियों को और न सह सका तो उसने उसको एक बड़ी मुट्ठी भर कर काउन दिये और उसे व्यापार करने के लिये लैवन्त[19] भेज दिया क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि जब वह अलग अलग तरह के

[18] The Booby. {Tale No 19) Day 3, Tale No 8

[19] Levant is a geographical area in the Eastern Mediterranean area of Western Asia containing Syria, Lebanon, Cyprus, Turkey Israel Jordan and Palestine OR broadly Greece to Egypt.

देश देखेगा अलग अलग तरह के लोगों से मिलेगा तो उसकी फैसला लेने की ताकत बढ़ेगी और उसको ज़्यादा होशियार बनायेगी।

सो मोसियोन[20] घोड़े पर सवार हुआ और वेनिस की तरफ चल दिया जो दुनियाँ का अपने आप में ही एक आश्चर्य था ताकि वह वहाँ से कैरो[21] जाने के लिये कोई जहाज़ पकड़ सके।

जब वह एक दिन की यात्रा कर चुका तो उसे एक ऐसा आदमी दिखायी दिया जो एक बड़े से खम्भे के सहारे खड़ा हुआ था। लड़के ने उस आदमी से पूछा — "तुम्हारा क्या नाम है तुम कहाँ से आ रहे हो और तुम क्या करते हो।"

आदमी बोला — "मेरा नाम बिजली[22] है। मैं ऐरोलैंड[23] से आया हूँ। मैं हवा की तरह से भागता हूँ।"

मोसियोन बोला — "मुझे इसका सबूत दिखाओ।"

बिजली बोला — "एक पल रुको। तब तुम देखोगे कि यह धूल है या आटा।"

जब वे कुछ देर खड़े रहे तो एक हिरनी आयी और मैदान में आ कर खड़ी हो गयी। बिजली ने उसको उसके रास्ते जाने दिया और उसको नियम सिखाने के लिये वह उसके पीछे इतनी तेज़ी से और इतने हल्के पैरों से भागा कि वह तो किसी ऐसी जगह जा कर

---

[20] Moscion – an Italian male name, name of the son of the rich man.

[21] Cairo is the capital of Egypt

[22] Lightening

[23] Arrowland

गिरा जहाँ आटा फैला पड़ा था और बिना अपने जूते का निशान बनाये हुए चार कदम में उसको ले कर वापस आ गया।

मोसियोन उसका यह काम देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया। उसने उस आदमी से पूछा कि क्या वह उसके साथ रह सकता था और इस बात के लिये उसे अच्छा पैसा देने का वायदा किया। बिजली ने हाँ कर दी और अब वे एक साथ चलने लगे।

अभी वे बहुत दूर नहीं चले थे कि उनको एक दूसरा नौजवान मिल गया। मोसियोन ने उस नौजवान से पूछा — "साथी तुम्हारा नाम क्या है। तुम किस देश से आये हो और तुम क्या करते हो?"

वह लड़का बोला — "मेरा नाम जल्दी सुनने वाला[24] है। मैं वेल क्यूरियस[25] से आया हूँ। और जब मैं अपना कान जमीन से लगाता हूँ तो वहाँ से बिना हिले दुनियाँ में क्या हो रहा है जान लेता हूँ। मैं लोगों का एकाधिकार, बिजनैस के समझौते, डाकुओं की योजनाऐं, जासूसों की रिपोर्ट, नौकरों की शिकायतें, बुढ़ियों की गपशप, नाविकों की कसमें सब कुछ सुन सकता हूँ।"

मोसियोन को यह सुन कर कुछ उत्सुकता हुई तो उसने उससे कहा कि "अगर ऐसा है तो यह बताओ कि मेरे घर पर मेरे लोग इस समय क्या बात कर रहे हैं।"

सो उस लड़के ने धरती पर अपना कान लगाया और बोला —

---

[24] Quick Ear

[25] Vale Curious

"एक बूढ़ा अपनी पत्नी से कह रहा है "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि मोसियोन को मैंने अपनी आँखों से दूर कर दिया। वह तो बिल्कुल पुराने जमाने की कौकरी[26] जैसा था जो मेरे दिल में हमेशा ही चुभता रहता था। दुनियाँ घूमने पर वह कम से कम एक इन्सान तो बन कर आयेगा। ऐसा बेवकूफ गधा, इतना सीधा, दिन भर का खोया हुआ जैसा तो नहीं रहेगा न।"

मोसियोन चिल्ला कर बोला — "बस बस। तुम सच बोल रहे हो मुझे तुम पर विश्वास है। तो आओ मेरे साथ आओ क्योंकि अब तुम्हारे अच्छे दिन आ गये हैं।"

नौजवान बोला — "अच्छी बात है।" सो वे तीनों एक साथ चलने लगे।

दस मील जाने के बाद उनको एक और नौजवान मिला तो मौसियोन ने उससे भी पूछा — "तुम्हारा क्या नाम है तुम कहाँ पैदा हुए थे और इस दुनियाँ में तुम क्या कर सकते हो।"

नौजवान बोला — "मेरा नाम "सीधा बाण चलाने वाला" है। मैं एमवैल किले[27] से आया हूँ। मैं धनुष से इतना ठीक बाण चला सकता हूँ कि एक सेब के बीच में भी मार सकता हूँ।"

मोसियोन बोला — "अच्छा तो मार कर दिखाओ।"

---

[26] Crockery

[27] Castle Aimwell

लड़के ने अपना धनुष उठाया निशान लगाया एक पत्थर पर से एक मटर के दाने को हवा में उड़ा दिया। इस पर मोसियोन ने उसको भी अपने साथ ले लिया और वह भी उनके साथ साथ चल दिया।

वे फिर एक दिन की यात्रा कर के चुके तो उन सबको कुछ नौजवान मिले जो बहुत गर्मी में नावों के खड़ा होने के लिये एक चबूतरा बना रहे थे। उन्होंने कहा कि वाइन में थोड़ा पानी मिला दो क्योंकि हमारा कलेजा जल रहा है।

मोसियोन को उनके ऊपर दया आ गयी उसने उनसे पूछा कि मेरे मालिको तुम लोग इतनी गर्मी को कैसे सहन कर रहे हो। यहाँ तो बिल्कुल भट्टी हो रहा है। इसमें तो एक भैंस भी भुन जायेगी।"

उनमें से एक बोला — "हम तो यहाँ गुलाब की तरह से ठंडे हैं क्योंकि हमारे पास एक आदमी है जो हमारे पीछे से हमारे ऊपर ठंडी फूँक मारता रहता है तो हमें ऐसा लगता है जैसे हमारे ऊपर कोई पश्चिमी हवा फेंक रहा हो।"

मोसियोन बोला — "मेहरबानी कर के मुझे उसे दिखा दो।"

सो उन काम करने वालों ने उस लड़के को आवाज लगायी। मोसियोन ने उससे कहा — "तुम्हें तुम्हारे पिता की कसम है मुझे बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है तुम किस देश से आते हो और तुम क्या काम करते हो।"

लड़का बोला — "मेरा नाम है तेज़ फूॅक मारने वाला। मैं हवाओं के देश से आया हूॅ और मैं अपने मुॅह से सब तरह की हवाऐं चला सकता हूॅ। अगर तुम ज़ैफिर[28] हवा चाहते हो तो मैं एक फूॅक मारूॅगा और तुम यहॉ से गायब होते नजर आओगे। अगर तुम दूसरे तरीके की हवा चाहते हो तो उससे एक मकान तक गिर सकता है।"

मोसियोन बोला — "जब देखें तभी विश्वास हो सकता है।"

तब उसने पहले तो बहुत ही धीरे धीरे बहती हुई हवा चलायी जैसे शाम को चलती है। फिर अचानक वह पेड़ों की तरफ घूमा और मुॅह से इतने ज़ोर की फूॅक मारी कि ओक के पेड़ों की कतारें की कतारें उखड़ गयीं।

मोसियोन ने उसे भी अपने साथ ले लिया और फिर यात्रा पर चल दिये। कुछ दूर जाने के बाद उन्हें एक लड़का और मिला। मोसियोन ने उससे पूछा — "अगर मैं बहादुरी से तुमसे यह पूछॅू कि तुम्हारा नाम क्या है तुम कहॉ से आ रहे हो और तुम करते क्या हो। तो तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा। मैं ठीक पूछ रहा हूॅ न।"

लड़का बोला — "मेरा नाम मजबूत पीठ है। मैं वैलेन्टीनो[29] से आता हूॅ और मैं इतना ताकतवर हूॅ कि मैं अपनी पीठ पर एक पहाड़

[28] Very fast blowing cold wind
[29] Valentino

तक ले जा सकता हूँ। और वह मेरे लिये केवल एक पंख जैसा होगा।"

मोसियोन बोला — "अगर ऐसा है तो तुम तो राजा बनने के लायक हो। तुमको तो पहली मई को झंडा उठाने वाला चुना जाना चाहिये। पर जो तुमने कहा है मुझे उसका सबूत चाहिये।"

यह सुन कर मजबूत पीठ वाले ने अपनी पीठ पर बहुत सारे पत्थर पेड़ों के तने और दूसरी भारी भारी चीज़ें उठानी शुरू कीं जिन्हें हजार बड़ी वैगन भी नहीं ले जा सकती थीं। जब मोसियोन ने यह देखा तो उसने उसको अपने साथ आने के लिये कहा।

अब वे सब एक साथ आगे चलने लगे जब तक कि वे सुन्दर फूल शहर[30] में नहीं पहुँच गये जहाँ के राजा की बेटी हवा की तरह से तेज़ भागती थी और मक्का के भुट्टों के ऊपर से भी इस तरह दौड़ जाती थी कि एक भी भुट्टे से उसका पैर नहीं छूता था।

राजा ने उसके बारे में एक मुनादी पिटवायी हुई थी कि जो कोई उसकी बेटी को दौड़ में हरा देगा वह उसी से अपनी बेटी शादी करेगा। और जो कोई भी उससे पीछे रह गया तो उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

जब मोसियोन इस देश में आया और उसने यह मुनादी सुनी तो वह सीधा राजा के पास गया और उससे कहा कि वह उसकी बेटी

[30] Fair Flower city

के साथ इस शर्त पर दौड़ना चाहता है कि अगर वह जीत गया तो उससे शादी कर लेगा नहीं तो वहाँ अपना सिर कटा देगा।

लेकिन सुबह सुबह ही उसने राजा को यह सन्देशा भेजा कि वह बीमार है और आज खुद उसकी बेटी के साथ नहीं दौड़ सकेगा लेकिन वह अपने एक साथी को उसके साथ दौड़ने के लिये भेज रहा है।

चानेटैला[31] ने जब यह सुना तो बोली — "मुझे क्या। कोई भी आये। मैं किसी की चिन्ता नहीं करती। मेरे लिये तो सब एक से हैं।"

सो उस दिन शहर के बड़े चौराहे पर देखने वालों की एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई। ऐसा लग रहा था जैसे बहुत सारी चींटियाँ इकट्ठी हो गयी हों। खिड़कियाँ और छतें भी इस तरह से पूरे भरे हुए थे जैसे अंडे।"

बिजली भागता हुआ आया और चौराहे के ऊपर आ कर खड़ा हो गया। वह दौड़ के शुरू करने के सिगनल का इन्तजार करने लगा। लो एक छोटा सा गाउन पहने चानेटैला आयी जो उसकी आधी टाँगों तक ऊपर उठा हुआ था। उसके जूते बहुत सुन्दर थे।

दोनों एक साथ खड़े हो गये और फिर जैसे ही दौड़ शुरू करने के लिये बिगुल बजा दोनों तीर की तरह से भाग लिये। वे इतनी

[31] Cianetella – name of the Princess of the Fair Flower City

तेज़ भाग रहे थे कि ऐसा लग रहा था जैसे उनकी एड़ियाँ उनके कन्धों से छू रही थीं।

सच कहो तो वे ऐसे लग रहे थे जैसे वे बड़े खरगोश भाग रहे हों जिनके पीछे ग्रे हाउन्ड कुत्ते छोड़ दिये गये हों या फिर घोड़ों को घुड़साल में से छोड़ दिया गया हो या फिर उन कुत्तों की तरह जिनकी पूँछ में केटली बाँध दी गयी हो।

पर बिजली ने राजकुमारी को एक हाथ की चौड़ाई जितना पीछे छोड़ कर जीत हासिल कर ली थी। ओह तब तुमने लागों का हल्ला हो सीटियाँ और ताली की आवाजें सुनी होतीं। "अजनबी अमर रहे" की आवाजें सुनी होतीं।

चानेटैला का चेहरा तो यह हार देख कर किसी स्कूल के बच्चे की तरह लाल पड़ गया जैसे वह पिट कर आया हो और शर्म से लाल हो गया हो। उसने इस हार का बदला लेने की सोची।

यह दौड़ दो बार होनी थी सो उसके पास अभी एक मौका और था जीतने का। घर जा कर उसने जादू की अँगूठी ली जो कोई उसे अपनी उंगली में पहनता तो दौड़ना तो दूर उसके पैर काँपने लगते और वह अपनी जगह से हिल भी नहीं सकता था।

उसने वह अँगूठी बिजली को भेंट भेजी और कहा कि वह दौड़ के समय उसके प्यार के लिये उसे जरूर पहने।

तेज़ सुनने वाले ने पिता और बेटी की यह बात सुन ली पर उसने कुछ कहा नहीं बस मौके का इन्तजार करता रहा। जब

चिड़ियों ने चहचहाना शुरू किया सूरज ने अँधेरे को ठोकर मार कर भगाया जो गधों पर बैठा हुआ था वे दोनों दौड़ के मैदान में आ कर इकट्ठे हुए जहाँ इशारा पाते ही उनको दौड़ जाना था।

पर अगर चानेटैला दूसरी अटालान्टा[32] थी तो बिजली तो एक बूढ़े गधे या घोड़े की तरह हो गया था। वह तो अपना पाँव हिला भी नहीं पा रहा था।

पर सीधे तीर मारने वाले ने जब अपने दोस्त को इस मुश्किल में देखा और तेज़ सुनने वाले से इसका पूरा हाल सुना तो उसने तुरन्त ही अपना धनुष उठाया और एक बाण बिजली की उँगली पर मारा जिससे उसकी उँगली में पड़ी हुई अँगूठी में जड़ा हुआ पत्थर निकल कर नीचे जा पड़ा।

उसी पत्थर में जादू था जिसने उसकी टाँगें बाँध रखी थीं। जैसे ही पत्थर बिजली की उँगली में से निकला तो उसका जादू भी टूट गया और उसकी टाँगें आजाद हो गयीं। चार कदम की कूद में वह चानेटैला से आगे निकल गया और जीत गया।

राजा ने जब एक खरदिमाग को दौड़ जीतते देखा एक सीधे सादे आदमी को खजूर ले जाते देखा एक बेवकूफ को जीतते देखा तो वह यह बात गम्भीर रूप से सोचने लगा कि क्या उसे उसको अपनी बेटी देनी चाहिये।

---

[32] Atalanta was a skilled human virgin huntress and unwilling to marry in Greek mythology. A devoted follower of Artemis, goddess **of** the hunt.

यह सोचते हुए उसने तुरन्त ही अपने अक्लमन्द दरबारियों को बुलाया और इस बारे में उनसे सलाह माँगी। तो उन्होंने कहा कि चानेटैला कोई ऐसी वैसी लड़की नहीं थी जिसको किसी भी कुत्ते के मुँह में डाल दिया जाये।

पर वायदा? उसका क्या करें? इसके लिये उन्होंने सलाह दी कि बिना वायदा तोड़े भी यह काम किया जा सकता है।

कैसे? उन्होंने बताया कि मोसियोन को क्राउन का लालच दे कर उससे राजकुमारी की तरफ से उसका ध्यान हटाया जा सकता है जो उस गरीब भिखारी के लिये दुनियाँ की सारी स्त्रियों को पाने से भी ज़्यादा बड़ा होगा।

इस सलाह से राजा का दिल खुश हो गया। उसने मोसियोन से पूछा कि उसकी बेटी के बदले में जिसका उससे वायदा किया गया है वह उससे कितना पैसा लेना चाहेगा।

इधर मोसियोन ने भी अपने दोस्तों के साथ विचार किया और राजा को जवाब दिया — "मैं उतना सोना और चाँदी लेना चाहूँगा जितना कि मेरे इतने साथियों में से एक की पीठ पर लादा जा सके।"

राजा इस बात पर राजी हो गया तो मोसियोन ने अपने मजबूत पीठ साथी को बुलाया और उसको यह सब बताया। वह बहुत खुश था। राजा ने डकैट के थैले पर थैले क्राउन के बोरे के बोरे ताँबे के

सिक्कों से भरे हुए बैरल सोने चाँदी का और कीमती सामान से भरे हुए बक्से भरवा कर उसकी पीठ पर रखवाने शुरू किये।

पर जितना ज़्यादा सामान वे उसकी पीठ पर रखते वह उतना ही ज़्यादा मजबूती से खड़ा होता जाता।

इस तरह से शाही खजाना बैंक कुलीन लोगों के घर खाली होते जा रहे थे। पर वह तो हिलने का नाम भी नहीं ले रहा था। इसके बाद राजा ने पास पड़ोसियों से पैसा उधार लेना शुरू किया। चाँदी के मोमबत्तीदान जग प्लेट टोकरियाँ आदि। आखिर वे थक कर सन्तुष्ट हो कर चले गये।

जब राजा के सलाहकारों ने देखा कि ये छह कुत्ते क्या क्या ले जा रहे हैं तो वे राजा से बोले — "ये लोग तो हमारे राज्य का कितना सारा सामान ले कर जा रहे हैं। हमको इनका कुछ बोझा कम करना चाहिये इसलिये हमें इनके पीछे कुछ आदमी भेजने चाहिये जो यह काम कर सकें। जो उस ऐटलस की पीठ पर लदा हुआ है वह तो बहुत बड़ा खजाना है।"

राजा ने उनकी यह सलाह सुनी और तुरन्त ही कुछ हथियारबन्द पैदल घुड़सवार सिपाही उसने उनके पीछे भेज दिये। पर तेज़ सुनने वाले ने राजा के इस काम के बारे में सुन लिया और अपने साथियों को बता दिया।

जब कि उन लोगों के घोड़ों की टापों से धूल उड़ रही थी जो उनका खजाना लूटने के लिये आ रहे थे तो तेज़ फूँक मारने वाले ने

देखा कि यह तो अपने साथ बहुत बुरा होने जा रहा है तो उसने इतने ज़ोर से फूँक मारी कि उनके सारे दुश्मन वहीं के वहीं गिर पड़े। उसने उनको वहीं नहीं छोड़ा बल्कि अपने तेज़ फूँक से एक मील से भी दूर उठा कर फेंक दिया।

अब उनके रास्ते में कोई नहीं था सो सब सामान ले कर मोसियोन अपने घर आया। घर आ कर वह सामान उसने अपने दोस्तों के साथ बाँटा।

जैसा कि कहावत मशहूर है कि किसी अच्छे काम के बाद अच्छी शराब की जरूरत होती है।[33] उसके बाद उसने अपने सब दोस्तों को उनके घर सुखी और सन्तुष्ट वापस भेज दिया। वह खुद अपने माता पिता के पास रहा।

अब तो वह बहुत ज़्यादा अमीर था – एक सीधा सादा सोने से लदा हुआ और इस कहावत को सच करता हुआ —

जिनके दाँत नहीं होते भगवान उनको हलवा खिलाता है।[34]

[33] Translated for the words "A good deed deserves a good meed."

[34] Translated for the saying "Heaven sends biscuits to him who has no teeth."

20 4–1 मुर्गे के सिर में पत्थर[35]

चोर डाकुओं की पत्नियॉ हमेशा खुश नहीं रहतीं। जो दूसरों को धोखा देता है वह अपने लिये बर्बादी के बीज बोता है। ऐसा कोई धोखा नहीं है जो कभी खुले नहीं। ऐसा कोई कपट नहीं है जो कभी रोशनी में न आये। दीवारों के भी कान होते हैं। जासूस भी रोग होते हैं। जमीन भी खुल कर चोरियों को खोल देती है। अगर आप सब इसे ध्यान से सुनें तो मैं आप सबको यह अभी बताती हूॅ।

डार्क ग्रोटो[36] नाम के शहर में एक आदमी रहता था जिसका नाम था मिनैको अनीलो।[37] वह बेचारा किस्मत का इतना ज़्यादा मारा हुआ था कि उसके पास उसकी चल और अचल सम्पत्ति में केवल एक छोटी टॉग वाला मुर्गा ही था बस। इसको उसने डबल रोटी के टुकड़ों पर पाला था।

जैसा कि आप सब जानते हैं कि भेड़िया जब भूखा होता है तो वह जंगल से भागता है सो एक दिन मिनैको ने भूख से बेहाल हो कर यह सोचा कि वह उस मुर्गे को बेच दे। सो उसने उसको उसने अपने सिर पर रखा और उसे बेचने चल दिया।

रास्ते में उसको दो चोर जादूगर मिले। उसने उनके साथ सौदा किया और उस मुर्गे को आधे क्राउन में बेच दिया। उन्होंने मिनेको से मुर्गे को उनके घर ले जाने के लिये कहा और कहा कि वे उसको

---

[35] Stone in the Cock's Head. (Tale No 20) Day 4, Tale No 1

[36] Dark Grotto – name of a city

[37] Minecco Aniello

घर पहुँच कर पैसे दे देंगे। वे जादूगर अपने रास्ते चल दिये और मिनेको उनके पीछे पीछे चल दिया।

रास्ते में वे दोनों बातें करते जा रहे थे जिसे मिनेको भी सुन रहा था। उनमें से एक जादूगर बोला — "किसको पता था जैनेरोन[38] कि हमारी किस्मत में इतनी अच्छी बात लिखी होगी। यह मुर्गा तो उस पत्थर से हमारी किस्मत बना देगा जो इसके सिर में है। हम उस पत्थर को एक अँगूठी में जड़ देंगे और बस उसके बाद तो हम उससे जो कुछ भी माँगेंगे हमें वही मिल जायेगा।"

जैनेरोन बोला — "चुप चुप धीरे बोलो जैकोवूचाओ।[39] मैं तो खुद ही अपने आपको बहुत अमीर देख रहा हूँ और मुझे इस बात पर विश्वास ही नहीं हो रहा है कि मैं इतनी जल्दी इतना अमीर हो जाऊँगा।

बस मेरी तो यह इच्छा हो रही है कि मैं इसकी गर्दन अभी मरोड़ दूँ और इस भिखारी की ज़िन्दगी को ठोकर मार दूँ। क्योंकि इस दुनियाँ में बिना पैसे के गुणों की कोई कीमत नहीं है। कोई भी आदमी उसके कोट से जाँचा जाता है।"

जब मिनेको अनीलो ने जो दुनियाँ भर में घूम चुका था और तरह तरह का खाना खा चुका था यह सब सुना तो वह तो अपने मुर्गे को ले कर पीछे से ही घर भाग लिया। घर जा कर उसने मुर्गे

[38] Jennerone – one magician
[39] Jacuvoccio – the other magician

की गर्दन मरोड़ कर उसे मार दिया और उसके सिर में से पत्थर निकाल लिया।

तुरन्त ही उसने उस पत्थर को एक पीतल की अँगूठी में जड़वा लिया। फिर उसके गुण को जाँचने के लिये बोला — “मैं एक **18** साल का नौजवान बनना चाहता हूँ।”

जैसे ही उसने यह कहा कि खून उसकी रगों में बहुत तेज़ी से दौड़ने लगा उसकी नसें बहुत मजबूत हो गयीं उसके शरीर के जोड़ मजबूत हो गये उसकी आँखें आग की तरह से लाल हो गयीं उसके सफेद बाल सुनहरे हो गये।

उसका मुँह जो खाली हो कर नीचे को लटक गया था अब उसमें दाँत आ गये थे। उसकी दाढ़ी जो एक जंगल की तरह से घनी थी अब एक नर्सरी बागीचे की तरह से हो गयी थी। थोड़े में कहो तो वह अब **18** साल का एक नौजवान हो गया था।

इसके बाद वह बोला — “अब मुझे एक बहुत बढ़िया महल चाहिये और मैं एक राजा की बेटी से शादी करना चाहता हूँ।”

तो लो वहाँ तो एक बहुत ही शानदार महल खड़ा हो गया जिसमें इतने शानदार कमरे थे जिन्हें देख कर आप आश्चर्य में पड़ जायेंगे। इतने सुन्दर सुन्दर खम्भे थे कि उन पर से आँखें ही नहीं हटती थीं। बहुत सारी तस्वीरें लगी हुई थीं।

सब तरफ चाँदी चमक रही थी। नौकर चाकर चींटियों की तरह से घूम रहे थे। घोड़े और गाड़ियाँ तो गिनी ही नहीं जा सकती थीं।

उससे इतनी अमीरी पता चल रही थी कि राजा की तो उस पर ऑखें ही नहीं टिक रही थीं।

यह सब देख कर राजा ने खुशी से अपनी बेटी नतालीज़िया[40] की शादी उसके साथ कर दी।

इधर जब जादूगरों ने मिनैको की अमीरी देखी तो उन्होंने उसकी खुशकिस्मती को लूटने का एक प्लान बनाया। उन्होंने एक बहुत सुन्दर छोटी सी गुड़िया बनायी जो चाभी लगाने से खेलती और नाचती थी।

उन्होंने अपना एक सौदागर का रूप बनाया और पैन्टैला[41] के पास गये ताकि वे उस गुड़िया को उसे बेच सकें। पैन्टैला ने जब वह छोटी सी सुन्दर सी गुड़िया देखी तो उनसे पूछा कि वे उसे कितने पैसे में देंगे।

उन्होंने कहा कि वह पैसे से नहीं खरीदी जा सकती पर वह उसको ऐसे ही रख सकती थी अगर वह उनको वह ॲगूठी दिखा दे जो उसका पिता हमेशा पहने रहता था। ताकि वह वैसी ॲगूठी दिखा कर एक और ॲगूठी बनवा सकें। तब वे उसको वह गुड़िया बिना किसी पैसे के दे देंगे।

अन पैन्टैला ने यह कहावत कभी सुनी नहीं थी कि "कोई सस्ती चीज़ खरीदने से पहले अच्छी तरह सोच लो।" उसने तुरन्त ही

[40] Natalizia – name of the Princess
[41] Pentella – name of the daughter of Minecco

उनकी बात मान ली। उसने उनसे कहा कि वे अगले दिन सबेरे आयें। उसने वायदा किया कि वह अपने पिता को अँगूठी देने पर राजी कर ही लेगी। यह सुन कर जादूगर चले गये।

जब पैन्टैला के पिता शाम को घर वापस आये तो उसने उनको किसी तरह अँगूठी देने पर मना लिया। उसने बहाना बनाया कि वह बहुत दुखी थी और कुछ बदलाव चाहती थी।

जब अगला दिन हुआ और सूरज के सफाई करने वाले अँधेरे के सायों के आखिरी निशानों की सफाई कर के चले गये तो जादूगर पैन्टैला के घर लौटे। पैन्टैला ने उनको अँगूठी दे दी। जैसे ही अँगूठी उनके हाथ में आयी वैसे ही वे गायब हो गये। उनका कहीं नामो निशान नहीं था। यह देख कर पैन्टैला तो डर के मारे मर ही गयी।

पर जब जादूगर एक जंगल में आये जहाँ कुछ पेड़ों की शाखाऐं तलवार का नाच नाच रही थीं तो कुछ पेड़ों की शाखाऐं नीचे झुक कर आपस में खेल रही थीं वहाँ उन्होंने जादू की अँगूठी से यह इच्छा की कि वह उस जादू को नष्ट कर दे जिससे वह गरीब आदमी जवान हुआ था।

उसी पल मिनेलो अनीलो जो राजा से मिलने गया हुआ था और उसके सामने खड़ा था बूढ़ा हो गया। उसके सुनहरे बाल सफेद हो गये। उसकी आँखें गड्ढों में चली गयीं। उसके चेहरे पर झुर्रिया पड़ गयीं। उसका मुँह बिना दाँत का हो गया। उसकी दाढ़ी जंगली

झाड़ी जैसी हो गयी। उसकी पीठ झुक गयी। उसके पैर कॉपने लगे। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसके बढ़िया कपड़े फिर से फटे चिथड़ों में बदल गये थे।

राजा ने जब इस अभागे भिखारी को अपने बराबर मेज पर बैठे देखा तो उसको धक्का दे कर बाह निकालने का हुक्म दिया। इस पर अनीलो अपनी अच्छी किस्मत से नीचे गिर गया। वह रोता हुआ अपनी बेटी के पास गया और उससे वह ॲगूठी मॉगी ताकि वह अपना सारा मामला वापस ठीक कर सके।

पर जब उसने दो नकली सौदागरों को उसके साथ इस चाल के चलने के बारे में सुना तो उसके मन में आया कि वह खिड़की से कूद जाये। उसने बच्ची की अज्ञानता को भी हजारों बार कोसा जिसने केवल एक बेवकूफ गुड़िया के लिये उसको एक अभागा बिजूखा[42] बना दिया।

इन चिथड़ों ने तो उसको बहुत ही गुस्से वाला बना दिया था। अब उसको दुनियॉ में एक खोटे सिक्के की तरह से घूमना पड़ेगा जब तक कि वह उन सौदागरों से अपनी चीज़ वापस नहीं ले लेता।

ऐसा सोच कर उसने एक शाल अपने कन्धों पर डाला एक डंडा अपने हाथ में लिया और अपनी बेटी को डर से ठंडा और जमा हुआ छोड़ कर वह घर से बाहर चल दिया। चलता चलता वह गहरे गड्ढे

[42] Translated for the word “Scarecrow”. See its picture above.

के राज्य में पहुँच गया जहाँ बहुत सारे चूहे रहते थे। वहाँ उसको बड़े बिल्ले का एक जासूस समझ लिया गया सो उसको चूहों के राजा रोज़कोन[43] के पास ले जाया गया।

राजा ने उससे पूछा कि वह कौन था। कहाँ से आया था और इस देश में था ही क्यों।

इस पर मिनैको अनीलो ने रोज़कोन को चीज़ का एक टुकड़ा भेंट में खाने के लिये दिया और फिर एक एक कर के अपनी सारी बदकिस्मती रोयी और आखीर में कहा कि उसने यह सोच ही लिया है कि वह अपनी यात्रा तब तक चालू रखेगा जब तक उसको उन दोनों धोखेबाज सौदागरों का पता नहीं चल जाता।

उन्होंने उसका एक कीमती नगीना ले लिया है जिससे उसकी जवानी चली गयी उसकी आमदनी का साधन चला गया और उसकी इज़्ज़त भी चली गयी।

यह सुन कर रोज़कोन को उस पर दया आ गयी। उसका मन किया कि वह उसकी सहायता करे। उसने अपने देश के सबसे बड़े चूहों को बुलाया और उनसे मिनैको अनीलो की समस्या बतायी और उनसे उसका कुछ हल माँगा।

उसने उनसे कहा कि वह उन धोखेबाज सौदागरों की खबर पाने के लिये अपनी सारी मेहनत और अक्लमन्दी लगा दें। अब बहुत

[43] Rosecone – name of the King of mice

सारे चूहों के साथ साथ रुडोलो और सल्तारीलो[44] चूहे भी मौजूद थे। वे दुनियाँ के तौर तरीकों की बहुत अच्छी जानकारी रखते थे।

वे एक बहुत ही बढ़िया होटल में छह साल रह चुके थे। उन्होंने अनीलो से कहा — "खुश रहो साथी। तुम्हारा मामला तुम जितना सोचते हो उससे कहीं जल्दी सुलझ जायेगा।

हम तुम्हें बताते हैं कि एक दिन जब हम उस सराय के एक कमरे में थे जिसमें दुनियाँ के सबसे ज़्यादा मशहूर लोग ठहरने और आनन्द मनाने आते हैं वहाँ हुक कासिल[45] से दो लोग ठहरने के लिये आये।

जब उन्होंने खाना पीना खत्म कर लिया तो वे एक चाल के बारे में बात करने लगे जो उन्होंने डार्क ग्रौटो के किसी आदमी के साथ खेली थी। किस तरह से उन्होंने एक पत्थर के लिये उसको धोखा दिया था जिसके लिये उनमें से एक जिसका नाम जैनारोन था बोला कि वह उसको अपनी उँगली से कभी नहीं उतारेगा जिससे वह कहीं खो न जाये जैसे कि बूढ़े की बेटी ने किया था।

जब मिनैको अनीलो ने यह सुना तो उसने दोनों चूहों से कहा कि अगर वे उस पर विश्वास करते हों तो वे उसके साथ उस देश चलें जहाँ वे दोनों रोग रहते थे और उसकी उस अँगूठी को वापस लेने में उसकी सहायता करें।

---

[44] Rudolo and Saltariello – names of the two mice

[45] Hook Castle – name of a place

वहाँ वह उनको बहुत सारी चीज़ और नमकीन माँस खाने के लिये देगा जिसको हिज़ मैजेस्टी राजा के साथ खा कर वे लोग खुश हो जायेंगे।

इनाम के बारे में सौदा करने के बाद दोनों चूहे समुद्र और पहाड़ के पार जाने के लिये तैयार हो गये। उन्होंने राजा चूहे से विदा ली और अनीलो के साथ चल दिये।

काफी चलने के बाद वे हुक कासिल आये। वहाँ आ कर चूहों ने अनीलो से कहा कि वह नदी के किनारे उगे कुछ पेड़ों के नीचे ठहरे जो जमीन का पानी खींच कर नदी में डाल देते हैं। उसके बाद वे जादूगरों का घर देखने गये।

उन्होंने देखा कि जैनारोन तो अपनी उँगली से अँगूठी निकालता ही नहीं है तो उन्होंने उससे अँगूठी लेने का एक प्लान बनाया। उन्होंने रात का इन्तजार किया जब तक कि उसने धूप से जले हुए सूरज के मुँह पर बैंगनी रंग की कालिख नहीं पोत दी और जादूगर लोग सोने नहीं चले गये।

रुडोलो ने जैनारोन की उस उँगली को चबाना शुरू कर दिया जिसमें वह वह अँगूठी पहने हुए था। इससे जैनारोन ने अपनी उँगली में कुछ खुजली सी महसूस की सो उसने अँगूठी उतार कर अपने बिस्तर के सिरहाने की तरफ रखी मेज पर रख दी।

पर जैसे ही सल्तारीलो ने यह देखा तो वह अँगूठी को उठा कर अपने मुँह में डाली और वहाँ से दौड़ गया और चार कूद में ही

अनीलो को ढूँढ लिया। अँगूठी देख कर अनीलो के तो इतनी ख़ुशी हुई जितनी किसी मौत की सजा पाने वाले माफी की खबर सुनने पर भी न हो।

बस उसने दोनों जादूगरों को तुरन्त ही दो गधों में बदला अपना शाल उनमें से एक के ऊपर फेंका और उस पर एक कुलीन नाइट की तरह से बैठ कर उसे हॉक दिया। दूसरे गधे पर उसने चीज़ और सूअर का मॉस लादा और डीप होल की तरफ चल दिया।

वहॉ पहुँच कर उसने चूहों के राजा को ये भेंटें दीं। उसने उन सबको अपनी ख़ुशकिस्मती को उनकी सहायता से वापस पाने के बदले में बहुत बहुत धन्यवाद दिया। उसने भगवान से प्रार्थना की कोई भी चूहा पकड़ने वाला डिब्बा उनको न पकड़ सके और कोई संखिया उन पर जहर का काम न कर सके।

उसके बाद मिनैलो अनीलो ने डीप होल देश छोड़ा और डार्क ग्रौटो वापस आ गया। राजा और उसकी बेटी ने उसका बड़े आदर के साथ स्वागत किय। दोनों गधों को एक पहाड़ की छोटी से नीचे फेंक दिया गया।

अब मिनैलो अपनी पत्नी के साथ आराम से रहने लगा। उसने अपनी उँगली में से अँगूठी न निकालने की कसम खायी कि वह अब आगे से ऐसी बेवकूफी नहीं करेगा क्योंकि —

एक बिल्ली जो आग से जल चुकी हो वह अँगीठी के ठंडे पत्थर से भी डरती है।[46]

---

[46] यह कहावत हमारी हिन्दी कहावत से मिलती जुलती है "दूध का जला छाछ को भी फूॅक फूॅक कर पीता है।"

21 4–3 तीन सम्मोहित राजकुमार[47]

एक बार की बात है कि ग्रीन बैंक[48] देश के राजा के तीन बेटियाँ थीं। उसकी तीनों ही बेटियाँ एक रत्न के समान थीं। फ़ेयर मैडो[49] के राजा के तीन राजकुमार थे जो इन तीनों से बहुत प्यार करते थे और इनसे शादी करना चाहते थे पर एक परी ने उन तीनों के ऊपर जादू डाल कर उन्हें जानवर बना दिया था। सो ग्रीन बैंक के राजा ने उन्हें अपनी बेटियाँ शादी में देने से मना कर दिया था।

पहला राजकुमार ने जो एक बहुत सुन्दर बाज़[50] था अपनी सारी चिड़ियों की एक काउन्सिल बुलायी जिसमें सब तरह की चिड़ियें आयी थीं – कठफोड़वा, मक्खी पकड़ने वाली, जे, काली चिड़िया और और भी बहुत सारी चिड़ियें।

जब वे सब आ कर इकट्ठी हो गयीं तो उसने उन सबसे कहा कि वे ग्रीन बैंक के सारे फूलों को नष्ट कर दें ताकि वहाँ पर न तो कोई फूल और न कोई पत्ती ही ज़िन्दा बचे।

दूसरे राजकुमार ने जो एक हिरन था उसने बकरे खरगोश बड़े खरगोश हैजहौग आदि जानवरों को बुलाया और उनसे कहा कि वे

---

[47] The Three Enchanted Princes. (Tale No 21) Day 4, Tale No 3
This tale is similar to one of the most famous tale “Marya Morevna”. Read this story in my book “Roos Ki Lok kathayen-2”

[48] Green Bank – name of a place

[49] Fair Meadow – name of a place

[50] Translated for the word “Falcon”

राज्य के सारे मक्का के खेत नष्ट कर दें ताकि वहाँ न तो मक्का का एक भी दाना रहे और न ही घास का कोई पत्ता।

तीसरा राजकुमार एक डौलफिन मछली बना हुआ था। उसने समुद्र की सारी मछलियों को बुलाया और सैंकड़ों भयानक जीवों को बुलाया और उनसे सलाह कर के उनसे कहा कि समुद्र में इतना बड़ा तूफान मचा दें कि यहाँ से कोई भी नाव बच कर न जाने पाये।

राजा ने देखा कि मामला तो बुरे से और बुरा होता जा रहा है। वह ये जंगली जीवन के प्रेमी जो शरारतें कर रहे थे उनका कोई भी हल नहीं ढूँढ पा रहा था। पर अब उसने इस मुसीबत से छुटकारा पाने का पक्का इरादा कर लिया।

उसने सोचा कि वह अपनी तीनों बेटियाँ इन तीनों राजकुमारों को दे देगा। सो बिना किसी दावत और गाजे बाजे के ये राजकुमार अपनी अपनी दुलहिनों को ले कर चले गये।

जब ये लड़कियाँ शादी हो कर अपनी ससुराल गयी तो उनकी माँ ग्रैनज़ौला[51] ने उन तीनों को एक एक अँगूठी दी और कहा कि अगर किसी वजह से वे एक दूसरे से बिछड़ जायें और फिर कुछ समय बाद मिलें या अपने किसी रिश्तेदार से मिलें तो वे एक दूसरे को इन अँगूठियों की सहायता से एक दूसरे को पहचानने में कामयाब होंगी।

---

[51] Granzolla – mother of the three Princess

ये तीनों अँगूठियाँ बिल्कुल एक सी थीं। इसके बाद वे माँ से विदा ले कर वहाँ से चली गयीं।

सबसे बड़ा राज्कुमार जो बाज़ था वह सबसे बड़ी राजकुमारी फ़ैबीला[52] को एक पहाड़ की चोटी पर ले गया जो इतनी ऊँची थी कि बादलों का भी रास्ता रोक लेती थी। वह एक सूखे सिर द्वारा एक ऐसी जगह पहुँचती थी जहाँ बारिश नहीं होती थी। वहाँ पहुँच कर वह उसको एक बहुत ही सुन्दर महल में ले गया जहाँ वह रानी बन कर रहने लगी।

दूसरा राजकुमार जो हिरन था वह दूसरी राजकुमारी वास्ता[53] को एक जंगल में ले गया जो इतना घना था कि रात को साये भी उसके साथ नहीं जा सकते थे। वहाँ ले जा कर उसने राजकुमारी को उसके जगह के अनुसार एक बहुत ही शानदार घर में ले जा कर रख दिया। वह घर एक सुन्दर बागीचे में था।

डौलफिन रीटा[54] को अपनी पीठ पर बिठा कर समुद्र में तैर गया और समुद्र के बीच ले गया। वहाँ उसने उसको एक बहुत बड़े मकान में जो एक बहुत बड़ी चट्टान पर बना था ला कर रख दिया। वह मकान इतना बड़ा था कि उसमें तीन राजा रह सकते थे।

इस बीच ग्रैनज़ोला ने एक बहुत ही प्यारे बेटे को जन्म दिया जिसका नाम उन्होंने रखा टिटोन।[55]

---

52 Princess Fabiella – the eldest Princess

53 Princess Vasta – the second Princes

54 Princess Rita – the youngest Princess

55 Tittone – newly born brother of the three Princesses

जब वह 15 साल को हो गया तो वह अक्सर अपनी माँ को रोते और दुखी देखता। एक दिन उसने उससे पूछा कि ऐसा क्यों था। माँ ने बताया कि उसके तीन बेटियाँ थीं जिनको तीन जानवरों से ब्याह दिया गया था। पर जबसे उन्होंने उनको ब्याहा है तबसे उसको अपनी बेटियों के बारे में कुछ खबर ही नहीं मिली इस बात को कई साल हो गये। राजकुमार टिटौन ने सोचा कि वह दुनियाँ घूमेगा और उनकी कुछ खबर ले कर आयेगा।

सो उसने अपने माता पिता से बहुत प्रार्थना की बहुत मिन्नतें की कि उसको बाहर जाने दिया जाये वह अपनी बहिनों के बारे में पता लगाना चाहता है। शुरू में तो उन्होंने उसे मना किया पर उसकी जिद देख कर उसको जाने की इजाज़त दे दी।

एक राजकुमार के साथ यात्रा पर जिन जिन चीज़ों की जरूरत होती है उन सबका इन्तजाम कर के राजकुमार वहाँ से चल दिया। जाते समय माँ ने उसको भी वैसी ही एक अँगूठी दी जैसी उसने उसकी बहिनों को दी थी।

इस तरह टिटोन सारे में घूमता फिरा। उसने सारा इटली देखा भाला उसका कोई कोना नहीं छोड़ा। फ्रांस भी पूरा देखा। स्पेन भी नहीं छोड़ा। फिर वह इंगलैंड गया वहाँ से स्लोवेनिया गया फिर पोलैंड गया। थोड़े में कहो तो वह पूर्व पश्चिम सब जगह गया। पर उसे उनका कोई पता नहीं चला।

आखीर में उसने अपने कुछ नौकर सरायों में छोड़े कुछ को उसने अस्पतालों में छोड़ा और बिना एक पैसा लिये वह आगे बढ़ा।

अब वह एक पहाड़ पर आया जिस पर बाज़ और फ़ैबीला रहते थे। वह उस महल को खड़ा हुआ देखता का देखता रह गया। कितना सुन्दर महल था। उसके कोने वाले पत्थर पौरफिरी[56] के थे उसकी दीवारें अलाबास्टर की थीं खिड़कियाँ सोने की थीं उसके टाइल्स चाँदी के थे।

उसकी बहिन ने उसे देखा तो नौकरों को भेज कर उसे अन्दर बुलवाया और उससे पूछा कि वह कौन है कहाँ से आया है और यहाँ किस मतलब से आया है।

जब टिटोन ने उसे अपने देश का नाम बताया अपने माता पिता और अपना नाम बताया तो फ़ैबीला ने समझ लिया कि वह उसका भाई है। और इससे भी ज़्यादा तब जब उसने अपनी अँगूठी निकाल कर उसकी अँगूठी से मिलायी तब तो उसने खुशी के मारे उसे अपने गले से लगा लिया। उसने इस डर से कि जब उसका पति आयेगा तब वह कहीं नाराज न हो उसे छिपा लिया।

जैसे ही बाज़ घर लौटा फ़ैबीला ने उससे कहना शुरू किया कि उसकी बहुत इच्छा हो रही है कि वह अपने माता पिता से मिले। बाज़ बोला — "यह इच्छा तो तुम भूल जाओ क्योंकि यह नहीं हो सकता जब तक कि मुझे मेरी बुद्धि ले कर न जाये।"

---

[56] Porphyry, Alabaster

फ़ैबीला बोली — "कम से कम मैं अपने किसी रिश्तेदार को बुला लूँ जो मेरे साथ चला चले।"

बाज़ बोला — "और ज़रा यह तो बताओ कि इतनी दूर से यहाँ आयेगा कौन।"

फ़ैबीला फिर बोली — "हाँ यह तो है पर अगर कोई आ जाये तो क्या आप नाराज होंगे।"

बाज़ बोला — "मैं नाराज क्यों होऊँगा। मेरे लिये तो यही काफी होगा कि वह तुम्हारा कोई रिश्तेदार होगा जो मुझे साथ में ले चलेगा।"

जब फ़ैबीला ने यह सुना तो उसने अपने भाई को बुलाया और बाज़ से मिलवाया। बाज़ बोला — "पाँच और पाँच दस, प्यार तो दस्ताने में से भी घुस जाता है और पानी जूते में से घुस जाता है। तुम्हारा यहाँ स्वागत है। तुम इस मकान के मालिक हो। जो कुछ चाहिये तुम उसका हुक्म करो और जो चाहे सो करो।"

फिर उसने हुक्म दिया कि टिटोन को वैसे ही रखा जाये जैसे वह रहता है। जब टिटोन को वहाँ रहते हुए 15 दिन हो गये तब उसको याद आया कि उसको अपनी दूसरी बहिनों को भी तो ढूँढना है। सो उसने फ़ैबीला और अपने जीजा से विदा ली और आगे चल दिया।

जब वह जाने लगा तो बाज़ ने उसको अपना एक पंख देते हुए कहा — "यह पंख लो और इसको सँभाल कर रखना प्यारे टिटोन।

अगर तुम कभी किसी मुसीबत में फॅस जाओ तो यह तुम्हारे बहुत काम आयेगा।

इसको ठीक से रखना और तुम्हारे ऊपर कभी भी कोई भी मुसीबत आये तो इसको जमीन पर फेंक कर कहना "यहॉ आओ यहॉ आओ"। इसके लिये तुम मुझे धन्यवाद जरूर दोगे।"

टिटोन ने उस पंख को एक कागज में लपेटा अपनी जेब में रखा और बहुत सारी रस्मों के बाद उनसे विदा ली।

वह फिर बहुत दूर तक चलता रहा कि वह एक जंगल में आ पहॅुचा जिसमें उसका दूसरा जीजा हिरन उसकी दूसरी बहिन वास्ता के साथ रहता था। वह भूख से अधमरा हो रहा था सो वह बागीचे से फल तोड़ने पहॅुच गया।

उसकी बहिन ने उसे देखा तो उसे अन्दर बुलाया और उसे उसी तरह पहचाना जैसे फ़ैबीला ने पहचाना था। उसने भी टिटोन को अपने पति से मिलवाया। पति यानी हिरन ने भी उसका बड़े प्रेम से स्वागत किया और राजकुमार की तरह से रखा।

वहॉ भी वह **15** दिन रहा और फिर अपनी तीसरी बहिन को देखने के लिये वहॉ से चल दिया। चलते समय हिरन ने उसे अपना एक बाल दिया और उससे वही कहा जो उसके बड़े जीजा ने उससे कहा था।

वह फिर आगे चल दिया। उसके पास एक थैला भर कर क्राउन भी थे जो बाज़ ने उसको दिये थे और इतने ही उसको हिरन ने भी दिये थे।

चलते चलते वह धरती के अन्त तक आ गया। वह समुद्र के किनारे खड़ा था। इससे आगे चल कर नहीं जा सकता था। सो उसने एक जहाज़ लिया और वहाँ के आस पास के टापू देखने का विचार किया।

सो उसको खेता हुआ वह चलता गया चलता गया कि अन्त में वह एक टापू पर आ पहुँचा। यहाँ डोलफिन और रीटा रहते थे। जैसे ही वह वहाँ उतरा तो उसकी बहिन ने उसे देख लिया और उसे उसी तरह से पहचान लिया जैसे उसको उसकी दोनों बहिनों ने पहचाना था। उसके पति डोलफिन ने भी उसका बहुत प्रेम से स्वागत किया।

कुछ समय वहाँ रहने के बाद टिटोन ने वहाँ से घर जाने की इच्छा प्रगट की क्योंकि उसने अपने माता पिता को बहुत दिनों से नहीं देखा था। सो डोलफिन ने उसको अपनी खाल का एक टुकड़ा दिया और उससे वही कहा जो दूसरों ने उससे अपनी अपनी चीज़ों के बारे में कहा था कि वह उसका ध्यान रखे मुसीबत में वह उसके काम आयेगा।।

टिटोन एक घोड़े पर चढ़ा और चल दिया पर अभी समुद्र के किनारे से वह केवल आधा मील ही चला होगा कि वह एक जंगल में

आ गया जिसमें डर और साये एक साथ रहते थे और वहाँ उनका मेला लगा रहता था।

उस जंगल में एक झील थी और झील के बीच में एक मीनार देखी। झील का पानी पेड़ों के पैरों को छू रहा था और जैसे उनसे विनती कर रहा हो कि उसकी यह शरारत वे सूरज को न देखने दें।

उस मीनार की एक खिड़की में एक बहुत सुन्दर लड़की एक ड्रैगन के पैरों में बैठी थी। ड्रैगन सोया हुआ था।

जैसे ही लड़की ने टिटोन को देखा तो उसने उससे बहुत ही धीमी और हमदर्दी की आवाज में कहा — "ओ कुलीन नौजवान। ओ भगवान के भेजे हुए मेरे दुखों में मुझे खुशी देने वाले जहाँ अभी तक किसी ईसाई का चेहरा नहीं देखा गया है मेहरबानी कर के मुझे इस भयानक साँप से बचाओ।

यह मुझे ब्राइट वैली के राजा[57] मेरे पिता के घर से उठा लाया है और इस डरावनी मीनार में बन्द कर रखा है जहाँ मैं एक भयानक मौत मर जाऊँगी।"

"अफसोस मेरी सुन्दरी। मैं तेरी सेवा के लिये क्या करूँ। इस झील को कौन पार कर सकता है। कौन इस मीनार पर चढ़ सकता है। कौन इस भयानक ड्रैगन तक पहुँच सकता है जिसे देखने से ही डर लगता हो और जिसकी शक्ल ही दुखी करती हो।

[57] King of Bright Valley

पर आराम से। ज़रा रुको। किसी और की सहायता से हम इस सॉप को दूर भगा सकते हैं। हम यह काम एक एक कर के करेंगे। जितनी जल्दी करेंगे उतना ही काम धीरे होगा। अभी तो हम यह देखते हैं कि यह अंडा है या हवा।"

ऐसा कह कर उसने बाज़ का पंख बाल और खाल का टुकड़ा निकाला जो उसे उसके जीजाओं ने दिये थे और उन्हें जमीन पर यह कहते हुए फेंका "यहॉ आओ यहॉ आओ"।

बारिश की बूॅदों की तरह से जमीन पर गिरते हुए जैसे मेंढक पैदा हो जाते हैं वहॉ बाज़ हिरन और डोलफिन प्रगट हो गये और एक साथ चिल्लाये "देखो हम यहॉ हैं। हम तुम्हारे लिये क्या करें।"

जब टिटोन ने यह देखा तो वह बहुत खुश हुआ। खुशी से भर कर वह बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये सिवाय इसके कि उस सुन्दरी लड़की को उस भयानक ड्रैगन से बचाना है और उसे यहॉ से ले कर जाना है और इस मीनार को नष्ट कर देना है। मैं इस सुन्दरी को अपनी पत्नी बना कर अपने घर ले जाना चाहता हूॅ।"

बाज़ बोला — "चुप। बीन तो वहॉ भी उग आती है जहॉ तुम्हें उसके उगने की कोई उम्मीद भी नहीं होती। तुम देखना हम उसको अभी एक छह पैन्स के सिक्के के ऊपर नचाते हैं।"

हिरन बोला — "तो चलो हम अपना काम शुरू करते हैं समय क्यों गॅवाना। मुश्किलों और मैकैरोनी दोनों को गर्म गर्म ही खाया जाता है।"

बाज़ ने बहुत सारे घोड़े बुलाये जो मीनार तक उड़े और लड़की को उठा कर झील पार करा कर जहाँ टिटोन और उसके जीजा खड़े थे वहाँ तक ले आये। और अगर दूर से देखो तो वह एक चाँद थी पर पास से देखो तो वह बिल्कुल सूरज की तरह चमक रही थी। वह इतनी सुन्दर थी।

जब टिटोन उसको गले लगा रहा था और यह कह रहा था कि वह उसको कितना प्यार करता है कि ड्रैगन जाग गया। वह खिड़की से निकल कर भागा और झील को तैर कर पार करता हुआ टिटोन को खाने के लिये आया। पर हिरन ने शेर चीते तेंदुए भालू और जंगली बिल्लों को बुला लिया जिन्होंने ड्रैगन के ऊपर एक साथ कूद कर उसको मार दिया।

अब टिटोन ने वापस घर जाना चाहा तो डोलफ़िन बोला — "मैं भी तुम्हारे लिये कुछ करना चाहता हूँ।"

उस भयानक जगह का कोई नामो निशान भी न रहे उसने समुद्र के पानी को इतना ऊपर उठा दिया कि उसकी लहरें मीनार से टकरा गयीं और उन्होंने उसका नामो निशान तक मिटा दिया।

जब टिटोन ने यह सब देखा तो उसने सब जानवरों को जितने अच्छे तरीके से वह दे सकता था धन्यवाद दिया। उसने लड़की से भी उन सबको धन्यवाद देने के लिये कहा क्योंकि वह उन्हीं की कोशिशों से ड्रैगन के चंगुल से बच पायी थी।

पर जानवरों ने जवाब दिया — “नहीं नहीं। धन्यवाद तो हमें इस लड़की का करना चाहिये क्योंकि हम इसकी वजह से अपनी असली शक्ल में आ पाये हैं।

हमारे ऊपर जन्म से ही एक जादू पड़ा हुआ था क्योंकि हमारी माँ ने एक परी को नाराज कर दिया था तो उसने हमें शाप दिया था कि हम तब तक इन जानवरों की शक्ल में रहें जब तक कि किसी राजा की बेटी को भारी मुसीबत से छुटकारा न दिला दें।

और अब देखो वह समय आ गया है जिसका हमें इन्तजार था। फल पक गया है। हमारी छाती में एक नयी आत्मा भर रही है नसों में एक नया खून दौड़ रहा है।”

इतना कह कर वे तीन सुन्दर नौजवानों में बदल गये और बारी बारी से अपने साले को गले से लगाया और लड़की से हाथ मिलाया जो बहुत खुश थी।

जब टिटोन ने यह देखा तो वह तो बेहोश होते होते बचा वह बोला “मैं अपने माता पिता को यह खुशी की बात क्यों नहीं बता पा रहा। वे तो जब यह सब देखेंगे तो खुशी से पागल हो जायेंगे। अपने सुन्दर दामादों को देख कर तो उनकी खुशी तो कई गुना हो जायेगी।”

राजकुमारों ने कहा — “नहीं अभी रात नहीं हुई है। जब हमारी शक्ल बदली तो शर्म से हमको इन्सानों से छिपना पड़ा। पर अब भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि अब हम अपनी अपनी

पत्नियों के साथ दुनियाँ में रह सकते हैं और अपनी ज़िन्दगी ख़ुशी से जी सकते हैं। इससे पहले कि सूरज अपनी किरनें बिखेरे चलो हम अपनी अपनी पत्नियों को ले आयें।"

यह कह कर ताकि उनको पैदल न जाना पड़े क्योंकि अभी तो वहाँ केवल एक बीमार बूढ़ा घोड़ा था जो टिटोन घर से ले कर चला था भाइयों ने एक बहुत ही शानदार गाड़ी बुलायी जिसे छह शेर खींच रहे थे।

उस गाड़ी में वे पाँचों बैठे और दिन भर चलते रहे। रात को वे एक सराय में रुके। जब वहाँ खाना तैयार हो रहा था तो वे लोगों की अज्ञानता के सबूत पढ़ रहे थे जो वहाँ दीवार पर लिखे हुए थे। जब सब खाना खा चुके तो वे सोने चले गये।

पर तीनों भाइयों ने सोने का बहाना बनाया पर वे बाहर चले गये और रात भर टहलते रहे। सुबह को जब सितारे शर्मीली लड़कियों की तरह से सूरज से छिपने के लिये आसमान से चले गये वे फिर से उसी सराय में अपनी अपनी पत्नियों के साथ आ गये। एक बार फिर से लोग एक दूसरे के गले लगे और ख़ुशी फैल गयी।

फिर वे आठों उसी गाड़ी में बैठ कर ग्रीन बैंक पहुँचे वहा राजा और रानी ने अपने सब बच्चों को इतना ख़ुश देखा तो वे भी बहुत ख़ुश हुए। उनको केवल अपने चार बच्चे ही नहीं मिले थे जिनको वे समझ रहे थे कि वे खो गये हैं बल्कि तीन सुन्दर नौजवान दामाद और एक प्यारी सी बहू भी मिल गयी थी।

जब यह खुशी भरी खबर फेयर मैडो और ब्राइट वैली के राजाओं को सुनायी गयी तो वे दोनों भी बहुत खुश हुए और दावत में आये। क्योंकि —

खुशी का एक घंटा भी हजारों साल की परेशानियों को दूर कर देता है

22 4–5 ड्रैगन[58]

जो दूसरों को नुकसान पहुँचाने की सोचता है उसका अपना ही नुकसान अधिक होता है। जो दूसरों के लिये छल कपट का जाल बिछाता है वह खुद ही उसमें गिर जाता है। अब आप एक रानी की कहानी सुनेंगे जिसने अपने लिये अपने आप ही जाल बिछाया और उसका अपना पैर ही उसमें फँस गया।

एक समय की बात है कि हाई शोर[59] का एक राजा था जो इतना अत्याचारी और बेरहम था कि जब वह एक बार आनन्द मनाने के लिये शहर से कुछ दूर गया तो उसकी राज गद्दी एक जादू टोने वाली[60] ने ले ली।

इस पर राजा ने एक लकड़ी की मूर्ति से बात की जो भविष्य की बातें बताती थी। उसने बताया कि वह अपना राज्य फिर से पा सकता है जब जादू टोने वाली की आँखों की रोशनी चली जायेगी।

पर यह देख कर कि जादू टोने वाली एक तो बहुत अच्छी तरह से सुरक्षित थी दूसरे वह एक ही नजर में यह जान जाती थी कि कौन उसको तंग करने के लिये भेजा गया है और फिर उसके साथ वह कुत्ते का सा बर्ताव करती थी। वह राजा बिल्कुल निराश हो जाता था और उसके ऊपर गुस्से की वजह से उस जगह की सारी स्त्रियों को मार देता था जो भी उसके सामने आती थीं।

---

[58] The Dragon. (Tale No 22) Day 4, Tale 5

[59] High Shore – name of place

[60] Translated for the word “Sorceress”

अपनी बदनसीबी की वजह से सैंकड़ों की तादाद में वे इधर उधर होने के बाद मर भी जाती थीं। ऐसे समय में एक लड़की वहाँ दिखायी दी जिसका नाम था पोरज़ीला।[61] वह इतनी सुन्दर थी कि राजा को उससे प्यार हुए बिना न रह सका।

उसने उससे शादी कर ली पर वह तो इतना बेरहम था कि कुछ समय बाद तो वह उसको दूसरों की तरह से मारने वाला हो गया। पर जैसे ही वह उस पर अपना खंजर उठाने वाला हुआ कि एक चिड़िया उड़ती हुई आयी और उसके हाथ पर एक जड़ गिराती हुई चली गयी। राजा का हाथ कॉप गया और खंजर उसके हाथ से गिर गया।

यह चिड़िया एक परी थी जो कुछ दिनों पहले एक जंगल में सोने चली गयी थी जहाँ वह सायों के तम्बुओं के नीचे डर से जागती रही और सूरज की गर्मी सहती रही। वहाँ उसको एक आदमी लूटना चाहता था कि पोरज़ीला वहाँ आ गयी और उसने उसको जगा दिया। उसकी इसी मेहरबानी का बदला चुकाने के लिये वह परी हमेशा ही पोरज़ीला के पीछे पीछे लगी रहती।

जब राजा ने अपना हाथ इस तरह से रुकते हुए देखा तो उसे लगा कि पोरज़ीला की सुन्दरता ने ही उसका हाथ रोक लिया था और खंजर पर जादू डाल दिया था ताकि वह उसको न मार सके ऐसा ही उसने कई औरों के साथ भी किया था।

---

[61] Porzeilla – name of the woman

सो उसने सोच लिया कि वह उसको दोबारा मारने की कोशिश नहीं करेगा पर उसको उसके महल की छत के ऊपर वाले कमरे में तो जरूर ही मरना चाहिये।

जितनी जल्दी यह कहा गया उतनी ही जल्दी ही किया भी गया। उस बेचारी को महल की छत के ऊपर वाले कमरे की चार दीवारों के अन्दर बन्द कर दिया गया और उसको कोई खाना पीना नहीं दिया गया। वहाँ उसको तिल तिल कर के मरने के लिये छोड़ दिया गया।

चिड़िया ने जब उसको इस खराब हालत में देखा तो उससे कहा कि वह खुश रहे और वह उसकी की गयी मेहरबानी के बदले में अपनी जान दे कर भी उसकी सहायता करेगी।

पोरज़ीला ने उससे कई बार विनती की कि वह उसे बतादे कि वह कौन है पर उसने उसको यह बात उसे नहीं बतायी। बस केवल इतना ही कहा कि वह उसकी कर्जदार है और वह जान दे कर भी उसकी सहायता करेगी।

उसने देखा कि वह बेचारी लड़की भूखी है वह तुरन्त वहाँ से उड़ गयी और एक नुकीला चाकू ले कर वापस आयी। यह चाकू उसने राजा के रसोईघर से लिया था।

वह चाकू उसको दे कर उसने कहा कि वह उससे उस कमरे के कोने में फर्श खोदे जो राजा के रसोईघर के ठीक ऊपर था। वह

उसके लिये उस छेद से खाना लाती रहेगी ताकि वह ज़िन्दा रह सके।

पोरज़ीला ने वैसा ही किया। उसने वहाँ इतना बड़ा छेद कर लिया जिसमें से वह चिड़िया आ जा सकती थी। चिड़िया यह सब देख रही थी। उसने देखा कि रसोइया कुँए से पानी लाने के लिये रसोई से बाहर चला गया। वह उठी और एक सुन्दर सी मुर्गी जो आग के ऊपर भुन रही थी ले आयी।

अब उसको पोरज़ीला की प्यास बुझानी थी। वह नहीं जानती थी कि वह उसको पानी कैसे ला कर पिलाये। वह उड़ कर भंडारघर में गयी। वहाँ अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे। वह उनमें से एक बड़ा सा और बढ़िया गुच्छा अपनी चोंच में दबा कर ले आयी।

यह सब वह कई दिनों तक करती रही।

इस बीच पोरज़ीना ने एक छोटे से बेटे को जन्म दिया जिसको उसने चिड़िया की सहायता से खिलाया पिलाया और बड़ा किया। जब वह थोड़ा बड़ा हो गया तो परी ने उसको कहा कि वह छेद थोड़ा और बड़ा कर ले और फर्श के कुछ तख्ते और उखाड़ ले ताकि उसमें से म्यूकिओ[62] आ जा सके।

चिड़िया ने उसे कुछ रस्सियाँ भी ला कर दीं जिसके सहारे वह बेटे को नीचे उतार सकती थी। बाद में वह वह तख्ते वापस रख दे जिससे किसी को यह पता न चले कि वह कहाँ से आया है।

---

[62] Miuccio – name of Porziella's son

पोरज़ीला ने ऐसा ही किया। जब रसोइया रसोईघर से बाहर चला गया तो उसने अपने बेटे को रस्सी के सहारे नीचे उतार दिया और उससे यह कह दिया कि वह यह किसी हालत में किसी को न बताये कि वह कहाँ से आया है और किसका बेटा है।

जब रसोइया वापस लौटा तो उसने देखा कि सुन्दर सा बच्चा इधर उधर घूम रहा है। उसने उससे पूछा कि वह कौन है कहाँ से आया है और उसे क्या चाहिये। इस पर बच्चे ने अपनी माँ की बात याद कर के कहा कि वह एक गरीब अनाथ बच्चा है और काम की तलाश में है।

इतने में रसोई की देखभाल करने वाला आ गया तो उसने इस ज़िन्दादिल छोटे से बच्चे को देखा तो उसने सोचा कि यह तो राजा की गद्दी के पास खड़ा रहने वाला अच्छा लगेगा सो वह उसको शाही महल में ले गया।

जब राजा ने इतना सुन्दर और आकर्षक बच्चा देखा तो वह उसको एक रत्न जैसा लगा। वह उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उसको अपना निजी नौकर रख लिया। उसने उसको एक सिपाही जैसी सारी ट्रेनिंग दिलवानी शुरू कर दी। सो म्यूकिओ अब पूरे तरीके से दरबारी हो गया।

राजा अब उसको अपने सौतेले बेटे से भी ज़्यादा प्यार करता था। राजा की सौतेली माँ जो सचमुच में रानी थी इस वजह से

म्यूकिओ से नफरत करने लगी। उसको जितना उसको प्यार करना चाहिये था वह उससे उससे ज़्यादा नफरत करती थी।

सो उसने निश्चय किया कि वह उसके चढ़ने वाली सीढ़ी पर ऐसा साबुन लगायेगी कि वह ऊपर से नीचे गिरता नजर आयेगा।

सो इस प्लान के अनुसार एक दिन जब राजा और उसकी सौतेली माँ बैठे हुए थे और आपस में बातें कर रहे थे। रानी ने राजा से कहा कि एक दिन म्यूकिओ कह रहा था कि वह हवा में तीन किले बनायेगा।

यह सुन कर अगली सुबह चाँद, सायों की प्रिन्सीपल, ने जब अपने शिष्यों को सूरज का त्यौहार मनाने के लिये छुट्टी दे दी तो या तो आश्चर्य की वजह या फिर रानी को सन्तुष्ट करने की वजह से राजा ने म्यूकिओ को बुलवाया और उसको हवा में तीन किले बनाने का हुक्म दिया जैसा कि म्यूकिओ ने कहा था वरना वह उसको हवा में नचा देगा।

जब म्यूकिओ ने यह सुना तो वह अपने कमरे में चला गया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। लो तभी चिड़िया वहाँ आ पहुँची और बोली — "म्यूकिओ। रोओ नहीं। धीरज रखो। तुम्हारे साथ मैं हूँ न। मैं तुम्हें आग में से निकालने की भी ताकत रखती हूँ।"

तब उसने उससे कहा कि वह कुछ गत्ते के टुकड़े ले और उनसे तीन बड़े किले बनाये। फिर उसने तीन बड़ी चिड़ियों को बुलाया

और एक एक किला उनमें बॉध दिया। वे उन किलों को ले कर हवा में उड़ गयीं।

इसके बाद म्यूकिओ ने राजा को बुलाया तो राजा हवाई किले देखने के लिये अपने सब दरबारियों को साथ ले कर दौड़ा दौड़ा आया और जब उसने म्यूकिओ का यह भोला सा दृश्य देखा तो वह तो उसे और ज़्यादा प्यार करने लगा। वह बहुत देर तक उसे प्यार से सहलाता रहा।

इसने तो रानी पर बर्फ डाल दी और उसके गुस्से की आग को और भड़का दिया। यह देख कर कि उसके सारी तरकीबों पर पानी फिर रहा है अब तो वह जागते सोते यही सोचती रहती कि ऑखों के इस कॉटे को कैसे हटाया जाये।

सो कुछ दिनों बाद उसने राजा से कहा — “बेटे अब समय आ गया है कि हम अपने पुरानी शान और बड़प्पन को फिर से पाने की कोशिश करें क्योंकि म्यूकिओ ने कहा है कि वह जादू टोना वाली को अन्धा कर तुम्हारा राज्य तुम्हें वापस दिलवा देगा।”

यह तो राजा की दुखती रग थी जिसे रानी ने आज छू दिया था। उसने उसी पल म्यूकिओ को बुलवाया और उससे कहा — “यह सुन कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि तुम उस जादू टोने वाली को अन्धा कर के मेरा राज्य मुझे वापस दिलवा दोगे जहॉ से मैं गिर चुका हूँ।

तुम इतने लापरवाह रहे कि बजाय इसके कि तुम मेरा राज्य मुझे वापस दिलवा कर मुझे इस बदकिस्मती से बचाते तुमने तो इस राज्य को जंगल बना दिया शहर को एक किला बना दिया। बजाय इसके कि मैं बहुत सारे लोगों पर हुक्म चलाता अब में केवल बहुत थोड़े से छोटे लोगों का मालिक हूॅ।

अगर तुम मेरा बुरा नहीं चाहते तो तुम अभी इसी समय जाओ और उस परी को अन्धा कर के आओ जिसके हाथों में मेरा सब कुछ है। क्योंकि उसकी लालटेनें बुझा कर तुम मेरी इज़्ज़त के दिये जलाओगे जो इस समय अॅधेरे में पड़े हैं।"

जब म्यूकिओ ने राजा का यह प्रस्ताव सुना तो वह तो भौंचक्का रह गया। वह बोला — "आपने कहीं कुछ गलत सुना है। मैं कोई रैवन नहीं हॅू जो किसी की ऑख निकाल लूॅगा और न ही कोई कुॅआ खोदने वाली मशीन।"

राजा बोला — "बस अब एक शब्द भी नहीं। जैसा मैंने कहा है वैसा ही करो। याद रखो कि मेरे अपने इस दिमाग की टकसाल में तराजू तैयार रहती है। उसके एक पलड़े में इनाम रहता है अगर जैसा में कहॅू तुम करो तो, और दूसरे पलड़े में सजा अगर तुम वह न करो जो मैं कहॅू तो।"

म्यूकिओ जो चट्टान में सिर नहीं मार सकता था। उसको तो उसी से बर्तना था जो अचल खड़ा था। वह बेचारा फिर अपने कमरे में जा कर रोने लगा।

फिर उसके कमरे चिड़िया आयी और बोली — "म्यूकिओ क्या यह मुमकिन है कि हर बार तुमको चुल्लू भर पानी में डूबना पड़े। अगर मैं मर गयी होती तब तुम कोई नखरा नहीं करते। क्या तुम्हें पता है तुम्हारी ज़िन्दगी मेरे लिये अपनी ज़िन्दगी से भी ज़्यादा कीमती है? अब तुम देखना कि मैं क्या कर सकती हूँ।"

इतना कह कर वह उड़ गयी और एक पेड़ पर जा कर बैठ गयी। वहाँ पहुँच कर उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से बोलना शुरू कर दिया। उसकी आवाज सुन कर बहुत सारी चिड़ियें वहाँ आ गयीं।

उसने उनको म्यूकिओ की सब कहानी सुनायी और फिर उनको विश्वास दिलाया कि जो कोई भी जादू टोने वाली की आँख निकालेगा उसको काइट और बाज़ से सुरक्षा दी जायेगी और एक सर्टिफिकेट दिया जायेगा जिसकी सहायता से वह बन्दूक और धनुष बाण आदि सब हथियारों से सुरक्षित रहेगी।

अब इन सब चिड़ियों में एक घरेलू चिड़िया भी थी जिसने शाही महल की एक शहतीर में अपना घोंसला बनाया हुआ था और जो जादू टोने वाली से बहुत नफरत करती थी क्योंकि जब वह अपना घोंसला बना रही थी तो उस जादू टोने वाली ने कई बार उसे अपने महल में से कीड़े मकोड़े मारने की दवा का छिड़काव करा कर बाहर निकाला था।

इसलिये कुछ तो बदले की भावना से और कुछ चिड़िया के इनाम के लालच में वह यह काम करने को तैयार हो गयी थी।

सो वह बिजली की तेज़ी से शहर की तरफ उड़ गयी और महल के अन्दर घुसी। वहाँ उसने परी को एक काउच पर लेटे पाया। दो लड़कियाँ उसको पंखा झल रही थीं। चिड़िया आयी और सीधी आ कर परी के ऊपर बैठ कर उसकी दोनों आँखें निकाल लीं।

परी ने देखा कि यह तो दोपहर में ही रात हो गयी तो वह समझ गयी कि ऐसा होने से तो उसका सारा सामान ही चला गया। चीखते चिल्लाते गालियाँ देते कोसते हुए उसने अपना राजदंड तो छोड़ दिया और एक गुफा में छिपने चली गयी जहाँ वह गुफा की दीवार पर मार मार अपना सिर पीटने लगी। फिर बाद में वह मर गयी।

जब जादू टोना करने वाली चली गयी तो सलाहकारों ने राजा के पास दूत भेजे कि अब वह वापस आ सकता है क्योंकि जादू टोने वाली के अन्धी होने से ही उसको यह अच्छा दिन देखने को मिला था।

जब वे लोग आये तभी म्यूकिओ भी वहाँ आ गया उसने चिड़िया के कहे अनुसार राजा से कहा — "मैंने अपनी पूरी ताकत से आपकी सेवा की है। जादू टोने वाली अन्धी हो चुकी है। अब यह राज्य आपका है।

अगर मैं इस सेवा का कुछ इनाम चाहता हूँ तो बस अब मैं यही चाहता हूँ कि खतरनाक खतरों में डालने की बजाय मुझे मेरी बदकिस्मती के साथ छोड़ दिया जाये।" पर राजा ने उसको गले लगा लिया। उसके सिर पर अपनी टोपी रख दी और उसको अपने पास बिठा लिया।

यह देख कर तो रानी फिर बहुत गुस्सा हो गयी। भगवान ही जानता है कि इसके लिये उसके चेहरे पर कितने रंग आये गये और म्यूकिओ के खिलाफ कितने तूफान उसके दिल में उठे।

X X X X X X X

इस किले से थोड़ी ही दूर पर एक बहुत ही भयानक किस्म का ड्रैगन रहता था जो रानी के जन्म के समय ही पैदा हुआ था। रानी के जन्म के समय उसके पिता ने बहुत सारे ज्योतिषियों को उसका भविष्य बताने के लिये बुलाया।

उन्होंने बताया कि आपकी बेटी को तब तक किसी का डर नहीं है जब तक यह ड्रैगन सुरक्षित है। जब इन दोनों में से कोई एक मरेगा तब दूसरा भी मर जायेगा। रानी को केवल एक ही चीज़ फिर से ज़िन्दा कर सकती है कि उसकी कनपटियों छाती नथुनों और कलाई पर उसी ड्रैगन का खून मला जाये।

रानी इस जानवर का गुस्सा और भयानकता जानती थी। सो एक दिन उसने म्यूकिओ को उसके चंगुल में भेजने की सोची।

उसको इस बात का पूरा विश्वास था कि वह जानवर उसको पूरा का पूरा खा जायेगा और वह तो एक भालू के गले में एक स्ट्रौबैरी जैसा होगा।

सो एक दिन उसने राजा से कहा — "मेरी बात मानो। यह म्यूकिओ तो तुम्हारे राज्य का एक रत्न है। अगर तुम उसको प्यार नहीं करोगे तो तुम उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय करोगे। खास कर के जबकि उसने यह इच्छा प्रगट की है कि वह उस ड्रैगन को मारेगा। यह ड्रैगन हालाँकि मेरा भाई है पर यह तुम्हारा दुश्मन है। मैं अपने 100 भाई तुम्हारे ऊपर कुर्बान कर दूँ।"

राजा ड्रैगन से बहुत नफरत करता था पर वह यह नहीं जानता था कि वह उसे अपनी आँखों के सामने से कैसे दूर करे। यह सुन कर उसने तुरन्त ही म्यूकिओ को बुलाया और उससे कहा — "मुझे मालूम है कि तुम जिस चीज़ पर भी अपना हाथ रख देते हो तुम उसको पा लेते हो।

इसलिये क्योंकि तुमने मेरे ऊपर इतने ऐहसान किये हैं तो मेरे लिये एक काम और कर दो फिर तुम जहाँ चाहो वहाँ चले जाना। तुम अभी अभी चले जाओ और ड्रैगन को मार दो। तुम्हें इस एक काम के लिये मैं तुम्हें भरपूर इनाम दूँगा।"

यह सुन कर म्यूकिओ के तो होश ही उड़ गये। पर जैसे ही वह कुछ बोलने लायक हुआ उसने राजा से कहा — "अफसोस। आप मुझे बार बार यह क्या सिर दर्द दे रहे हैं। क्या मेरी ज़िन्दगी किसी

काले बकरे की खाल का कपड़ा है जिसे आप हमेशा ऐसे ही पहनते रहेंगे।

यह कोई कटी हुई नाशपाती भी नहीं है जो खाने के लिये तैयार हो यह तो ड्रैगन है जो अपने पंजों से फाड़ता है अपने सिर से टुकड़े करता है अपनी पूँछ से कुचलता है अपने दाँतों से चबाता है आँखों से जहर फैलाता है और अपनी साँस से मारता है।

आप मुझे इस मौत के मुँह में क्यों भेजना चाहते हैं। क्या यह मेरे आपको राज्य वापस दिलवाने का इनाम है। वह कौन नीच है जिसने मेरे मारने के लिये यह प्लान बनाया है। किस बेरहम के बेटे ने आपको यह सब सिखाया है कि आप मुझसे ऐसी बात कहें।"

तब राजा जो गेंद की तरह से इधर उधर उछल सकता था अपने विचारों में पक्का भी था। जो उसने एक बार कह दिया सो कह दिया।

सो उसने पैर पटके और बोला — "आखिर तुमने मेरे लिये इतना सब किया है तो क्या तुम आखीर में मुझे निराश करोगे। जाओ और मेरे राज्य को इस प्लेग से आजाद करो नहीं तो मैं तुम्हें तुम्हारी ज़िन्दगी से आजाद कर दूँगा।"

बेचारा म्यूकिओ जिसको एक पल में तो राजा की कृपा मिलती थी और दूसरे पल धमकी मिलती थी। एक पल में उसको शाबाशी मिलती थी और दूसरे पल में ठोकर। एक पल में उसको दया और तारीफ के शब्द मिलते थे तो दूसरे पल... ।

यह दिखाता था कि राजा का दरबार कितना उथला है और अगर राजा को न जाना जाये तो वह कितना झूठा भी था।

पर अगर किसी को यह बात पता है तो बड़े लोगों को जवाब देना बेवकूफी है या फिर जैसे शेर को उसकी दाढ़ी से पकड़ना। म्यूकिओ हार गया। वह अपनी किस्मत को कोसते हुए जिसने कि उसकी ज़िन्दगी को इतने खतरे में डालने के लिये उसको इस दरबार में भेजा था वहाँ से चला आया और आ कर अपने कमरे की सीढ़ी पर बैठ गया।

उसने अपना सिर अपने घुटनों में छिपा लिया और रोने लगा। उसके ऑसुओं से उसके जूते भीगने लगे और उसकी आहों से जमीन भी गर्म होने लगी।

लो तभी चिड़िया वहाँ उड़ती हुई आयी। उसकी चोंच में एक पौधा था। वह उस पौधे को म्यूकिओ की तरफ फेंकती हुई बोली — "चलो उठो म्यूकिओ। हिम्मत रखो। तुम अपने समय के साथ खेल खेलने नहीं जा रहे बल्कि तुम ड्रैगन की ज़िन्दगी के साथ खेलने जा रहे हो।

लो तुम यह पौधा लो और जब तुम उसकी गुफा तक पहुँचो तो इसको उसकी गुफा के अन्दर फेंक देना। इससे उसके ऊपर एक ऐसी बेहोशी आयेगी कि वह तुरन्त ही गहरी नींद सो जायेगा। बस उस समय तुम चाकू मार मार कर उसको मार देना। उसके बाद वहाँ

से चले आना। तुम देखोगे कि अब तुम्हारे लिये परिस्थितियाँ जितनी तुम सोच भी नहीं सकते उससे कहीं ज़्यादा अच्छी हो गयीं है।"

म्यूकिओ बोला — "बस काफी है। मुझे मालूम है कि मेरे पास क्या है। हमारे पास पैसे से ज़्यादा समय है और जिसके पास समय है उसके पास ज़िन्दगी है।"

सो वह उठा एक काटने वाला चाकू अपने साथ लिया और ड्रैगन की गुफा की तरफ चल दिया जो एक इतने ऊँचे पहाड़ में थी कि तीन पहाड़ जो किसी बड़े साइज़ के आदमी के कदम जितने बड़े थे वे उसकी कमर तक भी नहीं पहुँच सकते थे।

जब वह वहाँ आया तो उसने वह पौधा गुफा के अन्दर फेंक दिया। उसके उस पौधे के गुफा में फेंकते ही उस ड्रैगन पर एक गहरी नींद छा गयी। बस उसके सोते ही म्यूकिओ ने उसके टुकड़े काटने शुरू कर दिये।

जब वह ड्रैगन के टुकड़े काट रहा था तो रानी ने अपने दिल में एक काटने वाल दर्द महसूस किया। उसने देखा कि यह तो उसने कुल्हाड़ी अपने पैरों पर अपने आप ही मार ली है। उसको अपनी गलती का एहसास हुआ कि उसने तो पैसे से मौत खरीद ली है।

सो उसने अपने सौतेले बेटे को बुलाया और उसे बताया कि उसके पैदा होने के समय उसके बारे में ज्योतिषियों ने क्या कहा था। कि किस तरह से उसकी ज़िन्दगी ड्रैगन की ज़िन्दगी से जुड़ी

हुई थी। और कैसे वह डरी हुई थी कि म्यूकिओ ने शायद उसको मार दिया था क्योंकि वह खुद भी मरती जा रही थी।

राजा बोला — "मॉ अगर आपको यह मालूम था कि आपकी ज़िन्दगी ड्रैगन की ज़िन्दगी पर आधारित है तो आपने मुझे उसे भेजने ही क्यों दिया। यह गलती किसकी है। तो यह गड़बड़ तो खुद आपने अपने आप ही की है। अब इसे आप खुद भुगतिये। आपने शीशा तोड़ा है तो इसको ठीक कराने के पैसे भी आप ही दीजिये।"

रानी बोली — "बेटा मैंने कभी सोचा ही नहीं था कि यह छोटा सा बच्चा इतना बहादुर होगा कि वह उसको मार ही डालेगा जो खुद ही एक फौज के बराबर है। मैं तो सोचती थी कि बस अब तो वहॉ उसके फटे कपड़े ही मिलेंगे।

पर क्योंकि यह काम मैंने बिना किसी की सलाह लिये किया है तो अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे ऊपर एक एहसान कर दो। जब मैं मर जाऊॅ तो मुझे दफ़न करने से पहले एक स्पंज ड्रैगन के खून में भिगोना और उसे मेरे सारे शरीर पर मल देना।"

राजा बोला — "यह तो मैं जितना आपको प्यार करता हूॅ उसके लिये कोई बड़ी बात नहीं है। और अगर ड्रैगन का खून काफी नहीं हुआ तो आपकी सन्तुष्टि के लिये मै अपना खून भी उसमें मिला दूॅगा।"

रानी उसको धन्यवाद देने ही वाली थी कि उसके प्राण पखेरू उड़ गये क्योंकि तभी म्यूकिओ ने उसे काटना खत्म किया था।

जैसे ही म्यूकिओ यह खबर देने के लिये राजा के पास महल आया और उसने अपनी खबर सुनायी कि उसने राजा का कहा कर दिया है राजा ने उसे उलटे पैरों वापस जाने और ड्रैगन का खून लाने के लिये कहा।

पर वह यह जानने के लिये बहुत उत्सुक था कि म्यूकिओ ने अपना काम कैसे किया सो वह उसके पीछे पीछे चल दिया। जैसे ही म्यूकिओ महल के फाटक के बाहर निकला तो उसे अपनी चिड़िया मिल गयी।

चिड़िया ने उससे पूछा — "अब तुम कहाँ जा रहे हो?"

म्यूकिओ बोला — "मैं वहाँ जाता हूँ जहाँ राजा मुझे भेजता है। मुझे वह शटल की तरह से आगे पीछे उछालता रहता है। मुझे तो एक पल का भी आराम नहीं है।"

चिड़िया बोली — "अब क्या करना है।"

म्यूकिओ बोला — "मुझे ड्रैगन का खून लाना है।"

चिड़िया बोली — "ओ अभागे लड़के। इस ड्रैगन का खून तुम्हारे लिये बैल के खून जैसा होगा। यह तुमको फाड़ डालेगा। क्योंकि इस खून से बुराई फिर से ज़िन्दा हो जायेगी जो तुम्हारी बदकिस्मती के बन्द दरवाजे फिर से खोल देगी।

यह रानी तुम्हारे लिये बराबर कुछ न कुछ बुरे प्लान बनाती रही है ताकि तुम मर जाओ। और यह राजा उसकी हर बात मानता रहा है और तुम्हारी ज़िन्दगी को खतरे में डाल कर तुम्हें हुक्म देता रहा है

जो उसका अपना माँस और अपना खून है अपने तने की शाख है। पर यह अभागा आदमी यह बात नहीं जानता और न तुम्हें पहचानता है हालाँकि खून का रिश्ता उसके दिल में तुम्हारे लिये प्यार उपजाता है।

खैर तुमने राजा की जो जो सेवाऐं अब तक की हैं और जिससे उसको इतना सुन्दर बेटा और वारिस मिला है उसके बदले में तुम उससे अपनी दुखी माँ पोरज़ीला के लिये खुशी माँग लो। वह बेचारी **14** साल से उस ऊपर वाले कमरे में बन्द है। इतने छोटे से कमरे में राजा को इतनी सुन्दरता कहाँ मिलेगी।"

जब परी उससे ये बातें कर रही थी तो राजा उसकी हर बात सुन रहा था इस सब मामले के बारे में पूरी बात जानने के लिये आगे बढ़ा।

यह जान कर कि म्यूकिओ उसका और पोरज़ीलो का अपना बेटा है और पोरज़ीलो अभी भी ऊपर के कमरे में ज़िन्दा है उसने हुक्म दिया कि पोरज़ीलो को तुरन्त ही वहाँ से निकाल कर उसके सामने लाया जाये।

राजा ने उसको अपने सामने देखा तो वह उसको बहुत सुन्दर लगी क्योंकि इतने सालों से चिड़िया उसकी देखभाल कर रही थी। उसने उसको बहुत प्यार से गले लगाया। उन दोनों को गले लगाते लगाते उसकी तो सन्तुष्टि ही नहीं हो रही थी।

उसने पोरज़ीला से अपने बुरे व्यवहार की माफी मॉगी और अपने बेटे से उसको इतने खतरनाक काम देने के लिये माफी मॉगी। फिर उसने पोरज़ीला को कीमती कपड़े और गहने पहनवाये और उसको अपनी रानी का दर्जा दिया। उसको सबके सामने ताज पहनाया गया।

जब राजा को यह पता चला कि पोरज़ीला और उसका बेटा केवल इसलिये सुरक्षित था कि चिड़िया ने उनकी देखभाल की थी। एक को उसने खाना दिया और दूसरे को सलाह तो उसने अपना राज्य और ज़िन्दगी उसी को सौंप दी।

लेकिन चिड़िया बोली कि उसको अपनी इन सेवाओं का कोई इनाम नहीं चाहिये सिवाय इसके वह म्यूकिओ से शादी करना चाहती थी। जैसे ही उसने यह कहा वह एक सुन्दर लड़की में बदल गयी और राजा और पोरज़ीला की खुशी के लिये उन दोनों की शादी हो गयी।

उसके बाद नया शादीशुदा जोड़ा फिर और खुशी देने के लिये परी के राज्य गया जहॉ लोग उनका बड़ी उत्सुकता से इन्तजार कर रहे थे। हर परी उसकी खुशकिस्मती की तारीफ कर रही थी जो पोरज़ीला ने उसको दी थी। क्योंकि —

कोई अच्छा काम कभी बेकार नहीं जाता[63]

[63] A Good Deed Is Never Lost

23 4–7 दो केक[64]

मैंने हमेशा यही सुना है कि जो खुशी देता है उसको खुशी मिलती है। मैनफ्रैडोनिया का घंटा कहता है कि "तू मुझे दे मैं तुझे दूँगा।" जो मछली के कॉटे पर चारा प्रेम से नहीं लगाता वह कभी प्रेम की मछलियॉ नहीं पकड़ सकता। और अगर आप लोग इसका सबूत चाहते हैं तो आप मेरी कहानी सुनें और तब बतायें कि क्या किसी लालची आदमी को दयावान आदमी से ज़्यादा नुकसान नहीं होता।

एक बार की बात है कि दो बहिनें थीं एक का नाम था लुसैटा और दूसरी का नाम था ट्रोकोला।[65] दोनों के एक एक बेटी थी। लुसैटा की बेटी का नाम था मारज़ीला और ट्रोकोला की बेटी का नाम था पूचा।[66]

मारज़ीला देखने में जितनी सुन्दर थी उतनी ही वह दिल की भी अच्छी थी। जबकि पूचा थोड़ी बदसूरत थी और एक प्लेग थी। यह लड़की अपनी मॉ से मिलती जुलती थी क्योंकि पूचा दिल से तो खुश थी पर बाहर से बहुत बनावटी थी।

एक दिन लुसैटा ने कुछ मूलियॉ[67] उबलने रखीं ताकि वह उन्हें हरी सौस के साथ तल सके।

---

[64] The Two Cakes. (Tale No 23) Day 4, Tale No 7

[65] Luceta and Troccola

[66] Marziella and Puccia – names of the daughters of Troccola

[67] Translated for the word "Parsnip". See its picture above.

सो उसने अपनी बेटी मारज़ीला से कहा — "बेटी जा ज़रा कुॅए पर चली जा और मुझे एक घड़ा पानी ला दे।"

लड़की बोली — "अच्छा मॉ। पर अगर तुम मुझे प्यार करती हो तो मुझे एक केक देना क्योंकि मुझे ताजा पानी के साथ केक खाना बहुत अच्छा लगता है।"

उसकी मॉ ने भी कहा "ठीक है।" सो उसने ऊपर टॅगी हुई एक टोकरी में से एक केक निकाल कर उसको दे दिया। ये केक उसने कल ही बनाये थे। माज़रीला ने भी एक कपड़ा अपने सिर पर रखा और उस पर घड़ा रख कर फव्वारे की तरफ चल दी। फव्वारा भी पानी के संगीत के साथ प्यासों को पानी पिला रहा था।

जैसे ही वह घड़े में पानी भरने के लिये नीचे झुकी कि एक कुबड़ी बुढ़िया वहॉ आयी। उसने सुन्दर केक देखी जो मारज़ीला तभी खाने जा रही थी तो बोली — "मेरी प्यारी बच्ची। मुझे भी थोड़ी सी केक दो न। भगवान तुम्हें खुशकिस्मत बनाये।"

मारज़ीला तो रानी की तरह दरियदिल थी सो बोली — "लो तुम यह सारा ही केक ले लो। बस मुझे यही अफसोस है कि यह चीनी और बादाम का बना हुआ नहीं है। और अगर होता भी तो क्या, मैं तुम्हें उसे तभी भी इतनी ही खुशी से दे देती जितनी खुशी से यह केक दे रही हूॅ।"

बुढ़िया मारज़ीला की दया देख कर उसको आशीर्वाद दिया "भगवान तुम्हें इस अच्छे काम के बदले में जरूर इनाम देगा। मैं हर

सितारे से प्रार्थना करूँगी कि वह तुम्हें हमेशा खुश और सन्तुष्ट रखे। जब तुम साँस लो तुम्हारे मुँह से गुलाब और चमेली के फूल गिरें। जब तुम अपने बालों में कंघी करो तो बालों में से मोती और गार्नेट गिरें और जब तुम अपना पैर जमीन पर रखो तो वहाँ लिली और वौयलेट के फूल खिलते जायें।"

मारज़ीला ने बुढ़िया को धन्यवाद दिया और घर चली गयी। वहाँ माँ ने उसके लिये खाना तैयार कर के रखा हुआ था सो उन्होंने खाना खाया और इस तरह दिन खत्म हो गया।

अगली सुबह जब सूरज दैवीय मैदान में पूर्व से रोशनी का सामान बेचने के लिये बाजार में आया तो मारज़ीला जब अपने बालों में कंघी कर रही थी उसने देखा कि उसके बालों में से मोती और गार्नेट निकल पड़े और उसकी गोद में गिर पड़े।

यह देख कर वह बहत खुश हो गयी। खुशी से उसने अपनी माँ को पुकारा तो दोनों ने मिल कर उन्हें एक टोकरी में रख लिया। लुसैटा उनमें से काफी रत्न ले कर बाजार में अपने एक दोस्त को बेचने के लिये गयी।

उधर लुसैटा की बहिन ट्रोकोला अपनी बहिन से मिलने आयी हुई थी। उसने देखा कि मारज़ीला तो बहुत खुश थी और मोतियों में लगी हुई थी। उसने उससे पूछा कि वे उसको कहाँ कैसे और कब मिले।

बेचारी मारज़ीला को दुनियाँ के कायदे कानून आते नहीं थे और शायद उसने यह कहावत भी नहीं सुनी थी कि "कभी वह सब मत करो जो तुम कर सकते हो। कभी वह सब कुछ मत खाओ जो तुम चाहते हो। कभी अपना सब कुछ खर्च मत कर दो। और कभी वह सब मत बताओ जो तुम जानते हो।"

उसने उसको सारा हाल बता दिया। ट्रोकोला ने अपनी बहिन के लौटने का भी इन्तजार नहीं किया क्योंकि उसको तो हर मिनट **1000** साल के बराबर लग रहा था। वह तुरन्त घर पहुँची घर में से एक केक निकाली और अपनी बेटी पूचा को दे कर कहा कि वह फव्वारे से जा कर एक घड़ा पानी ले आये।

पूचा वहाँ गयी तो उसको भी वहाँ वही बुढ़िया मिली। जब उस बुढ़िया ने उससे केक का एक टुकड़ा माँगा तो पूचा बोली — "क्या मेरे पास तुम्हें केक देने के सिवा और कोई काम नहीं है। क्या तुम मुझे इतना बेवकूफ समझती हो कि मैं अपनी चीज़ तुम्हें दे दूँ।"

कह कर उसने चार बार में अपना केक खत्म कर लिया। बुढ़िया के मुँह में पानी ही रह गया। जब उसने देखा कि पूचा ने अपना आखिरी कौर भी खा लिया तो उसकी केक खाने की आशा बिल्कुल ही खत्म हो गयी।

वह चिल्लायी — "चली जा यहाँ से। जब तू बोले तो तेरे मुँह से वैसे ही झाग गिरें जैसे डाक्टर के खच्चर से गिरते है। तेरे होठों

से मेंढक गिरें और हर बार जब भी तू जमीन पर पैर रखे तो फर्न और कॉटे उगते जायें।”

पूचा ने अपना पानी का घड़ा उठाया और घर चली आयी। पर जैसे ही पूचा ने यह बताने के लिये अपने होठ खोले कि फव्वारे पर क्या हुआ था कि उसके मुँह से बहुत सारे मेंढक निकल पड़े। जिनको देखते ही उसकी मॉ के गुस्से में घी पड़ गया और उसकी नाक और मुँह से धुँआ निकलने लगा।

अब कुछ ऐसा हुआ कि कुछ समय बाद मारज़ीला का भाई सियोमो राजा चियुन्ज़ो[68] के दरबार में था तो वहॉ बात कुछ स्त्रियों की सुन्दरता की तरफ मुड़ गयी।

वह आगे आया और बिना किसी के पूछे उसने कहा कि “मेरी बहिन जब यहॉ आयेगी तब सब सुन्दर लड़कियों को अपना अपना चेहरा छिपाना पड़ेगा। क्योंकि वह केवल शरीर की ही सुन्दर नहीं बल्कि उसके बाल मुँह और पैर में भी कुछ खासियतें हैं जो उसको एक परी ने दी थीं।”

राजा ने जब उसकी यह बात सुनी तो उसने सियोमो से उसकी बहिन को दरबार में लाने के लिये कहा। साथ में उसने उससे यह भी कहा कि अगर उसकी बहिन वैसी ही पायी गयी जैसी कि उसने बतायी है तो वह उससे शादी भी कर सकता है।

---

[68] Brother of Marziella, Ciommo, was in the court of the King Chiyunzo

सियोमो ने सोचा कि यह मौका तो कोई खोने का मौका नहीं है सो उसने एक दूत यह बताते हुए अपनी माँ के पास भेजा कि उस दिन दरबार में क्या हुआ था और वह तुरन्त ही अपनी बेटी को ले कर दरबार में आ जाये ताकि वे लोग यह सुनहरा मौका न खो सकें।

पर लुसैटा की तबियत उस दिन कुछ ठीक नहीं थी तो उसने मेमने को भेड़िये के साथ भेज दिया। उसने अपनी बहिन से अपनी बेटी मारज़ीला को राजा चियुन्ज़ो के दरबार में ले जाने के लिये कह दिया।

इस पर ट्रोकोला ने देखा कि अब तो सारा मामला उसी के हाथों में है तो उसने अपनी बहिन से वायदा किया कि वह मारज़ीला को सुरक्षित रूप से उसके भाई तक पहुँचा देगी।

उसने मारज़ीला और पूचा दोनों को अपने साथ लिया और जहाज़ पर चढ़ गयी। जब वे कुछ दूर समुद्र में चल दिये तो मल्लाह सो गये। उसने अपनी भानजी मारज़ीला को समुद्र में फेंक दिया। और जब वह डूबने लगी तो एक बहुत सुन्दर परी आयी और उसको उठा कर ले गयी।

जब ट्रोकोला राजा चियुन्ज़ो के पास आयी तो सियोमो ने अपनी बहिन को क्योंकि कुछ समय से देखा नहीं था पूचा को ही अपनी बहिन मारज़ीला समझा। तुरन्त ही वह उसको राजा के सामने ले

गया। पर जैसे ही उसने अपने होठ खोले कि उसके मुँह से मेंढक गिरने लगे।

और जब राजा ने उसे और पास से देखा तो उसने महसूस किया कि यात्रा की वजह से उसकी साँस भारी हो रही थी। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे जैसे टब में बनते हैं। फिर उसने नीचे की तरफ देखा तो उसने देखा कि उसके पैरों के नीचे तो काँटों वाले पौधों का मैदान है।

यह सब देख कर उसको अच्छा नहीं लगा और उसने दोनों को वहाँ से भगा दिया और सियोमो को डाँट कर दरबार की बतखों की देखभाल करने के लिये भगा दिया।

सियोमो की समझ में ही नहीं आया कि यह क्या हो गया और कैसे हो गया। उसने बतखों को समुद्र के किनारे की तरफ भगा दिया और वह खुद एक झोंपड़ी में आराम करने के लिये बैठ गया। वहाँ पहुँच कर वह शाम तक रोता रहा जब तक उसके घर लौटने का समय हुआ।

पर जब वे बतखें समुद्र के किनारे घूम रही थीं तब मारज़ीला पानी में से निकल आयी और उनको मिठाई खिलाने लगी। उनको गुलाबजल पिलाने लगी। कुछ दिनों में ही वे बढ़ कर भेड़ जैसी हो गयीं और इतनी मोटी हो गयीं कि उसकी वजह से उनकी आँखें छोटी हो गयी जिससे वे खुद भी नहीं देख पाती थीं।

शाम को जब वे राजा के महल की खिड़की के नीचे आयीं तो उन्होंने गाना शुरू किया —

सूरज और चाँद चमकीले और साफ हैं
पर जो हमको खिलाती है वह इनसे भी ज़्यादा सुन्दर है

राजा उस बतख का गाना रोज शाम को सुनता तो एक दिन उसने सियोमो को बुलाया और उससे पूछा कि वह उसकी बतखों को कहाँ कैसे और कौन सी घास खिलाता है।

सियोमो बोला — "मैं तो उनको सिवाय ताजा घास के और कुछ नहीं खिलाता।"

पर राजा उसके इस जवाब से सन्तुष्ट नहीं था सो उसने अपने एक भरोसे का नौकर सियोमो के पीछे पीछे भेज दिया कि वह यह देखे कि सियामों उसकी बतखों को कहाँ ले जाता है।

नौकर उसके पीछे पीछे चल दिया। उसने देखा कि सियोमो समुद्र के किनारे की तरफ गया फिर एक झोंपड़ी की तरफ चला गया। बतखों को उसने अकेला ही छोड़ दिया। वे अपने रास्ते चली गयीं। वे समुद्र के किनारे की तरफ आयीं कि मारज़ीला पानी में से निकली। मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि इतनी सुन्दर लड़की पानी में से बाहर निकली।

जब नौकर ने यह देखा तो वह तो अपने मालिक के पास भागा गया। आश्चर्य में डूबे डूबे ही उसने राजा को वह सब बता दिया जो उसने समुद्र के किनारे देखा था।

यह हाल सुन कर राजा की उत्सुकता बढ़ गयी और उसके दिल में इस बात की बहुत ज़ोर की इच्छा जाग गयी कि वह खुद उसको जा कर देखे।

सो अगले दिन मुर्गे ने जो सब चिड़ियों का नेता था सब लोगों को रात के खिलाफ हथियारबन्द होने के लिये कहा तो सियोमो रोज की तरह अपनी सब बतखों को ले कर अपनी रोज की जगह चल दिया। राजा उसके पीछे पीछे चला।

जब बतखें समुद्र के पास आयीं तो सियोमो तो झोंपड़ी में जा कर बैठ गया और बतखें अपने रास्ते चलती हुई उसी जगह आ पहुँचीं जहाँ वह लड़की पानी में से निकल कर आया करती थी।

राजा ने देखा कि मारज़ीला पानी में से निकली उसने एक थाली भर कर उनको मिठाई दी एक गिलास भर कर गुलाबजल पीने के लिये दिया। फिर वह एक पत्थर पर बैठ गयी और अपने बालों में कंघी करने लगी। लो उनमें से तो बहुत सारे मोती और गार्नेट निकल पड़े।

उसी समय उसके मुँह से बहुत सारे फूल झड़ पड़े। और उसके पैरों के नीचे वौयलेट और लिली के फूलों का कालीन बिछ गया। राजा तो यह दृश्य देख कर मुँह खोले बैठा रह गया।

उसने सियामो को बुलाया और मारज़ीला की तरफ इशारा कर के उससे पूछा कि क्या वह उस लड़की को जानता था। तब सियामो ने अपनी बहिन को पहचाना और उसको गले लगाने के लिये दौड़ा।

राजा के सामने ही उसने उसके साथ अपनी मौसी के किये गये बुरे बर्ताव का हाल सुना कि किस तरीके से उसने उसको पानी में रहने पर मजबूर किया।

इतना अच्छा रत्न पा कर राजा की खुशी की तो कोई सीमा ही नहीं थी। उसने उसके भाई से कहा कि वह सच में ही मारज़ीला की इतनी तारीफ कर रहा था। बल्कि वह जो सुन्दरता उसने उसकी बतायी थी उससे तो वह तीन गुनी ज़्यादा सुन्दर थी। अगर वह उसके राज्य का राजदंड स्वीकर कर ले तो वह उसे अपनी पत्नी के भी ऊपर का दर्जा देने के तैयार था।

मारज़ीला बोली — "अफसोस क्या ऐसा हो सकता है कि मैं अपके ताज की दासी हो कर आपकी सेवा कर सकूँ। पर क्या आप मेरे पैरों पर यह सोने की जंजीर नहीं देख रहे जिससे जादू टोना जानने वाली ने मुझे बन्दी बना रखा है।

जब मैं बहुत ज़्यादा ताजा हवा ले लेती हूँ और समुद्र के किनारे काफी घूम लेती हूँ वह मुझे लहरों में खींच लेती है। इस तरह से वह मुझे एक अमीर दासी बना कर रखती है।"

राजा ने पूछा — "तुम्हें इस जादू टोने वाली से बचाने का क्या रास्ता है।"

मारज़ीला बोली — “केवल एक ही रास्ता है कि मेरे पैरों में पड़ी यह सोने की जंजीर किसी बारीक रेती[69] से काट दी जाये।”

राजा बोला — “ठीक है। कल देखना। मैं जरूरत का सब सामान ले कर आऊँगा और तुम्हें अपने साथ घर ले जाऊँगा जहाँ तुम मेरी आँख के तारे की तरह से दिल के टुकड़े की तरह से और मेरी जान की तरह से रहोगी।”

फिर प्यार से हाथ मिला कर वह पानी में चली गयी और वह आग में चला गया। उसकी आग तो इतनी भयानक थी कि उसको तो उसमें एक पल को भी चैन नहीं था।

सारा दिन उसका तड़पते तड़पते बीता और जब रात सितारों के साथ नाचने के लिये आयी तो उसकी आँख तो एक पल को भी नहीं लगी। वह तो बस मारज़ीला की सुन्दरता में ही डूबा रहा। वह उसके बालों की सुन्दरता को मुँह के जादू को और पैरों के आश्चर्य को याद करता रहा। उसने उसकी शान को सोने की कसौटी पर कसा तो वह उसे **24** कैरट का सोना लगा।

पर उसने रात के जाने का और सूरज के निकलने का भी इन्तजार नहीं किया बल्कि वह सूरज के रथ को देर से आने के लिये कोसता रहा क्योंकि उसको तो सोने की खान जिससे मोती निकलते थे और एक सीपी जिसमें से फूल निकलते थे उसको घर लाना था।

---

[69] Translated for the “File”. See its picture above. NormallY they are used to cut metals.

पर जब वह समुद्र पर था और उसके बारे में सोच रहा था कि तभी सूरज के आने का सन्देश देने वाले आये और सूरज की किरनों के आने का रास्ता साफ कर के चले गये।

राजा कपड़े पहन कर तैयार हुआ और सियामो को साथ ले कर समुद्र के किनारे की तरफ चला जहाँ उसको मारज़ीला मिल गयी। राजा ने अपने हाथ से रेती से अपनी सबसे प्यारी चीज़ के बन्धन काटे। इस सारे समय वह तसल्ली रखे रहा।

फिर उसने उसको अपने घोड़े पर अपने पीछे बिठाया हालाँकि वह उसकी दिल की जीन पर तो पहले से ही बैठी हुई थी और उसको महल ले चला। महल पहुँच कर सब सुन्दर सुन्दर स्त्रियों को इकट्ठा किया गया जिन्होंने मारज़ीला का आदर के साथ रानी की तरह से स्वागत किया।

राजा ने उससे शादी कर ली और बहुत जश्न मनाये गये। ट्रोकोला को उसने एक टब में बन्द करवा दिया और उसको उसकी इस गन्दी हरकत के लिये सजा दी।

फिर उसने लुसैटा को बुलवाया और उसको इतना कुछ दिया जिससे वे एक राजकुमार की तरह से रह सकें। पूचा को राज्य निकाला दे दिया गया क्योंकि उसने अपनी केक का एक छोटा सा टुकड़ा भी बुढ़िया को नहीं दिया था और अब वह रोटी के लिये भी बराबर तरसती रही क्योंकि भगवान की शायद यही इच्छा थी।

जो किसी के ऊपर दया नहीं करता उसको भी दया नहीं मिलती

24 4–8 सात फाख्ताऐं[70]

जो खुशी बॉटता है उसको भी खुशी मिलती है। दयालुता दोस्ती को बॉधती है और प्यार को पकड़ कर रखती है। जो बोता नहीं है वह फसल भी नहीं काटता। सियूला[71] ने इस बात की सच्चाई का सबूत चखा दिया है अब मैं आपको मिठाई देने जा रही हूँ। अगर आप यह बात ध्यान में रखें कि कैटो[72] क्या कहता है "सबके सामने मत बोलो"।[73] इसलिये आप सब मेरे ऊपर दया कर के कुछ देर मुझे सुनें। और भगवान करे कि हम लोग खुश खुश आनन्ददायक बातें सुनते रहें।

एक बार अरज़ानो[74] शहर में एक बहुत भली सी स्त्री रहती थी जो हर साल एक बेटे को जन्म देती थी। आखिर उसने सात बेटों को जन्म दे दिया। वे किसी पैन के पाइप जैसे लगते थे जैसे सात रीड[75] हों एक दूसरे से बड़ा।

जब उन्होंने अपने दॉत पहली बार बदले तो उन्होंने अपनी मॉ जैनैटैला[76] से कहा — "अगर इतने बेटों के बाद इस बार तुमने एक बेटी नहीं पैदा की तो हम घर से बाहर चले जायेंगे और ब्लैकबर्ड के बेटों की तरह से इधर उधर घूमते फिरेंगे।"

जब मॉ ने यह दुखी बात सुनी तो उसने भगवान से प्रार्थना की कि वह अपने सात रत्नों को गॅवाने को बिल्कुल तैयार नहीं थी।

---

[70] The Seven Doves. (Tale No 24) Day 4, Tale No 8
[71] Ciulla – name of a person
[72] Cato
[73] Translated for the saying "Speak little at table"
[74] Arzano
[75] A reed is a thin strip of material that vibrates to produce a sound on a musical instrument
[76] Jannetella – name of the mother of the seven boys

जब बच्चे के जन्म का समय आया बेटों ने जैनैटैला से कहा — "हम लोग पास की पहाड़ी की चोटी पर जा रहे हैं। अगर तुम्हारे बेटा हो तो एक कलम और कलमदान खिड़की के ऊपर टॉग देना। अगर तुम्हारे बेटी हो तो तुम एक चम्मच और अटेरन खिड़की के ऊपर टॉग देना।

क्योंकि अगर हम बेटी का इशारा देखेंगे तो हम घर वापस आ जायेंगे और तुम्हारी छाया में अपनी ज़िन्दगी गुजारेंगे पर अगर हमने बेटे का इशारा देखा तो हमें भूल जाना और समझ लेना कि हम वहॉ से चले गये हैं।"

बेटों के जाने के जल्दी ही बाद भगवान खुश हुए और जैनैटैला के घर में एक बहुत सुन्दर बेटी ने जन्म लिया। उसने तुरन्त ही नर्स से खिड़की पर बेटी वाला इशारा टॉगने के लिये कहा पर वह बेवकूफ भूल गयी और उसने बेटा होने का इशारा कर दिया – एक कलम और कलमदान खिड़की पर टॉग दिया।

जैसे ही भाइयों ने बेटा होने का इशारा देखा तो वे वहॉ से चले गये। चलते रहे चलते रहे। तीन साल के आखीर में वे एक जंगल में आ पहॅुचे जहॉ पेड़ पास में पड़े पत्थरों के ऊपर बहते पानी के संगीत पर तलवारों का नाच नाच रहे थे।

इसी जंगल में एक ओगरे भी रहता था। जब वह एक स्त्री के साथ था तो उस स्त्री ने उसे अन्धा कर दिया था तबसे जो कोई भी

लड़की उसकी पकड़ में आ जाती वह उसको मार देता था। जब ये नौजवान ओगरे के घर पहुँचे तो चलने और भूख से थके हुए थे। उन्होंने उससे खाने के लिये थोड़ी सा खाना माँगा।

ओगरे ने कहा कि अगर वे उसके घर में काम करेंगे तब वह उनको खाना देगा और उनको करना कुछ नहीं है सिवाय इसके कि उनको उस पर कड़ी निगाह रखनी है। यह काम हर बच्चा एक एक दिन बारी बाँध कर कर सकता है। बच्चों ने सोचा कि उनको उसमें माता पिता मिल गये सो वे राजी हो गये और ओगरे की सेवा में लग गये।

ओगरे ने उनके नाम जबानी याद कर लिये और एक बार उसने जियानग्रैज़ियो को पुकारा दूसरी बार सैकीटौलो को पुकारा फिर पास्केल को पुकारा फिर नूकियो पोन पैज़ीलो और कारकावेचिया को पुकारा।[77] उसने उनको अपने घर के निचले कमरे में रख दिया और ज़िन्दा रहने के लिये काफी कुछ दिया।

इस बीच उनकी बहिन बड़ी होती रही। जब उसको पता चला कि एक नर्स की बेवकूफी से उसके भाई घर छोड़ कर चले गये और तबसे उनकी कोई खबर नहीं मिली है। यह बात उसके दिमाग में घर कर गयी और वह उनको ढूँढने के लिये निकल पड़ी। इस बात के लिये उसको अपनी माँ की बहुत विनती करनी पड़ी।

---

[77] Giangrazio, Cecchitiello, Pascale, Nuccio, Pone, Pezillo and Carcavecchia – names of the seven brothers

बाद में मॉ को उसको जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी। उसने उसको एक यात्री की तरह से तैयार कर दिया। लड़की चल पड़ी। चलती रही चलती रही। रास्ते में हर एक से अपने भाइयों के बारे में पूछती रही।

आखिर में एक सराय में जा कर उसको कुछ पता चला। वहॉ उसने रास्ता पूछा और जंगल की तरफ चल दी। एक सुबह जब सूरज अपनी किरनों की कलम से रात की स्याही से आसमान पर कुछ तस्वीरें खींच रहा था तब वह ओगरे के घर पहुॅच गयी।

उसके भाइयों ने उसको देखते ही पहचान लिया। उन्होंने उसका बड़ी खुशी से स्वागत किया। उसने इस बात के लिये बहुत अफसोस प्रगट किया कि कलम दवात खिड़की पर लटका कर नर्स ने बहुत बड़ी गलती की।

बहुत देर तक बहिन को सहलाने के बाद उन्होंने उससे कहा कि वह वहॉ चुपचाप रहे ताकि ओगरे यह बात न जानने पाये कि वह वहॉ थी। साथ में उन्होंने उससे यह भी कहा कि खाने से पहले वह उस बिल्ली को एक कौर चखा दे जो उसी कमरे में थी। नहीं तो वह बिल्ली उसको कुछ नुकसान पहुॅचा सकती थी।

सिओनाा[78] ने उनकी यह सलाह मान ली और अब वह जो कुछ भी खाती एक अच्छे साथी की तरह से उसमें से एक कौर पहले बिल्ली को खिला देती।

---

[78] Cionna was the name of the sister of those seven brothers

यह टुकड़ा तेरे लिये यह टुकड़ा मेरे लिये यह राजा की बेटी के लिये। आखिरी कौर बिल्ली का होता।

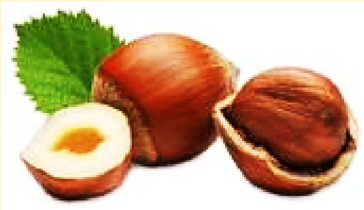

दिन निकलने लगे। एक दिन भाई लोग ओगरे के लिये शिकार करने के लिये गये। सिओना के लिये एक छोटी टोकरी में काबुली चना उबालने के लिये रख गये। जब वह उन्हें साफ कर रही थी बदकिस्मती से उसको उनमें एक हैज़ल नट मिल गया।

उस पत्थर ने तो वहाँ उसकी शान्ति से रहने के शीशे को तोड़ कर चूर चूर कर दिया। उसने उस नट को बिल्ली को बिना दिये हुए ही खा लिया। यह देख कर बिल्ली गुस्से से भर कर मेज पर कूदी और उस पर जल रही मोमबत्ती को बुझा दिया।

सिओना ने जब यह देखा ते उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। अपने भाइयों की बात न मान कर वह कमरे में से चली गयी और ओगरे के कमरे में पहुँच कर उससे आग माँगी।

ओगरे ने एक लड़की की आवाज सुनी तो बोला — "आओ मैडम आओ। ज़रा रुको। तुम जो ढूँढने आयी हो वह तुम्हें मिल गया है।" कह कर उसने एक जिनोआ पत्थर[79] उठाया उसको तेल में डुबोया और अपने दाँतों[80] पर मलने लगा।

सिओना ने देखा कि गाड़ी तो गलत रास्ते पर जा रही थी।

[79] Genoa stone. Genoa is a place in Italy.
[80] Translated for the word "Tusks"

उसने तुरन्त ही एक जलती हुई लकड़ी उठायी और वहाँ से भाग निकली। अपने कमरे में पहुँच कर उसने दरवाजे का ताला लगा लिया। उसके पीछे लोहे के डंडे भी लगा दिये और मेजें कुर्सियाँ पलंग जो भी कुछ उसने अपने कमरे में देखा वह सब कुछ उसने दरवाजे के पीछे रख दिया।

जैसे ही ओगरे ने अपने दाँत तेज़ कर लिये वह भाइयों के कमरे की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि दरवाजा तो बन्द है तो वह उसको खोलने के लिये उसमें ठोकर मारने लगा।

सातों भाइयों ने जब यह शोर सुना तो वह तुरन्त ही घर वापस आये। उन्होंने ओगरे के झूठे इलजाम की बात सुनी कि उन्होंने अपने कमरे में उसकी किसी स्त्री दुश्मन को छिपा रखा है।

तो जियानग्रैज़ियो ने जो भाइयों में सबसे बड़ा था और सबसे ज़्यादा समझदार था देखा कि बात तो हाथ से निकली जा रही थी तो बोला — "ओगरे। हमें इस बात का कुछ पता नहीं है। पर हाँ यह हो सकता है कि जब हम शिकार के लिये गये थे तब यह नीच स्त्री इत्तफाक से हमारे कमरे में आ गयी हो।

पर क्योंकि अब उसने अपने को कमरे में बन्द कर रखा है तो आप मेरे साथ आइये जहाँ से हम उसे पकड़ सकेंगे और वह अपनी रक्षा नहीं कर पायेगी।"

तब वे ओगरे को हाथ पकड़ कर एक तरफ को ले गये जहाँ एक बहुत ही गहरा गड्ढा था। वहाँ पहुँच कर उन्होंने उसको उस

गड्ढे में धक्का दे दिया जिससे वह सिर के बल उसकी तली में जा गिरा। फिर वहीं से एक फावड़ा उठाया और उसको मिट्टी से ढक दिया।

तब उन्होंने अपनी बहिन को दरवाजा खोलने के लिये कहा और उसे उसकी गलती के लिये बहुत डॉटा। फिर उसे बताया कि उसने अपने आपको किस खतरे में डाल लिया था। आगे से उसे सावधान रहने के लिये कहा। उन्होंने उससे यह भी कहा कि वह जहॉ ओगरे को दफ़नाया गया था वहॉ की जमीन पर उगी हुई घास न तोड़े वरना वे सात फाख्ताओं में बदल जायेंगे।

सिओना बोली — "भगवान करे हमारे ऊपर ऐसी बदनसीबी कभी न आये।"

फिर उन्होंने ओगरे का सारा सामान और घर सब कब्जे में कर लिया और ख़ुशी से रहने लगे। वे इस इन्तजार में थे कि जाड़ा निकल जाये धरती पर हरी हरी घास में सुन्दर फूल निकल आयें तब वे लोग अपने घर जायें।

ठंड दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी सो एक दिन वे सब भाई लोग जलने वाली लकड़ी लेने के लिये पहाड़ के ऊपर गये हुए थे ताकि वे ठंड में गर्म रह सकें।

कि एक गरीब यात्री ओगरे के जंगल में आया और पास में एक पाइन के पेड़ पर बैठे बन्दर की तरफ देख कर मुँह बनाने लगा। तो बन्दर ने भी पेड़ से तोड़ कर एक फ़रऐपिल उसके पेट पर फेंक

दिया। वह फल इतनी ज़ोर से उसके ऊपर लगा कि वह उसकी चोट से चीख पड़ा।

सिओना ने यह आवाज सुनी तो वह बाहर आयी और उस आदमी को देख कर उसको ऊपर दया आ गयी। तुरन्त ही उसने पास लगे हुए रोज़मैरी के पेड़ की एक टहनी तोड़ी और उसे रोटी और नमक के साथ पुल्टिस बना कर उसके ऊपर लगा दी। फिर उसने उसको कुछ खिलाया और वापस भेज दिया। अब यह रोज़मैरी का पेड़ ओगरे की कब्र पर लगा हुआ था।

जब सिओना कपड़ा बिछा रही थी और अपने भाइयों का इन्तजार कर रही थी लो उसने क्या देखा कि उसके भाइयों की जगह सात फाख्ताऐं उड़ी चली आ रही हैं।

उन्होंने आते ही कहा — “अच्छा होता अगर तुम्हारे हाथ कट गये होते। क्योंकि ये ही हमारे ऊपर यह बदकिस्मती ले कर आये हैं। अच्छा होता अगर तुम इन हाथों से रोज़मैरी न तोड़तीं तो हम पर यह मुसीबत न आती। क्या तुमने बिल्ली का दिमाग खाया है जो तुमने हमारी सलाह पर ध्यान नहीं दिया।

हमें देखो। अब हम चिड़िया बन गये हैं काइट चिड़िया बाज़ चील आदि के शिकार बन गये हैं। तुमने हमें जे उल्लू कठफोड़वा बुलबुल मुर्गी मुर्गे आदि का साथी बना दिया है। तुमने तो यह एक बड़ा खास काम किया है। अब हम अपने देश जा सकते हैं जहाँ हमारे पकड़ने के लिये जाल बिछे होंगे।

तुमने एक यात्री को ठीक करने के लिये हम सात भाइयों के सिर तोड़ दिये हैं। अब हमारी इस बदकिस्मती को दूर करने की कोई दवा भी नहीं है। जब तक कि तुम "समय की माँ"[81] को नहीं पा लेतीं। वही तुम्हें बता सकती है कि हमारी परेशानी कैसे दूर होगी।"

सिओना तो अपने इस अपराध पर एक पंख नोची गयी चिड़िया की तरह से खड़ी रह गयी। उसने अपने भाइयों से माफी माँगी और कहा कि वह सारी दुनियाँ में जायेगी जब तक वह समय की माँ को नहीं ढूँढ लेती।

तब उसने उनसे विनती की कि वे घर के अन्दर ही रहें जब तक कि वह वापस न आ जाये कहीं ऐसा न हो कि कोई और मुसीबत गले पड़ जाये।

वह वहाँ से अपनी यात्रा पर निकल पड़ी। बिना थके वह चलती रही चलती रही। हालाँकि वह पैदल जा रही थी पर अपने भाइयों को वापस लाने की उसकी इच्छा उसे एक घंटे में तीन मील चलने की प्रेरणा देती रही।

चलते चलते आखिर वह समुद्र के किनारे आ गयी जहाँ तेज़ हवा पानी को चट्टानों से टकरा रही थी। यहाँ उसने एक बहुत बड़ी व्हेल मछली देखी। मछली उससे बोली — "मेरी प्यारी बच्ची तुम क्या ढूँढ रही हो।"

---

[81] Translated for the words "Mother of Time"

वह बोली — "मैं समय की माँ का घर ढूँढ रही हूँ।"

मछली बोली — "सुनो उसके देखने के लिये तुमको यह करना चाहिये कि इस किनारे के साथ साथ सीधी चली जाओ और जब तुम पहली नदी पर आओ तो उसके स्रोत तक चलती चली जाना। वहाँ तुम्हें कोई मिलेगा वह तुम्हें बतायेगा कि तुम्हें क्या करना है।

पर तुम मेरे ऊपर एक मेहरबानी कर दो। जब तुम्हें वह बुढ़िया मिल जाये तो उससे विनती करना कि वह मुझे कोई ऐसी तरकीब बताये जिससे मैं आसानी से तैर सकूँ। मैं किसी चट्टान से न टकराऊँ जैसे कि मैं अक्सर टकरा जाती हूँ और फिर रेत पर जा कर गिर जाती हूँ।"

सिओना बोली — "मेरा विश्वास करो मैं जरूर पूछूँगी।"

फिर उसने उसको रास्ता बताने के लिये धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दी। काफी देर चलने के बाद वह नदी के पास आ पहुँची जो अपने खजाने से चाँदी समुद्र में जमा कर रही थी। वहाँ से वह उसके स्रोत की तरफ चल दी।

वहाँ वह एक खुले से देश में आ पहुँची जहाँ घास के मैदान आसमान से मिल रहे थे। घास के मैदानों में फूल खिल रहे थे। वहाँ उसको एक चूहा मिल गया तो उसने लड़की से पूछा — "ओ प्यारी लड़की तुम इस तरह से अकेली कहाँ जा रही हो?"

सिओना बोली — "मैं समय की माँ को ढूँढ रही हूँ।"

चूहा बोला — "उसके लिये तो तुम्हें बहुत दूर जाना पड़ेगा। पर तुम अपना दिल छोटा मत करो। हर चीज़ का अन्त होता है। तुम पहाड़ों की तरफ चली जाओ तो वहाँ तुमको इसके बारे में और खबर मिल जायेगी।

पर मेरे ऊपर एक मेहरबानी करना। जब तुम उस बुढ़िया के घर पहुँचो तो उससे पूछना कि हम बिल्लियों से कैसे बचें। फिर जो तुम कहोगी मैं वही करूँगा।"

सिओना ने उसको रास्ता बताने के लिये धन्यवाद दिया उसकी मुश्किल हल करने का वायदा किया और पहाड़ों की तरफ चल दी। पहाड़ हालाँकि पास ही दिखायी दे रहे थे पर ऐसा लग रहा था कि वह वहाँ तक कभी नहीं पहुँच पायेगी।

पर जब वह वहाँ तक आयी तो उसको बहुत सारी चींटियाँ मिलीं जो बहुत सारे दाने उठा कर ले जा रही थीं। उनमें से एक चींटी ने घूम कर देखा और बोली — "तू कौन है और कहाँ जा रही है?"

सिओना तो हर एक से बहुत प्यार से बोलती थी बोली — "मैं एक दुखी लड़की हूँ और अपने काम के लिये समय की माँ को ढूँढ रही हूँ।"

चींटी बोली — "यहाँ से और आगे चली जाओ और जहाँ ये पहाड़ खत्म होंगे और एक मैदान शुरू होगा वहाँ तुम्हें उसके बारे में और खबर मिलेगी। लेकिन मेरे ऊपर एक मेहरबानी करना। उस

बुढ़िया से यह पूछना कि हम कुछ समय तक और ज़िन्दा कैसे रह सकते हैं। क्योंकि मुझे तो इस दुनियाँ मे यह एक बहुत बड़ी बेवकूफी लगती है कि इतनी छोटी सी ज़िन्दगी के लिये हमें इतना सारा खाना इकट्ठा कर के रखना पड़ता है।

और यह ज़िन्दगी एक बेचने वाले की मोमबत्ती की तरह से जब उसके सामान की सबसे ऊँची बोली लगने वाली होती है तभी बुझ जाती है।"

सिओना ने उसको भी रास्ता बताने के लिये धन्यवाद दिया और उसके सवाल का जवाब लाने का वायदा किया और आगे अपने रास्ते पर चल दी।

उसने पहाड़ पार किये और मैदान में आयी। थोड़ा आगे चलने पर वह एक बहुत बड़े ओक के पेड़ के पास आयी जो पुराने समय की याद दिला रहा था। उसने उसके फल खाये जो उसे बहुत मीठे लगे। उसके कुछ फल खा कर ही उसका पेट भर गया।

तब अपनी छाल को अपने होठ बना कर और अपने गूदे को अपनी जबान बना कर वह सिओना से बोला — "तुम इतनी दुखी हो कर कहाँ जा रही हो ओ लड़की। आओ मेरी छाया में बैठ कर थोड़ा सुस्ता लो।"

सिओना ने उसे बहुत धन्यवाद दिया पर सुस्ताने के लिये यह कह कर माफी माँगी कि अभी उसे समय की माँ को ढूँढने जाना है।

ओक ने जब यह सुना तो उसे बताया कि वह अब उसके घर से ज़्यादा दूर नहीं है। उसने कहा — “पर इससे पहले कि तुम अपने अगले दिन की यात्रा शुरू करो मैं तुम्हें बता दूँ कि तुमको उस पहाड़ पर एक घर दिखायी देगा वह बुढ़िया जिसे तुम ढूँढ रही हो तुम्हें उसी में मिल जायेगी।

अगर तुम्हारे अन्दर उतनी ही दयालुता है जितनी कि तुम सुन्दर हो तो मेरा एक काम करना। जब तुम बुढ़िया से मिलो तो उससे पूछना कि मैं अपनी खोयी हुई इज़्ज़त वापस लेने के लिये क्या कर सकता हूँ। क्योंकि केवल बड़े आदमियों का खाना बनने की बजाय अब तो मैं सूअरों का खाना ही रह गया हूँ।”

सिओना बोली — “तुम चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारी सेवा जरूर करूँगी।” इतना कह कर वह वहाँ से भी चल दी। चलते चलते वह एक पहाड़ के नीचे आ गयी जिसके सिर आसमान के बादलों में अड़ा जा रहा था।

वहाँ उसको एक बूढ़ा मिला जो बहुत थका हुआ और पतला दुबला सा लग रहा था। वह भूसे पर लेटा हुआ था। जैसे ही उसने सिओना को देखा तो वह उसको तुरन्त ही पहचान गया। यह तो वही लड़की है जिसने उसकी चोट ठीक की थी।

जब उस बूढ़े को पता चला कि वह लड़की क्या खोज रही थी तो उसने उसे बताया कि वह खुद उसके पास धरती के उस टुकड़े का किराया ले कर जा रहा था जो उसने बोया था। समय तो बहुत

ही अत्याचारी था जिसने दुनियाँ की हर चीज़ जबरदस्ती हड़प ली थी। वह उसके लिये कहता था कि यह सब वह अपनी तारीफ के बदले में पाता था खास तौर से उतने बूढ़े लोगों से जितना कि वह तारीफ के काबिल था।

बूढ़े ने आगे बताया कि क्योंकि उसने उसके ऊपर कृपा की थी इसलिये वह उसको सौ गुना कर के वापस करना चाहता है। वह उसे पहाड़ पर आने की अच्छी खबर देगा।

उसे बहुत अफसोस है कि वह उसके साथ वहाँ जा नहीं सकता। क्योंकि उसकी बूढ़ी उम्र को यह शाप था कि वह नीचे ही जायेगा ऊपर नहीं इसलिये वह वहीं पहाड़ की तलहटी में रहने के लिये मजबूर है।

यहाँ से वह समय के क्लर्कों को मजदूरों का लोगों के दुखों का ज़िन्दगी की कमजोरियों का हाल भेजेगा और प्रकृति का कर्जा चुकायेगा।

बूढ़ा आगे बोला — "इसलिये ओ अच्छी बेटी अब तू मेरी बात सुन। तुझको पता होना चाहिये कि इस पहाड़ के ऊपर एक टूटा फूटा घर है जो बहुत समय पहले बनाया गया था। इतना पहले कि उस समय को सोचा भी नहीं जा सकता।

अब तो इसकी दीवारों में दरारें पड़ गयी हैं। नीवें ढीली पड़ने लगी हैं। दरवाजों में दीमक लग गयी है और फर्नीचर भी सब टूट फूट गया है। थोड़े में कहो तो अब सब कुछ नष्ट सा हो गया है।

एक तरफ को टूटे फूटे खम्भे हैं। दूसरी तरफ टूटी हुई मूर्तियाँ हैं। कोई भी चीज़ अब अच्छी हालत में नहीं है सिवाय उस सरकारी निशान के जो दरवाजे पर लगा है। उस निशान के चार हिस्से हैं जिनमें से एक में तुझे एक साँप दिखायी देगा जो अपनी पूँछ काट रहा है एक में बारहसिंगा एक में रैवन और एक में फ़ीनिक्स चिड़िया।

जब तू अन्दर घुसेगी तो वहाँ तुझे फर्श पर कुछ काटने वाले औजार जैसे आरी हँसिये आदि पड़े मिलेंगे। और राख से भरे सैंकड़ों बर्तन जिन पर नाम लिखे होंगे। वहाँ तुझे कोरिन्थ, सैगन्टम, कार्थेज, ट्रौय[82] और हजारों दूसरे शहरों के नाम पढ़ने को मिलेंगे जिनकी राख समय ने ट्रौफी की तरह सँभाल कर रखी हुई है।

जब तू घर के पास आयेगी तो तब तक के लिये अपने आपको छिपा कर रखना जब तक के लिये समय बाहर जाता है। और जैसे ही वह बाहर चला जाये तब तू उस घर में घुस जाना। वहाँ जा कर तुझे एक बुढ़िया मिलेगी जिसकी दाढ़ी फर्श को छू रही होगी और उसका एक कूबड़ होगा जो आसमान को छू रहा होगा।

उसके बाल घोड़े की पूँछ जैसे होंगे और उसकी एड़ी को ढके होंगे। उसका चेहरा एक सिकुड़े हुए कौलर की तरह होगा जिसकी सिकुड़नों में उम्र की वजह से कलफ़ लग गया होगा।

---

[82] Corinth, Saguntum, Carthage, Troy – all names of cities of Italy

वह बुढ़िया एक घड़ी पर बैठी है जो एक दीवार पर लगी है। उसकी भौंहें इतनी बड़ी हैं कि वे उसकी आँखों को भी ढक लेतीं हैं। इसका मतलब यह है कि वह तुझे देख नहीं पायेगी।

जैसे ही तू अन्दर घुसेगी तो तुरन्त ही घड़ी के ऊपर रखे हुए बोझों को हटा देना तब उस बुढ़िया को पुकारना और उससे विनती करना कि वह तेरे सवालों के जवाब दे दे। यह सुन कर वह तुरन्त ही अपने बेटे को बुलायेगी और तुझे खाने के लिये कहेगी।

पर क्योंकि वह घड़ी जिस पर वह बुढ़िया बैठी है तूने उसके बोझ हटा दिये हैं उसका बेटा हिल भी नहीं सकता सो उसको तुझसे कहना पड़ेगा कि तू अपना सवाल पूछ।

पर वह कोई भी कसम खाये तू उस पर भरोसा मत करना जब तक कि वह अपने बेटे के पंखों की कसम न खा ले। जब वह ऐसा कर ले तब तू सुरक्षित है।"

इतना कहने के बाद वह बूढ़ा गिर गया और टूट कर बिखर गया जैसे कि कोई लाश तहखाने में से दिन की रोशनी में ला कर रख दी गयी हो। सिओना ने राख उठायी और उसे एक पौंड ऑसुओं में मिला कर यह प्रार्थना कर के वहीं गाड़ दिया कि भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे।

फिर वह पहाड़ पर चढ़ती चली गयी यहाँ तक कि वह बहुत बदहवास हो गयी। वह घर के पास बैठी समय के बाहर आने का इन्तजार करती रही। समय एक बहुत ही बूढ़ा आदमी था जिसकी

बहुत लम्बी दाढ़ी थी। उसने एक बहुत ही पुराना शाल ओढ़ रखा था जिस पर बहुत सारे छोटे छोटे कागज के टुकड़े लगे हुए थे। उन पर बहुत सारे लोगों के नाम लिखे हुए थे।

उसके बहुत बड़े पंख थे और वह इतनी तेज़ भागता था कि वह एक पल में ही ऑखों से ओझल हो जाता था।

जब सिओना उसकी मॉ के घर में घुसी तो पहले तो वह काली बुढ़िया को देखते ही डर गयी। पर हिम्मत कर के उसने घड़ी के बोझ हटा लिये। उसने बुढ़िया को बताया कि वह उससे क्या चाहती थी।

सुनते ही बुढ़िया ने अपने बेटे को चिल्ला कर बुलाया। पर सिओना ने उससे कहा — "तुम चाहे कितना भी दीवार से सिर पीट लो और कितनी भी देर तक पीट लो पर तुम तब तक अपने बेटे को नहीं देख पाओगी जब तक ये बोझे मेरे हाथ में हैं।"

यह सुन कर बुढ़िया ने देखा कि वह तो छली गयी। तो उसने सिओना से कहा — "उन बोझों को वापस रख दो। तुम मेरे बेटे का रास्ता मत रोको क्योंकि किसी ज़िन्दा आदमी ने अभी तक ऐसा नहीं किया।

उन्हें छोड़ दो भगवान तुम्हारी रक्षा करे। मैं अपने बेटे के उस तेज़ाब[83] की कसम खाती हूॅ जिससे वह हर चीज़ को खुरचता रहता है कि मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगी।"

---

[83] Translated for the word "Acid"

सिओना बोली — "इस तरह से तुम समय बरबाद कर रही हो। अगर तुम चाहती हो कि मैं ये बोझे छोड़ दूँ तो तुम्हें इससे कुछ ज़्यादा अच्छा कहना पड़ेगा।"

"मैं उसके उन दाँतों की कसम खाती हूँ जो हमेशा ही धरती की चीज़ों को काटते रहते हैं।"

सिओना बोली — "यह सब कुछ नहीं क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम मुझे धोखा दे रही हो।"

हार कर बुढ़िया ने कहा — "ठीक है मैं उसके उन पंखों की कसम खाती हूँ जो सब जगह उड़ते हैं कि मैं तुम्हें उससे भी ज़्यादा खुशी दूँगी जो तुम सोच भी नहीं सकतीं।"

यह सुन कर सिओना ने वे बोझ छोड़ दिये। बुढ़िया के हाथ चूमे जिनमें से सीलन की और कोई खराब सी बू आ रही थी।

लड़की का यह अच्छा व्यवहार देख कर बुढ़िया ने कहा — "तुम इस दरवाजे के पीछे छिप जाओ। जब समय आयेगा तब मैं उससे कहूँगी कि वह तुम्हें बताये जो तुम जानना चाहती हो। और जैसे ही वह बाहर चला जाता है – क्योंकि वह एक जगह पर शान्ति से नहीं बैठता, तुम जा सकती हो।

पर तुम न तो उसको अपने आपको दिखाना और न सुनाना क्योंकि वह इतना खराब है कि वह तो अपने बच्चों को भी नहीं छोड़ता। और जब सब फेल हो जाता है तब अपने आपको खा जाता है और एक नया समय जन्म लेता है।"

सिओना ने वैसा ही किया जैसा बुढ़िया ने उससे करने को कहा था। लो समय तो जल्दी ही उड़ता हुआ और रास्ते में जो कुछ मिला उसे कुतरते हुए वहाँ वापस आ गया।

वह फिर वापस जाने को था कि उसकी माँ ने सिओना ने जो कुछ भी उससे कहा था वह सब समय से कह दिया और उसको अपने दूध की कसम दी कि वह उन सब सवालों के जवाब सही सही दे दे।

हजारों विनती करने के बाद उसके बेटे ने कहा — "पेड़ को यह कहना कि आदमी लोग उसको कभी भी उतनी ऊँची जगह नहीं दे सकते जब तक कि उसकी जड़ में खजाना दबा हुआ है।

चूहे को बोलना कि वह बिल्ली से कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकते जब तक कि वे उसके पैर में घंटी न बाँधें जिससे यह पता चल जाये कि वह आ रही है।

चींटियों से कहना कि वे **100** साल तक ज़िन्दा रहेंगी अगर वे उड़ने के बिना रह सकें – क्योंकि जब चींटी की मौत आती है तो उसके पर निकल आते हैं।

व्हेल को बोलना कि वह हमेशा खुश रहे और समुद्री चूहे से दोस्ती कर ले जो उसको रास्ता दिखाता रहेगा और फिर वह अपने रास्ते से भटकेगी नहीं।

फाख्ताओं से कहना कि जब वह धन के खम्भे पर बैठेंगे तब वे अपनी पुरानी शक्ल पा जायेंगे।"

ऐसा कह कर समय वहाँ से उड़ कर अपनी जगह चला गया। और सिओना अपने छिपने की जगह से निकल कर बुढ़िया को धन्यवाद दे कर उससे विदा ले कर पहाड़से नीचे उतरी।

उसी समय सातों फाख्ता भी जो अपनी बहिन के पीछे ही लगे हुए थे वहाँ आ पहुँचे। इतनी दूर तक उड़ते उड़ते वे थक गये थे तो वे सुस्ताने के लिये एक मरे हुए बैल के सींग पर बैठ गये।

जैसे ही वे वहाँ बैठे तो वे तो सुन्दर नौजवान के रूप में आ गये जैसे कि वे पहले थे। पर जब वे इस जादू की तारीफ कर रहे थे तो उन्हें ध्यान आया जो समय ने कहा था। उन्होंने तुरन्त ही उस सींग की तरफ देखा जो बहुतायत की निशानी थी तो वह तो धन का खम्भा था जिसके बारे में समय ने कहा था।

उन सबने अपनी बहिन को खुशी से गले लगा लिया और उसी सड़क से वापस जाने लगे जिससे सिओना वहाँ तक आयी थी। जब वे ओक के पेड़ के पास आये तो सिओना ने ओक को वही जवाब दे दिया जो समय ने उससे कहा था। सो पेड़ ने उनसे विनती की कि वे उसकी जड़ में से खजाना निकाल लें। क्योंकि उसी की वजह से उसके फलों की इज़्ज़त कम हो गयी है।

सातों नौजवानों ने एक फावड़ा लिया और उसकी जड़ से खजाना निकाल लिया। उसको उन्होंने आठ हिस्सों में बाँटा और अपने और अपनी बहिन में बाँट लिया ताकि वे उसे आसानी से ले

जा सकें। पर यात्रा और बोझे की वजह से वे बहुत थक गये थे सो वे एक हैज के नीचे सो गये।

उसी समय कुछ डाकू उधर आ निकले और उनको वहॉ पैसों की गठरियों पर सिर रखे सोते हुए देख कर उनके हाथ पैर एक पेड़ से बॉध दिये और उनका पैसा ले कर उनको रोने के लिये छोड़ कर वहॉ से भाग गये। वह पैसा जैसे उन्होंने पाया था वैसे ही उनके हाथों से निकल गया था।

पर उनकी ज़िन्दगी। अब उसमें किसी मिठास की आशा नहीं थी। वह अब अपनी भूख से मरने के खतरे में थे या फिर किसी जंगली जानवर के भूखे होने की वजह से।

जब वे अपनी इस बदकिस्मती का दुख मना रहे थे कि चूहा उनके पास आया। जैसे ही उसने समय का जवाब सुना तो इस सेवा के बदले में उसने उस रस्सी को काट दिया जिससे वे बॅधे हुए थे। अब वे आजाद थे।

कुछ दूर जाने के बाद उनको चींटी मिली। उन्होंने उसको भी समय का जवाब बताया तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। सिओना ने पूछा ऐसा क्या हो गया जो वह इस तरह से दुखी हो गयी और पीली पड़ गयी।

तब सिओना ने उसको अपनी परेशानी और डाकुओं की अपने साथ खेली हुई चाल बतायी तो चींटी बोली — “कोई बात नहीं

शान्त हो जाओ। तुमने मेरी सहायता की है मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

तुम्हें पता होगा कि जब मैं अपना सामान जमीन के नीचे ले कर जा रही थी तब मैंने एक जगह देखी जहाँ ये लोग अपनी चीज़ें छिपाते हैं। इन लोगों ने एक पुरानी इमारत के नीचे कुछ गड्ढे बनाये हुए हैं जहाँ वे ये सब चीज़ें छिपा कर रखते है। इस समय वे लोग लोगों को लूटने के लिये गये हुए हैं तुम मेरे साथ चलो मैं तुम्हें वह जगह दिखाती हूँ। वहाँ से तुम अपना पैसा वापस ले सकती हो।"

सो वे सब कुछ टूटे फूटे मकानों की तरफ चल दिये। वहाँ पहुँच कर उसने सातों भाइयों को उस गड्ढे का मुँह दिखाया। इस पर जियानग्रेज़ियो जो सब भाइयों में बहादुर भी था उस गड्ढे में घुसा और अपना सारा माल ढूँढ लिया।

वहाँ से उन्होंने वह सामान लिया और वे फिर आगे समुद्र के किनारे की तरफ चल दिये। वहाँ पहुँच कर उनको व्हेल मिली। उन्होंने व्हेल को समय का बताया हुआ सन्देशा दिया।

जब वे सब उनकी यात्रा के बारे में बात कर रहे थे उन्होंने अचानक देखा कि डाकू उन्हीं की तरफ चले आ रहे थे। वे पूरी तरह से हथियारों से लैस थे। असल में वे इनके पीछे पीछे ही चले आ रहे थे।

डाकुओं को देख कर वे बोले — "ओह हम तो बिल्कुल गये। ये डाकू तो हथियारबन्द यहाँ तक चले आये हैं अब ये हमको बिल्कुल नहीं छोड़ेंगे।"

व्हेल बोली — "तुम सब डरो नहीं क्योंकि मैं तुम्हें इन सबसे बचा सकती हूँ और इस तरह से तुम्हारे ऐहसान का बदला भी चुका पाऊँगी। मैं तुम सबको एक सुरक्षित जगह ले जाऊँगी।"

सिओना और उसके भाई दुश्मन को आया देख कर और पानी गले तक आया देख कर व्हेल पर चढ़ गये। व्हेल चट्टानों से बचती बचाती उनको नैपिल्स[84] ले गयी। पर वहाँ वह समुद्र उथला होने की वजह से रुकने से डरती थी।

सो उसने पूछा — "तुम लोग कहाँ चाहते हो कि मैं तुम्हें कहाँ उतारूँ। अमाल्फ़ी के किनारे पर।"

जियान ग्रैज़ियो बोला — "देख लो अगर और कोई जगह न हो तो वहाँ उतार देना। मैं अपनी जगह पर उतरना नहीं चाहता क्योंकि मासा के लोग तो गुड डे भी नहीं कहते और सौरैन्टो में चोर बहुत हैं। विको में वे कहते हैं कि तुम अपने रास्ते जाओ। और कास्टल ए मेयर[85] में तो वे यह भी नहीं पूछते कि तुम कौन हो।"

[84] Naples is an historical port town of Italy situated on its South-West- coast.

[85] Massa, Sorrento, Vico, Castel a Mare

तब व्हेल उनको खुश करने के लिये पलटी और उनको साल्ट लेक ले जा कर छोड़ दिया। वहाँ से उन्होंने जो उनको पहली नाव मिली उन्होंने वही नाव ले ली।

वे लोग अपने देश तन्दुरुस्त ठीक और अमीर बन कर लौट आये थे। उनके माता पिता उन सबको देख कर बहुत खुश हुए। इस सबका इनाम तो सिओना को ही जाता है। यह कहावत सच्ची ही है —

सबका भला करो जो कर सकते हो और भूल जाओ[86]

[86] इस कहावत को हिन्दी में कहते है "नेकी कर कुँए में डाल"

25 4–9 रैवन[87]

सच में यह एक बहुत अच्छी कहावत है "खराब दृश्य से तो खराब फैसला अच्छा" पर इसका मानना बहुत मुश्किल है। कि कुछ लोगों का फैसला बिल्कुल ठीक होता है। दूसरी तरफ लोगों के मामलों के समुद्र में से मछली पकड़ने वाले शान्त समुद्र में से केंकड़े पकड़ने वालों से ज़्यादा हैं। और जो केवल वही चाहता है जो उसे चाहिये तो वह उसी पर निशाना लगाता है और उसकी सबसे चौड़ी जगह मारता है।

इसका फल यह होता है कि सब अँधेरे में मारते रहते हैं। सब टेढ़े ढंग से सोचते हैं सब बच्चों जैसे खेलते हैं। कोई कुछ फैसला कर लेता है तो कोई कुछ। और इस तरह से बिना किसी प्लनिंग के मारने के कारण लोग पछताते हैं। ऐसा ही मामला कुछ शेडी ग्रोव के राजा के साथ हुआ। अब आप सुनिये कि यह सब कैसे हुआ। अगर आप सब मुझे शालीनता से यह बताने के लिये बुलायें और फिर मेरी तरफ ध्यान दें।

कुछ ऐसा कहा जाता है कि एक बार शेडी ग्रोव के राजा मिलूकियो[88] ने अपने राज्य का और घर का काम भी ठीक से करना छोड़ दिया था क्योंकि वह शिकार का बहुत शौकीन था। वह इस रास्ते पर इतनी दूर आ गया था कि एक दिन यह रास्ता उसको एक झाड़ी की तरफ ले गया।

यह एक वर्गाकार जमीन का टुकड़ा था जिस पर इतने सारे पेड़ घने घने लगे थे कि वे सूरज के घोड़ों को भी अन्दर नहीं आने देते थे।

---

[87] The Raven. (Tale No 25) Day 4, Tale No 9

[88] Milluccio – name of the King of Shady Grove

वहॉ एक बहुत सुन्दर संगमरमर का पत्थर पड़ा हुआ था और उस पर एक रैवन[89] था जो मरा पड़ा था।

राजा ने जब उसका लाल खून संगमरमर के सफेद पत्थर पर पड़ा देखा तो उसने एक लम्बी आह भरी और बोला — "क्या मुझे एक ऐसी पत्नी नहीं मिल सकती जो इस पत्थर की तरह सफेद और लाल हो। उसके बाल और भोंहें ऐसी ही काली हों जैसे इस रैवन के पंख।"

यह कह कर वह अपने विचारों में डूबा हुआ वहॉ कुछ देर तक ऐसे खड़ा रहा जैसे वह खुद ही पत्थर का हो गया हो। वह खुद भी एक संगमरमर की मूर्ति बन गया था और दूसरे संगमरमर की मूर्ति को प्यार करने लगा था।

यह कल्पना उसके दिमाग में ऐसी बस गयी कि वह ऐसी लड़की को हर जगह ढूँढने लगा। चार सेकंड में ही वह कल्पना तिनके से बढ़ कर एक खम्भे जैसी हो गयी थी।

एक जंगली सेब से बढ़ कर एक काशीफल जितनी बड़ी हो गयी थी। एक छोटे से अंगारे से ले कर बड़ी भट्टी जैसी हो गयी थी। एक बौने से ले कर एक बड़े साइज़ के आदमी[90] जैसी हो गयी थी। अब उसके

[89] Raven is a crow-like bird. See its picture above.
[90] Translated for the word "Giant"

दिमाग में और कुछ था ही नहीं। यह तस्वीर उसको दिमाग में ऐसे बस गयी थी जैसे किसी ने पत्थर से पत्थर की तस्वीर बना दी हो।

वह जिधर भी देखता उसे वह तस्वीर उधर ही नजर आती जिसे वह अपने दिल में लिये फिरता था। वह सब कुछ भूल गया था उसके दिमाग में बस यह संगमरमर ही संगमरमर था और कुछ नहीं।

उसके ढंग चाल सब इस पत्थर के साथ ऐसे हो गये थे कि वह चाकू की धार जैसा पतला हो गया था। और यह पत्थर एक चक्की के पत्थर की तरह था जिसने उसकी ज़िन्दगी को कुचल कर रख दिया था।

एक पत्थर के चौरस टुकड़े की तरह जिसके ऊपर उसकी हर रंग की खुशियॉ पीस कर सब मिला दी गयी हों। एक चुम्बक जिसने उसको आकर्षित कर लिया हो और फिर वह एक पीसने वाला पत्थर बन गया हो जो कभी न रुकता हो।

अखिर उसके भाई जैनेरीलो[91] ने अपने भाई को इतना पीला और अधमरा देखा तो उससे पूछा — “मेरे भाई यह तुम्हें क्या हो गया है कि तुम्हारी ऑखों में इतना दुख है और तुम्हारे चेहरे से इतनी निराशा झलक रही है। ऐसी तुम पर क्या मुसीबत आ पड़ी है। कुछ बोलो तो अपने भाई से अपना दिल खोलो तो।

[91] Jennariello – name of the brother of Milluccio

कोयले की बू अगर एक कमरे में बन्द हो तो आदमियों के लिये जहर बन जाती है। बारूद का पाउडर भी अगर किसी पहाड़ के नीचे भी दबा हो तो वह थोड़ा थोड़ा कर के एक पहाड़ के टुकड़े टुकड़े कर के उसे हवा में उड़ा देता है। शरीर के अन्दर रोकी हुई हवा बहुत तेज़ दर्द पैदा कर देती है।

तुम कुछ बोलो तो। अपना मुॅह खोलो तो। मुझे बताओ तो कि मामला क्या है। मैं तुम्हें हर तरीके से विश्वास दिलाता हूॅ कि अगर तुम्हारी सहायता करने के लिये मुझे अपनी हजार ज़िन्दगियॉ भी कुर्बान करनी पड़े तो मैं कर दूॅगा।"

तब मिलूकियो ने आहें भरते हुए पहले तो उसके प्यार के लिये धन्यवाद किया फिर कहा कि उसको उसके प्यार में कहीं कोई कमी नहीं है और वह उस पर पूरा विश्वास करता है।

पर इस बीमारी की कोई दवा नहीं है क्योंकि यह एक पत्थर से पैदा हुई है जहॉ उसने बिना किसी फल की आशा रखे अपनी इच्छाओं के बीज बोये थे।

पत्थर भी ऐसा कि जिसमें से कोई मुशरूम भी नहीं निकल सकता वह तो सिसीफस[92] का पत्थर था जिसको सिसीफस पहाड़ के ऊपर ले जाना चाहता था पर वह हमेशा वहॉ पहुॅच कर नीचे की ओर लुढ़क जाता था।

---

[92] Sisyphus was a great Greek King of Corinth who was punished by Zeus ro roll a stone continuously up the hill and when it reached the top of the hill, it would roll down again to be rolled up. And it was supposed to be taken there again till it stays there.

आखिर हजारों बार विनती करने पर मिलूकियो ने उसे अपने प्यार की बात बतायी। इस पर जैनेरीलो ने उसे जितनी तसल्ली वह दे सकता था दी और खुश रहने के लिये कहा। दुखी न होने के लिये कहा। उसको सन्तुष्ट करने के लिये उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वह दुनियाँ भर में घूमेगा जब तक उसको उस पत्थर जैसी कोई स्त्री नहीं मिल जायेगी।

उसने उसी समय एक बड़ा जहाज़ तैयार करवाया। उसमें बेचने के लिये बहुत सारा सामान भरा खुद वह एक सौदागर की तरह से तैयार हुआ और वेनिस[93] की तरफ चल दिया जो इटली का खुद एक आश्चर्य है। वहाँ बहुत बढ़िया गुणी लोग रहते हैं। वेनिस अपनी कला और प्रकृति के लिये भी बहुत मशहूर है।

वहाँ से से वह लैवन्त[94] और फिर वहाँ से कैरो[95] चल दिया। जब वह वहाँ पहुँचा और शहर में घुसा तो उसने देखा एक आदमी बहुत सुन्दर बाज़ लिये जा रहा था। जैनैरीलो ने उसे तुरन्त ही अपने भाई के लिये खरीद लिया जो एक अच्छा शिकारी था।

जल्दी ही उसे एक और आदमी मिला जिसके पास एक बहुत ही शानदार घोड़ा था। उसने उसको भी खरीद लिया। फिर वह समुद्र

---

[93] Venice is a large city in Italy – known as "City of Canals"

[94] Levant is a geographical area in the Eastern Mediterranean area of Western Asia containing Syria, Lebanon, Cyprus, Turkey Israel Jordan and Palestine OR broadly Greece to Egypt.

[95] Cairo – capital of Egypt

की यात्रा की थकान से ताजा होने के लिये एक सराय में चला गया।

अगली सुबह जब रोशनी के जनरल के हुक्म पर रोशनी ने आसमान के तम्बू में सितारों की सेना पर हमला किया और सितारों ने अपनी जगह छोड़ दी तो जैनैरीलो शहर देखने के लिये निकल पड़ा।

उसकी ऑखें बिल्ली[96] की ऑखों की तरह से एक ऐसी स्त्री की तलाश में चारों तरफ घूम रही थीं जो हाड़ मॉस के चेहरे पर पत्थर जैसी हो।

जब वह इस तरह से चारों तरफ देखता हुआ घूम रहा था कभी वह इधर देख लेता तो कभी उधर देख लेता तो ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी पुलिस वाले की निगाह से बचने की कोशिश कर रहा हो।

उसको एक भिखारी दिखायी दिया जिसकी कमर पर बहुत सारे प्लास्टर और फटे कपड़े लदे हुए थे। भिखारी ने उससे पूछा — "ओ बहादुर नौजवान तुम इतने डरे हुए क्यों हो।"

जैनेरीलो बोला — "क्या मैं तुम्हें अपना हाल बताऊँ? मेरा विश्वास करो मैं अपना हाल पुलिस को बता कर ज़्यादा अच्छा महसूस करूँगा बजाय तुम्हारे।"

[96] Translated for the word "Lynx"

भिखारी बोला — “आराम से आराम से नौजवान आराम से। क्योंकि आदमी का मॉस पौंड से तौल कर नहीं बेचा जाता। अगर डेरियस ने अपना दुख एक सईस को न बताया होता तो वह फारस का बादशाह न होता।[97]

अगर तुम मुझे यह बात बता दोगे तो यह कोई बड़ी बात नहीं होगी इसलिये तुम अपनी बात इस भिखारी को बता दो। हालॉकि कोई डंडी कितनी भी पतली हो पर वह दॉत तो कुरेद ही सकती है।

जब जैनेरीलो ने भिखारी की ठीक बात सुनी तब उसने उसे अपने वहॉ आने की वजह बतायी।

सुन कर भिखारी बोला — “अब देखो न मेरे बेटे। हर चीज़ का हिसाब रखना कितना जरूरी है। हालॉकि मैं तो एक कूड़े का ढेर हूँ फिर भी मैं तुम्हारी आशाओं के बागीचे को और सुन्दर बना सकता हूँ।

अब सुनो। भीख मॉगने के बहाने मैं एक दरवाजा खटखटाऊॅगा जहॉ एक जादूगर की नौजवान और सुन्दर बेटी रहती है। तुम वहॉ ऑखें खोल कर देखना तुमको उसमें वैसी ही शक्ल मिल जायेगी जैसी कि तुम्हारा भाई चाहता है।”

---

[97] Darius was (Darius, The Great) the King of Persia who reigned from 522 BC to 486 BC. He ruled the empire at its peak, when it included much of West Asia, parts of the Caucasus, parts of the Balkans, most of the Black Sea coastal regions, Central Asia, as far as the Indus Valley in the Far East and portions of north and northeast Africa including Egypt (Mudrâya), eastern Libya, and coastal Sudan.

ऐसा कह कर उसने पास के एक मकान का दरवाजा खटखटाया तो लिवीला[98] ने दरवाजा खोल कर एक रोटी उसको दी। जैसे ही जैनेरीलो ने उसे देखा वह उसको वैसी ही लगी जैसी कि मिलूकियो ने उसे बताया था।

उसने भी भिखारी को बहुत अच्छी भीख दी और उसे भेज दिया। खुद वह सराय गया और एक फेरी वाले जैसा रूप रखा दो बक्सों में दुनियाँ भर की दौलत रखी और लिवीला के घर चल दिया। रास्ते में वह अपना सामान बेचने के लिये आवाज लगाता जा रहा था।

आखिर उसने उसे बुला ही लिया। उसके पास लिवीला ने सिर पर पहनने वाली सुन्दर जालियाँ देखीं टोपियाँ देखीं। रिबन लेस रूमाल कौलर सुइयाँ आदि बहुत सारी चीज़ें देखी। जब उसने उन सबको बार बार देख लिया तो उसने उससे उसे कुछ और दिखाने के लिये कहा।

जैनेरीलो बोला — "आदरणीय मैडम। इन बक्सों में तो मेरे पास केवल रोजमर्रा की और सस्ती चीज़ें हैं पर अगर आप मेरे जहाज़ पर आयें तो मैं आपको दुनियाँ की दूसरी चीज़ें भी दिखाऊँगा। वहाँ मेरे पास बहुत बड़े बड़े लौर्ड के खरीदने लायक चीज़ें हैं।"

[98] Liviella – name of magician's daughter

लिवीला को उनके देखने की बहुत उत्सुकता हुई, क्योंकि लड़कियों को तो ऐसी उत्सुकता होती ही है। वह बोली — "अगर मेरे पिता बाहर नहीं गये होते तो वह मुझे कुछ पैसे दे देते।"

जैनेरीलो बोला — "कोई बात नहीं। अगर वह बाहर हैं तब तो आप और भी ज़्यादा अच्छे तरीके से आ सकती हैं। क्योंकि तब शायद वह आपको इन चीज़ों को देखने का आनन्द नहीं उठाने देते।

और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपको इतनी शानदार चीज़ें दिखाऊँगा कि लोग आपसे ईर्ष्या करेंगे – गले का हार कान के झुमके ब्रेसलैट आदि कि आप उनको देख कर ही आश्चर्यचकित रह जायेंगी।"

जब लिवीला ने इतनी अच्छी चीज़ों का इतना अच्छा वर्णन सुना तो उसने अपनी एक दासी को अपने साथ के लिये बुलाया और जैनेरीलो के जहाज़ पर चल दी।

पर जैसे ही वह जहाज़ पर चढ़ी तो जैनेरीलो तो उसको सामान दिखाना शुरू कर दिया और नाविक को चालाकी से हुक्म दिया कि वह जहाज़ का लंगर उठा ले और मस्तूल खोल दे। ताकि इससे पहले कि लिवीला उसकी चीज़ों से नजर ऊपर उठाये जहाज़ खुले समुद्र में पहुँच जाये।

जब लिवीला को यह चाल पता लगी उसने ओलिम्पिया[99] से उलटे तरीके से व्यवहार करना शुरू कर दिया। यानी ओलिम्पिया तो इसलिये रोयी थी क्योंकि उसको एक चट्टान पर छोड़ दिया गया था पर यहॉ उसने इसलिये रोना शुरू कर दिया कि वह चट्टानों को छोड़ कर जा रही थी।

पर जब जैनेरीलो ने उसे यह बताया कि वह कौन था और वह उसे कहॉ ले जा रहा था। कैसे वहॉ उसकी खुशकिस्मती उसका इन्तजार कर रही थी। फिर उसने मिलूकियो की सुन्दरता का वर्णन किया उसकी शान का उसके गुणों का वर्णन किया। आखीर में उसके प्यार का वर्णन किया कि वह उससे कितना प्यार करता था तो वह उसको शान्त करने में सफल हो गया।

उसने खुद ने हवा से प्रार्थना की कि वह उसको जल्दी से उस दृश्य को दिखा दे जिसे अभी अभी जैनेरीलो ने उसके सामने खींचा था।

जब वे खुशी खुशी जा रहे थे तो उन्होंने जहाज़ के नीचे लहरों के उठने गिरने की आवाज सुनी और हालॉकि वे बहुत धीरे धीरे बोल रहे थे फिर भी जहाज़ के कप्तान ने तुरन्त ही समझ लिया कि यह सब क्या है।

वह चिल्लाया "सावधान जहाज़ के ऊपर वाले सब लोग सुनें। तूफान आ रहा है भगवान ही मालिक है।"

---

[99] Olympia

जैसे ही उसने यह कहा कि तभी हवा की सीटी जैसी आवाज झाग वाली लहरों से भर गया। और जब लहरें जहाज़ के दोनों तरफ थीं यह जानने की उत्सुकता में कि दूसरे लोग क्या कर रहे थे बिन बुलाये मेहमान जहाज़ के डैक पर कूद पड़े।

एक आदमी ने उनको कटोरे भर भर कर बाहर फेंका तो दूसरे ने बालटी भर भर कर फेंकना शुरू किया। एक और दूसरे ने पम्प लगा कर उसको निकाला।

जब हर नाविक अपना अपना काम करने में लगा हुआ था क्योंकि यह उसकी अपनी सुरक्षा का भी सवाल था कोई मस्तूल देख रहा था कोई उसको आगे बढ़ाने में सहायता कर रहा था जैनेरीलो सबसे ऊँचे मस्तूल पर चढ़ गया और अपनी दूरबीन से देखने लगा कि शायद उसे कहीं कोई जमीन का टुकड़ा दिखायी दे जाये।

अगर कहीं दिखायी दे जाये तो वे कम से कम वहाँ अपना लंगर डाल सकते थे। सो लो वह अपने दो फीट वाली दूरबीन से **100** मील दूर तक देख रहा था कि उसने एक फाख्ता को अपने साथी के साथ अपने जहाज़ के मस्तूल पर बैठते देखा।

नर फाख्ता ने कहा — "रूचे रूचे।"[100]

उसकी साथिन ने जवाब दिया — "क्या बात है प्रिय तुम दुखी क्यों हो।

[100] Rucche

नर फाख्ता बोला — “इस बेचारे राजकुमार ने अपने भाई को देने के लिये एक बाज़ खरीदा था पर जैसे ही वह इसे अपने हाथ में लेगा कि यह उसकी आँखें नोच लेगा। पर अगर यह उसको उसे नहीं देगा या फिर उसको खतरे की बात बतायेगा तो यह संगमरमर का बन जायेगा।”

इसके बाद वह फिर से रोने लगा “रूचे रूचे।”

मादा फाख्ता बोली — “अब क्या। तुम अब भी रो रहे हो। अब क्या कुछ और नया होने वाला है।”

नर फाख्ता बोला — “इस बेचारे ने उसके लिये एक घोड़ा भी खरीदा है पर जैसे ही वह पहली बार उस पर चढ़ेगा तो घोड़ा उसकी गर्दन तोड़ देगा। पर अगर वह उसको उसे नहीं देगा या फिर उसको सावधान करेगा तो खुद संगमरमर का बन जायेगा।”

नर फाख्ता फिर रो कर बोला “रूचे रूचे।”

मादा फाख्ता फिर बोली — “अब क्या बात है। अब तुम क्यों रो रहे हो।”

नर फाख्ता बोला — “रूचे यह राजकुमार उसके लिये एक पत्नी भी ले कर जा रहा है। पर पहली ही रात को जब वे दोनों सोने जायेंगे तब एक भयानक ड्रैगन उन दोनों को खा जायेगा। अगर यह उसको भाई के पास नहीं ले जायेगा या उसको इस खतरे के बारे में सावधान करेगा तो खुद संगमरमर का बन जायेगा।”

जैसे ही उसने यह बोला तो तूफान रुक गया और हवाऐं भी शान्त हो गयीं पर जैनेरीलो के दिल में जो कुछ उसने चिड़ियों की जबानी सुना उसे सुन कर एक बाहर वाले तूफान से भी ज़्यादा भयानक तूफान उठने लगा।

यह तूफान बाहर वाले तूफान से बीस गुना ज़्यादा था। उसे लग रहा था जैसे वह सारा कुछ समुद्र में फेंक दे ताकि वह ये सब चीज़ें अपने भाई के पास न ले जा सके ताकि वे उसको कोई नुकसान न पहुँचा सकें।

दूसरी तरफ उसने अपने बारे में सोचा कि दान तो अपने घर से ही शुरू होता है। इस बात से डरते हुए कि अगर वह ये चीज़ें अपने भाई के पास नहीं ले जाता या उसे इस खतरे के बारे में पहले से बताता है तो वह पत्थर का हो जायेगा उसने यह तय किया कि उसको सच पर ध्यान देना चाहिये बजाय सम्भावना पर। क्योंकि कमीज उसके ज़्यादा पास थी बजाय जैकेट के।

जब वह शेडी ग्रोव पहुँचा तो उसने देखा कि उसका भाई तो किनारे पर खड़ा है। उसने दूर से ही देखा कि वह जहाज़ के वापस आने पर बहुत खुश था। और जब उसने देखा कि उस जहाज़ पर तो वह भी थी जो उसके दिल में बसी हुई थी तब तो वह बहुत ही खुश हुआ।

उसने दोनों चेहरों को साथ साथ रख कर देखा तो उसने देखा कि इस चेहरे और उस चेहरे में बाल भर का भी अन्तर नहीं था।

यह देख कर इतना खुश था कि खुशी के मारे वह झुका जा रहा था।

सो जब वह जहाज़ से नीचे उतरा तो उसके भाई ने उसको गले लगाया और पूछा — "यह कैसा बाज़ है जो तुम्हारी मुठ्ठी पर बैठा हुआ है।"

जैनेरीलो बोला — "मैंने इसको तुम्हें देने के लिये ही खरीदा था।"

मिलूकियो बोला — "इससे लगता है कि तुम मुझे वाकई बहुत प्यार करते हो क्योंकि तुम हमेशा मेरी खुशी ही ढूँढते रहते हो। सच तो यह है कि अगर तुम मेरे लिये कोई कीमती खजाना भी लाये होते तो मुझे इतनी खुशी नहीं होती जितनी कि इस बाज़ के लाने पर हुई है।"

और जैसे ही वह उसको अपने हाथ में लेने के लिये बढ़ा जैनेरीलो ने तुरन्त ही एक चाकू निकाला जो वह अपने साथ लिये था और उसकी गर्दन काट दी।

उसका यह काम देख कर तो राजा ऑखें फाड़े खड़ा देखता रह गया। उसने सोचा कि लगता है कि उसका भाई पागल हो गया था इसी लिये उसने ऐसा पागलपने का काम किया। पर उसने सोचा कि उसके आने की खुशी को खराब नहीं करना चाहिये इसलिये वह चुप रह गया।

उसके बाद उसकी निगाह घोड़े पर पड़ी तो उसने अपने भाई से पूछा कि वह घोड़ा किसका था। तो भाई ने बताया कि वह घोड़ा भी उसी के लिये था। यह सुन कर उसकी इच्छा हो आयी कि वह उसकी सवारी करे। पर जैसे ही वह चढ़ने के लिये छल्ले देख रहा था कि जैनेरीलो ने घोड़े की टॉगें काट दीं।

यह देख कर राजा को फिर बहुत गुस्सा आया। उसको लगा कि जैनेरीलो ने यह काम उसको नाराज करने के लिये किया है सो उसका अपना गुस्सा और ऊपर बढ़ने लगा।

फिर भी उसने सोचा कि अपना गुस्सा दिखाने का यह कोई सही समय नहीं है कहीं ऐसा न हो कि नयी दुलहिन का मुँह देखने का भी आनन्द खत्म हो जाये जिसे देखते हुए वह कभी थकेगा नहीं।

जब वे शाही महल में आये तो उसने शहर के सब लौर्ड और लेडीज़ को बुलाया। एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया गया। इस समय वह कमरा ऐसा लग रहा था जैसे कि वह घुड़सवारों के घुड़सवारी सीखने का स्कूल हो। जब नाच खत्म हो गया तो फिर एक दावत हुई उसके बाद सब लोग आराम करने चले गये।

अब जैनेरीलो के दिमाग में तो केवल एक ही बात घूम रही थी कि वह अपने भाई की ज़िन्दगी कैसे बचाये। वह अपने भाई के पलंग के पीछे जा कर छिप गया।

वह ड्रैगन के लिये पहरा दे रहा था कि लो आधी रात के समय वहॉ एक बहुत ही बड़ा और भयानक ड्रैगन आया। उसकी ऑखों

से लपटें निकल रही थीं और मुँह से धुँआ। उसकी शक्ल से जो डर टपक रहा था उससे डरों को डराने वाला भी मुँह छिपा कर बैठा जाये।

जैसे जैनेरीलो ने उस राक्षस को देखा उसने उसे मारने की सोची। उसने अपनी दमिश्क की तलवार निकाली और उसे बाँये दाँये चलाना शुरू कर दिया। फिर उसने उसे इतने ज़ोर से मारा कि राजकुमार के पलंग के खम्भे के दो टुकड़े हो गये।

राजकुमार जाग गया और ड्रैगन गायब हो गया।

जब मिलूकियो ने अपने भाई के हाथ में तलवार देखी और पलंग के खम्भे को दो हिस्सों में टूटे पड़े देखा तो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "कोई है कोई है। भाई को धोखा देने वाला मुझे मारने आया है।"

शोर सुन कर कई नौकर जो पास वाले कमरों में ही सोते थे वहाँ भागे आये। राजा ने उनको हुक्म दिया कि वह जैनेरीलो को बाँध लें और उसी समय उसे जेल में डाल दें।

अगले दिन सूरज ने जैसे ही रोशनी बाँटने के लिये अपना बैंक खोला तो राजा ने अपने सलाहकारों की काउन्सिल बुलायी और जब उसने बताया कि रात क्या हुआ था कि किस तरह से उसने बाज़ को मारा फिर घोड़े को मारा और अब वह उसको भी मारना चाहता था। सबने कहा कि ऐसे आदमी को यानी जैनेरीलो को मार देना चाहिये।

लिवीला की सारी प्रार्थनाऐं बेकार गयीं। वे राजा का दिल न पिघला सकीं। राजा ने कहा — "प्रिये तुम मुझे प्यार नहीं करतीं। तुम अपने देवर की ज़्यादा इज़्ज़त करती हो बजाय मेरी ज़िन्दगी के। तुमने अपनी ऑखों से देखा है कि यह हत्यारा कुत्ता एक ऐसी तलवार से मुझे मारने आया जिससे हवा में बाल भी काटा जा सकता है। अगर मेरे पलंग के खंभे ने मेरी जान न बचा ली होती तो तुम अब तक विधवा हो गयी होतीं।"

ऐसा कहते हुए उसने कहा कि उसके हुक्म का पालन किया जाये।

जब जैनैरीलो ने यह सजा सुनी और देखा कि भाई की ज़िन्दगी बचाने का उसे यह इनाम मिल रहा है उसे समझ ही नहीं आया कि वह क्या कहे या क्या करे।

अगर उसने कुछ नहीं कहा तो बुरा होगा और अगर नहीं कहा तो उससे भी बुरा होगा। इसके अलावा वह जो भी करेगा वह पेड़ से भेड़िये के मुॅह में ही गिरने के बराबर होगा।

अगर वह चुप रहा तो उसका सिर कुल्हाड़ी से काट दिया जायेगा और अगर वह बोला तो ज़िन्दगी भर के लिये पत्थर का बन जायेगा।

आखिर बहुत सोचने विचारने के बाद उसने यह निश्चय किया कि वह उनको इसकी वजह बता कर ही रहेगा ताकि वह अपने आखिरी दिन तक एक निरपराध की ज़िन्दगी बिता सके। बजाय

इसके कि वह सच को छिपा कर रखे और एक धोखा देने वाले के नाम से इस दुनियाँ से जाये।

सो उसने राजा को एक सन्देश भेजा कि उसको अपने हाल के बारे में उससे कुछ कहना है। उसको राजा के सामने लाया गया जहाँ पहले उसने एक बड़ा परिचय वाला भाषण दिया जिसमें उसने बताया कि वह अपने भाई को कितना प्यार करता था।

फिर उसने उस धोखे के बारे में बताया जो उसने लिवीला को अपने भाई की खुशी के लिये ही दिया था। फिर उसने बाज़ के बारे में कही गयी फाख्ताओं की बातचीत सुनायी। फिर कैसे पत्थर का बनने से बचने के लिये उसने बिना राजकुमार को बताये बाज़ को मार दिया ताकि राजकुमार देख सके। जब वह यह बोल रहा था तो उसकी टाँगें पत्थर की होती जा रही थीं।

और जब उसने घोड़े का मामला सुनाना शुरू किया तो उसी तरह से वह कमर तक पत्थर का बन गया। उसका सारा शरीर बिल्कुल अकड़ रहा था। यह एक ऐसी चीज़ थी जो अगर कभी किसी दूसरे समय पर होती तो शायद वह उसको देखने के लिये पैसा देता पर आज तो उसका दिल रो रहा था।

आखीर में जब वह ड्रैगन वाली बात बताने लगा तब तो वह सिर से पैर तक कमरे में एक मूर्ति बना खड़ा था।

यह देख कर राजा ने अपनी गलती के लिये खुद को बहुत कोसा कि उसने अपने इतने प्यारे भाई के लिये इतनी जल्दी में ऐसी

सजा सुना दी थी। उसने अपने भाई का एक साल तक शोक मनाया। जब भी वह अपने भाई के बारे में सोचता तो बस उसकी ऑखों से ऑसुओं की नदी बह निकलती।

इस बीच लिवीला ने दो बेटों को जन्म दिया जो दुनियॉ के दो सबसे सुन्दर प्राणी थे। कुछ महीनों बाद रानी तबियत बहलाने के लिये जंगल में गयी।

पिता इत्तफाक से अपने दोनों बेटों के साथ कमरे के बीच में खड़ा था और ऑसुओं भरी ऑखों से मूर्ति की तरफ देख रहा था जो उसकी बेवकूफी की यादगार थी जिसने उससे आदमियों में फूल उसका भाई छीन लिया था।

कि तभी एक बहुत ही आदरणीय और शाही किस्म का आदमी वहॉ प्रगट हुआ। उसके लम्बे लम्बे बाल उसके कन्धों पर बिखरे हुए थे। उसकी दाढ़ी उसकी छाती को ढकी हुई थी।

राजा को सिर झुकाते हुए उसने राजा से कहा — "योर मैजेस्टी इस भले भाई को इसको इसकी पुरानी हालत में लाने का क्या देंगे।"

राजा बोला — "मैं अपना राज्य दे दूॅगा।"

आदमी बोला — "नहीं। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसका भुगतान पैसों में हो सके। यह तो ज़िन्दगी का मामला है तो इसका भुगतान भी ज़िन्दगी से ही होना चाहिये।"

तब राजा ने कुछ तो जैनैरीलो से प्यार की वजह से और कुछ उसके साथ अन्याय न करने की वजह से आदमी से कहा — "आप मेरा विश्वास करें सर उसकी ज़िन्दगी के लिये मैं अपनी ज़िन्दगी तक दे दूँगा। अगर वह इस पत्थर में से निकल आता है तो मैं इस पत्थर में बन्द होने के लिये तैयार हूँ।"

यह सुन कर बूढ़ा बोला — "बिना तुम्हारी ज़िन्दगी को खतरे में डाले क्योंकि एक आदमी को बड़ा करने में काफी समय लगता है तुम्हारे बच्चों के खून को इस संगमरमर की मूर्ति पर मलने से यह मूर्ति तुरन्त ही ज़िन्दा हो जायेगी।"

राजा बोला — "अरे बच्चे तो फिर भी पा सकता हूँ पर दूसरे भाई को देखने की तो मुझे कोई आशा ही नहीं है।"

कह कर उसने अपने दोनों भोले भाले बच्चों की उस पत्थर की मूर्ति के सामने बलि चढ़ा दी। उनका खून मूर्ति पर मल दिया। मूर्ति तुरन्त ही ज़िन्दा हो गयी। राजा ने अपने भाई को गले लगा लिया।

दोनों बच्चों की लाशों को एक ताबूत में बन्द कर दिया ताकि उनको पूरी इज़्ज़त के साथ दफ़नाया जा सके।

उसी समय रानी वापस आ गयी। राजा ने अपने भाई को छिपने के लिये कहा और रानी से बोला — "तुम मुझे क्या दोगी अगर मैं अपने भाई को फिर से ज़िन्दा कर दूँ।"

लिवीला बोली — "मैं आपको अपना सारा राज्य दे दूँगी।"

राजा ने पूछा — "क्या तुम अपने बच्चों का खून दे सकती हो।"

रानी बोली — "नहीं वह तो नहीं। क्योंकि मैं इतनी बेरहम नहीं हो सकती कि मैं अपने ही हाथों से अपने ऑखों के तारों को निकाल दूँ।"

राजा बोला — "अफसोस अपने भाई को ज़िन्दा देखने के लिये मैंने अपने बच्चों को ही मार डाला है। क्योंकि यही जैनैरीलो की ज़िन्दगी की कीमत थी।"

इतना कह कर राजा ने रानी को ताबूत में रखी दोनों छोटे बच्चों की लाशें दिखा दीं। जब उसने यह दृश्य देखा तो उसने तो पागलों की तरह से रोना शुरू कर दिया।

"ओ मेरे बच्चों, ओ मेरी ज़िन्दगी, ओ मेरे दिल की खुशी, मेरे खून के फव्वारों। किसने सूरज की खिड़कियों को लाल रंग दिया है। किसने बिना डाक्टर की सलाह के मेरी ज़िन्दगी की नस काट डाली है।

उफ़ मेरे बच्चों। अब तो मुझसे मेरी आशा भी छीन ली गयी है। मेरी रोशनी बुझा दी गयी है। मेरी खुशी को जहर दे दिया गया है। मेरा सहारा चला गया है। तुमको तलवार से मार दिया गया है। मेरा कलेजा दुख से छलनी हुआ जा रहा है। तुम खून में डूबे हुए हो और मैं ऑसुओं में।

अफसोस कि अपने चाचा को ज़िन्दगी देने के लिये तुमने अपनी मॉ को ही मार दिया है क्योंकि मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती। मेरी दुखी ज़िन्दगी के सबसे सुन्दर कपड़े का नमूना, मेरी आवाज का औरगैन[101] तो अब बन्द है क्योंकि उसकी तो धौंकनी ही ले ली गयी है।

ओ मेरे बच्चों। तुम अपनी मॉ को जवाब क्यों नहीं देते। वह मॉ जिसने कभी तुम्हारी नसों में अपना खून दिया था आज तुम्हारे लिये अपनी ऑखों से रो रही है।

पर मेरी किस्मत बता रही है कि मेरी खुशी का फव्वारा सूख गया है। अब मैं ज़िन्दगी की खुशियों का आननद लेने के लिये और ज़िन्दा नहीं रहूँगी। बस अब मैं तुम्हें ढूँढने के लिये आती हूँ।"

इतना कह कर वह नीचे कूदने के लिये कमरे की खिड़की की तरफ भागी कि तभी उसका जादूगर पिता उसी खिड़की से बादलों के साथ अन्दर आया और चिल्ला कर बोला — "रुक जाओ लिवीला रुक जाओ। मैंने अभी अभी उसे पूरा कर लिया है जो मैं पूरा करना चाह रहा था। मैंने एक ही पत्थर से तीन चिड़ियें मार दी हैं।

[101] Organ – In music, the organ is a keyboard instrument of one or more pipe divisions or other means for producing tones, each played with its own keyboard, played either with the hands on a keyboard or with the feet using pedals. The organ is a relatively old musical instrument. There are many kinds of organ. See the picture of one kind above.

मैंने जैनेरीलो से अपना बदला ले लिया है जो मेरे घर मुझसे मेरी बेटी को छीनने आया था। मैंने उसको इतने महीनों तक एक संगमरमर की मूर्ति में कैद कर रखा था। मैंने तुम्हें भी तुम्हारे बुरे व्यवहार की सजा दे ली है कि तुम मुझसे मेरी इजाज़त लिये बिना ही जहाज़ पर चढ़ कर यहाँ चली आयी थीं और तुम्हारे बच्चों को उनके पिता के हाथ से मरवा कर।

मैंने राजा को भी सजा दे दी है कि लड़कियों के लालच में वह सूरत अपने दिमाग में लिये फिरता रहा। मैंने पहले उसको उसके अपने भाई का जज बनाया और फिर उसी के हाथ से उसी के अपने बच्चों की हत्या करवा दी।

पर मैं केवल तुम्हारे ऊपर के बाल काटना चाहता था न कि तुम्हारी खाल उधेड़ना चाहता था। अब मेरी इच्छा यह है कि मैं इस सब जहर को मीठे में बदल दूँ। इसलिये तुम जाओ और अपने बच्चों और मेरे धेवतों को लो वे अब पहले से भी ज़्यादा सुन्दर हो गये हैं।

और तुम मिलूकियो आओ मेरे गले लग जाओ। मैं तुम्हें अपना दामाद मानता हूँ और अपने बेटे जैसा जानूँगा। जैनेरीलो का अपराध मैं माफ करता हूँ क्योंकि यह सब उसने अपने भाई के प्यार में किया।”

जैसे ही वह यह कह कर चुका दोनों बच्चे वहाँ आ गये। नाना तो उनके देख कर सन्तुष्ट ही नहीं हो पा रहा था वह उनको बार बार गले से लगा कर चूमे जा रहा था।

इस खुशी के बीच तीसरा सहने वाला जैनेरीलो भी वहाँ आ गया जिसने बहुत सारे तूफानों का सामना किया था अब वह मैकेरोनी के पानी में तैर रहा था।

पर इतनी खुशी मिलने पर भी वह अपनी पुरानी ज़िन्दगी के खतरों को नहीं भूला। वह हमेशा यही सोचता रहा कि उसके भाई ने कितनी बड़ी गलती की थी।

किसी आदमी को कितना सावधान रहना चाहिये कि वह किसी गड्ढे में न गिर पड़े क्योंकि —

इन्सान के सारे फैसले झूठे और तर्कहीन होते हैं।

26 5–2 महीने[102]

यह एक ऐसी कहावत है जिसे इतने बड़े बड़े शब्दों में लिखा जाना चाहिये जितने बड़े शब्द स्मारकों[103] पर लिखे जाते हैं। कि चुप रहना किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता और यह तो सोचना ही नहीं चाहिये कि दूसरे की बुराई करने वाले जो दूसरों के बारे में कभी अच्छा नहीं बोलते बल्कि उन्हें काटते रहते हैं और उनको डंक मारते रहते हैं वे अपनी इस बुरे काम से कुछ फायदा उठा सकते हैं या किसी का प्यार पा सकते हैं।

क्योंकि जब भी कभी थैला हिलाया जायेगा तो यह हमेशा ही देखा गया है और यह अभी तक भी सच है कि किसी के बारे में कहा गया कोई अच्छा शब्द प्यार और फायदा पाता है पर किसी की बुराई करना दुश्मनी और नफरत पैदा करता है।

जब आप लोग सुनेंगे कि ऐसा कैसा होता है तब आप कहेंगे कि हॉ मैं ठीक ही कहती थी।

एक बार की बात है कि दो भाई थे चाने[104] जो एक लौर्ड की तरह से बहुत अमीर था और दूसरा लिज़े जो बहुत गरीब था। उसके पास रहने के लिये बस बहुत थोड़ा सा ही था। पर एक तरफ तो एक भाई किस्मत का खराब था तो दूसरी तरफ दूसरा भाई अपने दिमाग में दया का भंडार था क्योंकि वह अपने भाई को एक पैनी भी नहीं देना चाहता था अगर वह उसके अपने लिये न हो तो।

सो लिज़े ने निराश हो कर वह देश छोड़ दिया और दुनियॉ घूमने निकल पड़ा। वह घूमता रहा घूमता रहा कि एक ठंड की रात को वह एक सराय में आया जहॉ उसने देखा कि 12 नौजवान आग

---

[102] The Months. (Tale No 26) Day 5, Tale No 2

[103] Translated for the word “Monument”

[104] Cianne and Lise – names of two brothers, Cianne was elder and Lise was younger

के पास बैठे है। उन्होंने भी देखा कि कुछ तो ठंड के मौसम की वजह से और कुछ अपने फटे कपड़ों की वजह से लिज़े ठंड से जमा जा रहा है तो उन्होंने उसको आग के पास बैठने के लिये बुला लिया।

लिज़े ने उनका बुलावा स्वीकार कर लिया क्योंकि उसे गर्मी की बहुत जरूरत थी और वहीं उनके पास बैठ कर आग की गर्मी लेने लगा। जब वह वहाँ गर्मी ले रहा तो उन लोगों में से एक जिसका चेहरा इतना डरावना था कि कोई देखे तो देख कर ही डर कर मर जाये उससे बोला — "ओ देहाती इस मौसम के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है।"

लिज़े बोला — "मेरा इस मौसम के बारे में क्या ख्याल है? मैं तो यह सोचता हूँ कि साल के सारे महीने अपना अपना काम करते हैं। पर हम यह नहीं जानते कि हमको क्या चाहिये सो हम तो भगवान को भी नियम में बाँधना चाहते हैं और सब कुछ अपने तरीके से चाहते हैं। हम इसको गहारायी तक नहीं टटोलते कि इसमें हमारे लिये क्या है अच्छा या बुरा फायदेमन्द या नुकसान पहुँचाने वाला।

ठंड में जब बारिश होती है तो हम सिंह राशि[105] में धूप चाहते हैं। अगस्त के महीने में बादलों से बारिश चाहते हैं। हम यह नहीं समझते कि अगर मौसम उलट पुलट हुए तो बोये हुए बीज नष्ट हो

[105] Leo – July 23 – August 22

जायेंगे। पैदावार भी नष्ट हो जायेगी। लोगों के शरीर खराब हो जायेंगे। और प्रकृति सब उलटी हो जायेगी। इसलिये ये सब चीज़ें हमें भगवान के ऊपर छोड़ देनी चाहिये। क्योंकि उसी ने पेड़ को कड़ी ठंड सहने के लिये उसको उस तरह की लकड़ी दी है और उसी ने उसे गर्मी सहने के लिये पत्ते दिये हैं।"

वह नौजवान बोला — "तुम तो सैमसन[106] की तरह से बोल रहे हो। पर तुम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि इस मार्च के महीने में जिसमें अब हम हैं पाला और बारिश बर्फ और ओले हवा और तूफान और कोहरे आदि भेजना बहुत ही खराब बात है। इस सबसे आदमी की ज़िन्दगी दूभर हो जाती है।"

लिज़े बोला — "तुम इस महीने की केवल खराब बातें ही बता रहे हो इसकी अच्छी बातें नहीं बता रहे। यह वसन्त का समाचार लाता है यह पैदावार शुरू करता है और इसी की वजह से सूरज से लोगों को खुशी मिलती है। वही सूरज को रैम[107] के घर ले जाता है।"

जो कुछ लिज़े बात कह रहा था उससे वह नौजवान बहुत खुश था क्योंकि वह तो खुद ही मार्च का महीना था जो उस सराय में अपने 11 भाइयों के साथ आया हुआ था। उसने लिज़े की अच्छाई का इनाम देने के लिये जिसको उस महीने के बारे में कहने के लिये

[106] Samson

[107] Ram – Sheep. In Aries or Mesh Sign

कोई बुरी बात मिली ही नहीं एक छोटी सी सन्दूकची निकाली और उसे देते हुए बोला —

"लो यह सन्दूकची लो और कभी भी तुम्हें किसी भी चीज़ की जरूरत पड़े तो इस बक्से से माँगना फिर इसको खोलना तो वह चीज़ तुम्हें मिल जायेगी।"

लिज़े ने नौजवान को धन्यवाद दिया और बहुत आदर दिखा कर उससे वह सन्दूकची ले ली। उसको तकिये की जगह अपने सिर के नीचे रख कर वह सो गया।

जैसे ही सूरज ने अपनी किरनों की पैन्सिल से रात के सायों को दोबारा एक बार छुआ लिज़े ने अपने **12** दोस्तों से विदा ली और अपने रास्ते चल दिया।

वह मुश्किल से सराय से **50** कदम ही गया होगा कि उसने बक्सा खोलते हुए कहा — "मेरी इच्छा है कि मेरे पास कपड़ा लगी एक पालकी हो जिसमे एक छोटी सी आग हो ताकि मैं उसमें आराम से बैठ कर बर्फ में आ जा सकूँ।"

उसका इतना कहना था कि वहाँ एक पालकी प्रगट हो गयी उसको ले जाने वालों के साथ। उन्होंने उसको उठा कर उस पालकी में रख दिया। उसने पालकी उठाने वालों से कहा कि वे उसे घर ले चलें।

फिर जब उस बक्से से काम लेने का समय आया तो उसने फिर अपना बक्सा खोला और कहा "मुझे कुछ खाना चाहिये।" तुरन्त ही

वहाँ पर उसकी पसन्द का बहुत सारा खाना आ गया। वह खाना इतना सारा था जिसमें दस राजा खाना खा सकते थे।

एक शाम को वह एक ऐसे जंगल में आ गया जो सूरज को भी आने की इजाज़त नहीं देता था क्योंकि वह शक्की जगह से आता था। वहाँ आ कर लिज़े ने अपना बक्सा खोला और बोला — "मैं आज इस सुन्दर जगह आराम करना चाहता हूँ जहाँ नदी पत्थरों पर बहती हुई हवा के गीतों को ताल दे रही है।"

तुरन्त ही वहाँ एक तम्बू प्रगट हो गया उसमें एक काउच था जिसके ऊपर पंखों का गद्दा पड़ा था स्पेन की चादरें बिछी हुई थीं जो पंखों से भी हल्की थी।

उसके बाद उसने खाना माँगा तो पल भर में ही राजकुमार के खाने के लायक एक मेज लग गयी जो सोने और चाँदी से ढकी थी। एक दूसरे तम्बू में बहुत सारा खाना लग गया जो **100** मील तक चला गया था।

जब उसका पेट भर गया तो वह लेट गया और सो गया। और जब सूरज के जासूस मुर्गे ने अपने मालिक को बताया कि रात तो अब फट गयी है और थक गयी है और अब एक होशियार जनरल की तरह उसकी बारी है कि वह बाकी बची सेना पर हमला कर के उसको भी मार डाले।

लिज़े उठा और फिर अपने बक्से से कहा — "अब मुझे बहुत बढ़िया पोशाक चाहिये। मैं आज अपने भाई से मिलना चाहता हूँ मैं

चाहता हूँ कि उस पोशाक को देख कर उसके मुँह में पानी भर आये।"

जैसे ही उसने यह कहा तुरन्त ही एक बहुत ही शानदार काली मखमल की पेशाक आ गयी जिसका लाल किनारा था और उसमें पीले रंग का सारा कढ़ा हुआ अस्तर लगा हुआ था। जिससे ऐसा लगता था कि फूलों का खेत खड़ा हो।

इस तरह के कपड़े पहन कर लिज़े अपनी पालकी में बैठा और अपने भाई से मिलने चला। वह जल्दी ही उसके घर पहुँच गया।

जब चाने ने अपने भाई को इतने कीमती कपड़ों में इस शान से आते देखा तो उसने यह जानना चाहा कि यह सब उसके पास आया कहॉ से। लिज़े ने उसे वह सब बताया जो सराय में उसके साथ हुआ था। उसने उसको उस भेंट के बारे में भी बताया जो उसे उनसे मिली थी। पर उसने उसको यह नहीं बताया कि उसकी उन नौजवानों से क्या बात हुई।

यह सब सुन कर चाने बेचैन हो उठा उस सराय जाने के लिये। वह सोचने लगा कि उसका भाई वहॉ से जल्दी ही चला जाये तााकि वह उसके जाने के बाद सराय जा सके। सो उसने उससे कहा कि वह अभी वहॉ से जाये और आराम करे। लिज़े वाकई थका हुआ था सो वह वहॉ से उठ गया।

उसके जाते ही वह उसी सराय चला गया। सराय में उसको वही नौजवान मिल गये जो उसके भाई को मिले थे तो वह उनसे

बातें करने लगा। उस नौजवान ने उससे वही सवाल पूछा कि वह मार्च के महीने के बारे में क्या सोचता था।

चाने बोला — "यह तो बहुत ही बुरा महीना है। इसमें लोगों को घर में बन्द हो कर बैठना पड़ता है। यह महीना चरवाहों का दुश्मन है। इसमें बहुत बुरी बुरी बीमारियाँ होती हैं। यह एक ऐसा महीना है जिसे हम कहते हैं कि यह एक आदमी को बर्बाद कर देता है सो जब हमें किसी को बर्बाद करना होता है तो हम कहते हैं "जाओ मार्च तुम्हारे बाल काट दे।"

जब हमको किसी को घमंडी कहना होता है तो हम कहते हैं "मार्च को तुम्हारी क्या परवाह।" थोड़े में कहो तो मार्च एक बहुत ही बुरा महीना है। ये दुनियाँ के लिये सबसे अच्छी किस्मत वाला होता धरती के लिये आशीर्वाद होता आदमियों के लिये बहुत फायदे का होता अगर इसे अपने भाइयों से अलग कर दिया जाता तो।"

मार्च ने जब अपने बारे में ऐसा सुना तो उसने सुबह तक तो अपना गुस्सा शान्त रखा पर उसने सोच लिया था कि वह चाने को इसका इनाम जरूर देगा।

अगली सुबह जब चाने जाने लगा तो उसने उसको एक बहुत सुन्दर कोड़ा दिया और कहा कि "जब तुम्हें किसी चीज़ की जरूरत हो तो इससे कहना "ओ कोड़े मुझे सौ दो।" तुम देखोगे कि एक झाड़ी पर मोती लगे हुए हैं।"

चाने ने नौजवान को धन्यवाद दिया और जल्दी जल्दी अपने घर चल दिया। वह कोड़े को घर पहुँच कर ही आजमाना चाहता था। पर जैसे ही वह घर में घुसा वह अपने कमरे में गया। वहाँ वह उन मोतियों को छिपाना चाहता था जो उसे कोड़े से मिलने वाले थे।

वहाँ जा कर वह बोला "ओ कोड़े मुझे सौ दो।"

बस फिर तो कोड़े ने उसे वह दिया जिसकी उसको आशा ही नहीं थी। उसने उसके चेहरे और टाँगों पर ऐसे मारना शुरू कर दिया जैसे कोई संगीत बजाता है।

चाने के चिल्लाने की आवाज सुन कर लिज़े वहाँ आया और जब उसने देखा कोड़ा तो भागे हुए घोड़े की तरह अपने आपको रोक ही नहीं पा रहा है तो उसने अपना छोटा सा बक्सा खोला और उससे कहा कि वह कोड़ा रोक दे।

तब उसने चाने से पूछा कि वहाँ क्या हुआ था। चाने ने उसे सब बताया तो उसने उससे कहा कि यह सब उसी की गलती है किसी और की नहीं। क्योंकि एक खरदिमाग की तरह से यह बदकिस्मती वह खुद ले कर आया है।

उसने एक ऊँट की तरह बर्ताव किया है जो सींग चाहता था पर उसने उनके लिये अपने कान कटा दिये।[108]

उसने भाई से कहा कि वह थोड़ा सब्र रखे। दूसरी दफा वह अपनी जबान पर लगाम रखे क्योंकि यही वह चाभी थी जिसने

---

[108] हिन्दी में यह कहावत ऐसे कही जाती है – चौबे जी बनने तो गये थे छब्बे पर रह गये दुब्बे।

उसकी बदकिस्मती का दरवाजा खोला था। क्योंकि अगर उसने उन नौजवानों के लिये कुछ अच्छा बोला होता तो शायद उसकी किस्मत भी ऐसे ही खुल जाती जैसे कि उसकी खुली थी।

किसी के लिये अच्छा बोलना ऐसा ही है जिसमें कुछ खर्च नहीं होता पर वह फायदा करता है। और कभी कभी तो ऐसा फायदा करता है जिसकी आप आशा भी नहीं करते।

ऐसी ही बातें कह कर लिज़े ने चाने को तसल्ली दी और समझाने की कोशिश की कि आदमी को उतने में ही सन्तुष्ट रहना चाहिये जितना उसके पास है। उसका यह छोटा सा बक्सा **30** कंजूसों का घर भरने के लिये काफी है और जो कुछ भी होगा चाने उस सबका मालिक होगा। क्योंकि एक दयालु आदमी का खजांची तो भगवान है।

उसने आगे कहा — “हालाँकि दूसरा भाई अपने दिल में चाने की इस बेरहमी के बारे में बुरा सोचता होगा जैसे उसने अपने गरीब भाई के साथ बर्ताव किया तो भी उसका लालच एक अनुकूल हवा थी जो उसे इस बन्दरगाह पर ले आयी है।”

जब चाने ने लिज़े से ऐसी बातें सुनी तो उसने अपने बुरे व्यवहार के लिये लिज़े से माफी माँगी। फिर दोनों में दोस्ती हो गयी और उन्होंने अपनी खुशकिस्मती को साथ साथ मिल कर भोगा। उसके बाद चाने ने कभी किसी की बुराई नहीं की चाहे वह कितना भी बुरा क्यों न हो।

वह कुत्ता जो एक बार गर्म पानी से जल गया हो वह हमेशा ही ठंडे से डरता है

27 5–3 पिन्टोसमाल्टो[109]

किसी चीज़ को पाने से ज़्यादा उसको रखना हमेशा से ही आदमी के लिये एक मुश्किल काम रहा है। एक मामले में किस्मत सहायता करती है जो अन्याय में सहायता करती है पर दूसरे मामले में तर्क की ज़्यादा जरूरत पड़ती है।

इसलिये हमें अक्सर ऐसे लोग मिल जाते हैं जो चतुर नहीं होते पर अमीर हो जाते हैं। और फिर क्योंकि उनमें कोई तर्क नहीं होता तो वे फिर फिसल कर गिर जाते हैं। अगर आप जल्दी समझ लेते हैं तो यह आप इस कहानी से अच्छी तरह समझ जायेंगे जो मैं आप सबको अभी सुनाने जा रही हूँ।

एक बार की बात है कि एक सौदागर था जिसके एक अकेली बेटी थी। उसकी यह बहुत इच्छा थी कि वह उसको शादीशुदा देखे पर जब भी कभी वह इस बारे में बात छेड़ता तो उसको लगता कि वह तो अपने उद्देश्य से सैंकड़ों मील दूर था। क्योंकि वह कभी शादी के लिये राजी नहीं होती। इसलिये यह पिता दुनियाँ में सबसे बदकिस्मत आदमी था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि पिता को एक बार किसी मेले में जाना था तो उसने अपनी बेटी से पूछा कि वापस लौटने पर वह उसके लिये क्या ले कर आये। बेटी बोली — “पिता जी अगर आप मुझे प्यार करते हैं तो मेरे लिये आधी हन्ड्रैडवेट पलेरमो चीनी[110], इतने ही मीठे बादाम, 4–6 बोतल गुलाबजल, और थोड़ी

[109] Pintosmalto. (Tale No 27) Day 5, Tale No 3

[110] Half Hundredweight Palermo sugar – Hundredweight is equal to 100 pounds. Palermo is a place in Italy.

सी ऐम्बर और कस्तूरी[111] ले कर आना। और साथ में **40** मोती, दो नीलम, कुछ गार्नेट, कुछ लाल, सोने का धागा, एक नॉद और एक छोटा सा चॉदी का फावड़ा लेते आइयेगा।"

सामान की इतनी बड़ी लिस्ट सुन कर पिता को बहुत आश्चर्य हुआ। फिर भी उसने अपनी बेटी को मना नहीं किया और मेला चला गया। लौटते समय जो कुछ भी उसकी बेटी ने मॅगवाया था वह सब ले कर वह वापस लौटा।

जैसे ही बीटा[112] को ये सब चीज़ें मिली वह एक कमरे में चली गयी उसने बादाम और चीनी को मिला दिया फिर गुलाबजल और खुशबुऐं मिला कर उसकी एक लेही सी बना ली। उससे उसने एक सुन्दर नौजवान की शक्ल बनानी शुरू करदी।

उसने उसके सोने के बाल लगाये नीलम की ऑखें जड़ीं। मोती के दॉत बनाये लाल से उसके होठ बनाये। उसने उसको इतना अच्छा बनाया कि बस केवल बोलने की कमी थी।

जब उसने यह सब कर लिया तो उसने सुना कि साइप्रस के राजा ने प्रार्थना कर के एक मूर्ति में जान डाल ली थी। सो उसने भी प्रेम की देवी से प्रार्थना करनी शुरू की।

यह प्रार्थना उसने इतनी ज़्यादा की कि वह मूर्ति कम से कम ऑखें झपकाने लगी। और ज़्यादा प्रार्थना करने पर वह सॉस लेने

---

[111] Translated for the word "Musk"

[112] Betta – was the name of the merchant's daughter

लगी और फिर वह बोलने भी लगी। और अन्त में वह चलने फिरने भी लगी।

उसको इतनी खुशी हुई जितना कि शायद उसको कोई राज्य मिलने पर भी नहीं होती। बीटा ने उस नौजवान को गले लगाया चूमा और उसका हाथ पकड़ कर अपने पिता के पास ले गयी और बोली — "पिता जी आप मुझे हमेशा शादीशुदा देखना चाहते थे। आपको खुश करने के लिये मैंने अपना पति चुन लिया है। यह है वह पिता जी जिसे मैंने अपना पति चुना है।"

पिता ने जब एक ऐसे सुन्दर नौजवान को अपनी बेटी के कमरे में से निकलते देखा जिसे उसने उसके कमरे में अन्दर जाते ही नहीं देखा था तो वह आश्चर्य से खड़ा का खड़ा रह गया। यह तो ऐसी सुन्दरता थी जिसको देखने के लिये आधी पैनी की जरूरत पड़ती।

सो एक बड़ी दावत की तैयारी की गयी जहाँ दूसरी मौजूद स्त्रियों के बीच एक अनजान रानी प्रगट हुई जो पिन्टोसमाल्टो[113] की सुन्दरता देख कर उसके प्रेम में बुरी तरह से पड़ गयी।

अब पिन्टोसमाल्टो जिसने इस नीच दुनियाँ को देखने के लिये केवल तीन घंटे पहले ही तो आँख खोली थीं और वह दुनियाँ के लिये तो अभी भी भोलाभाला बच्चा था। जैसा कि उसकी दुलहिन ने उससे कह रखा था वह अजनबियों को सीढ़ियों की तरफ ले जा रहा था जो उसके जन्म का जश्न मनाने आये थे।

113 Name of the youth created by Betta

जब ऐसा ही उसने इस रानी के साथ किया तो रानी ने उसका हाथ पकड़ा और अपनी गाड़ी की तरफ ले चली। उसने उसे उसमें बिठाया और अपने देश की तरफ ले चली।

बीटा ने उसका कुछ देर तो इन्तजार किया कि पिन्टोसमाल्टो लौट कर आये लौट कर आये पर बेकार। वह तो लौट कर ही नहीं आया तो उसने किसी को नीचे ऑगन में उसको देखने के लिये भेजा कि वह शायद वहॉ किसी से बात कर रहा हो।

उसके बाद उसने छत पर दिखवाया कि शायद वह वहॉ ताजा हवा के लिये चला गया हो। पर जब वह वहॉ भी नहीं मिला तब उसने सोच लिया कि उसकी सुन्दरता की वजह से किसी ने उससे उसे चुरा लिया है। सो उसने तुरन्त ही उसके लिये ऐलान करवाये पर फिर भी उसकी कोई खबर नहीं मिली।

सो उसने खुद उसको ढूँढने जाने का इरादा किया। उसने एक गरीब लड़की का रूप रखा और अपने रास्ते पर चल दी। कुछ महीनों बाद वह एक भली बुढ़िया के घर आयी जिसने उसका बहुत प्यार से स्वागत किया।

जब उसने बीटा की बदकिस्मती का हाल सुना तो उसको उसके ऊपर दया आ गयी। उसने उसे तीन कहावतें बतायीं – पहली “त्रिचे वरलाचे यानी घर बरसता है” दूसरी “अनोला त्रनोला यानी फव्वारा खेलता है” तीसरी “स्कातोला मातोला यानी सूरज चमकता

है"।[114] उसने उससे कहा कि वह इनको अपनी मुसीबत के समय बोल सकती है। ये उसके बहुत काम आयेंगे।

बीटा को उससे यह भेंट पा कर बहुत खुशी हुई फिर भी उसने अपने मन में सोचा "जो तुम्हारे मुँह में फूँक मारता है वह तुम्हें मरता हुआ नहीं देखना चाहता। पौधा जो जड़ को मारता है वह मुरझाता नहीं। हर चीज़ का अपना इस्तेमाल होता है। कौन जानता है कि इन शब्दों में मेरे लिये क्या खुशनसीबी छिपी हुई है।"

ऐसा सोच कर उसने बुढ़िया को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दी। काफी देर की यात्रा के बाद वह एक सुन्दर शहर राउंड माउंट[115] में आयी। वहाँ पहुँच कर वह सीधी शाही महल गयी और प्रेम की खातिर उसने उनसे उनकी घुड़साल में रहने के लिये थोड़ी सी जगह माँगी।

सो शाही स्त्रियों ने उसको सीढ़ी के ऊपर का एक कमरा रहने के लिये दे दिया। जब बेचारी बीटा वहाँ बैठी हुई थी तो उसने देखा कि पिन्टोसमाल्टो वहाँ से गुजर रहा था। उसको देख कर तो वह इतनी खुश हो गयी कि बस वह तो उसे देख कर मर ही जाती।

पर उस मुश्किल को देख कर जिसमें वह थी और उसको सोचते हुए उसने बुढ़िया के बताये हुए तीन कहावतों में से एक को आजमाना चाहा। वह बोली "त्रिचे वरलाचे" यानी घर बरसता है।

---

[114] The first was, "Tricche varlacche, the house rains!" the second, "Anola tranola, the fountain plays!"; the third, "Scatola matola, the sun shines!

[115] Round Mount

तुरन्त ही उसके सामने एक सुन्दर सोने की गाड़ी जिसमें बहुत सारे जवाहरात जड़े हुए थे प्रगट हो गयी और कमरे के चारों तरफ अपने आप ही घूमने लग गयी जो अपने आप में एक आश्चर्य थी।

जब शाही महल की स्त्रियों ने इसे देखा तो उन्होंने इस बात को रानी को बताया तो वह तुरन्त ही बीटा के कमरे की तरफ दौड़ी। जब उसने वह सुन्दर गाड़ी देखी तो उससे पूछा कि क्या वह गाड़ी वह उसे बेचेगी। और कहा कि वह उसके लिये कुछ भी देने के लिये तैयार थी।

बीटा बोली कि हालॉकि वह बहुत गरीब थी पर वह उसको दुनियॉ भर के सोने के लिये भी बेचने के लिये तैयार नहीं थी। पर रानी अगर वह उसको लेना ही चाहती है तो वह उसे पिन्टोसमाल्टो के कमरे के दरवाजे पर एक रात को सोने दें।

रानी तो लड़की की बेवकूफी पर आश्चर्यचकित रह गयी। उसने सोचा कि हालॉकि लड़की फटे कपड़े पहने हुए थी पर इतना बड़ा खजाना वह ऐसे ही तो नहीं छोड़ देगी। उसकी कुछ समझ में नहीं आया फिर भी उसने उसका कहा मान लिया।

उसने पिन्टोसमाल्टो के कमरे के दरवाजे पर उसको सोने दे कर उससे वह काउच ले लिया। उस लड़की को उसने खोटा सिक्का दे कर उससे उसका खजाना ले लिया।

जब रात आयी तारे आसमान में आये और जुगनू धरती को देखने के लिये आये तो रानी ने पिन्टोसमाल्टो के एक सोने की दवा दे दी। उसने भी वह सब किया जो कुछ उससे कहा गया।

जैसे ही वह सोने गया तो वह तो गहरी नींद सो गया जैसे चूहा सो जाता है। बेचारी बीटा। किसने सोचा था कि इस रात को जब वह अपनी सारी मुसीबतें कहने वाली थी तो वहाँ तो कोई सुनने वाला ही नहीं था। वह बहुत ही दुखी हो गयी।

उसने जो कुछ उसके लिये किया था इस सबके लिये अपने आपको ही जिम्मेदार ठहराया। उस दुखी लड़की ने अपना मुँह रात भर बन्द नहीं किया। और न ही पिन्टोसमाल्टो ने रात भर अपनी आँख खोली जब तक सुबह का सूरज नहीं निकल आया।

तब रानी नीचे उतर कर आयी और पिन्टोसमाल्टो का हाथ पकड़ कर उसने बीटा से कहा "अब तो सन्तुष्ट हो।"

बीटा ने धीमी आवाज में कहा — "भगवान करे तुम सारी ज़िन्दगी ऐसे ही सन्तुष्ट रहो क्योंकि मैंने ऐसी बुरी रात पहले कभी नहीं बितायी। मैं इसे जल्दी नहीं भूल पाऊँगी।"

बेचारी लड़की अपनी इच्छा को नहीं दबा पायी और अबकी बार उसने दूसरी कहावत को जाँचने का फैसला किया। उसने कहा "अनोला त्रनोला" यानी फव्वारा खेलता है। उसके यह कहते ही उसके सामने एक सोने का पिंजरा प्रगट हो गया जिसमें सोने की एक

सुन्दर चिड़िया बैठी थी जो कीमती पत्थरों से जड़ी हुई थी। वह बुलबुल की तरह से गा रही थी।

जब शाही स्त्रियों ने इसे देखा तो उन्होंने इस बात को जा कर रानी से कहा। रानी ने कहा कि वह खुद उस चिड़िया को देखना चाहती है। वहाँ जा कर उसने उस लड़की से वही सवाल फिर पूछा जो उसने गाड़ी के बारे में किया था और लड़की ने भी वही जवाब दिया जो उसने गाड़ी के बारे में दिया था।

रानी को फिर लगा कि यह तो वाकई बेवकूफ लड़की है। उसने उसकी विनती फिर स्वीकार कर ली। उसने उससे पिंजरा ले लिया और लड़की को उसके बदले में पिन्टोसमाल्टो के कमरे में सोने की इजाज़त दे दी। रानी ने पिन्टोसमाल्टो को फिर से सोने वाली दवा पिला कर सुला दिया।

बीटा ने जब देखा कि वह एक लाश की तरह सो रहा है तो वह उसने फिर से यह कहते हुए रोना शुरू कर दिया कि इतने रोने से तो पत्थर भी पिघल जाता पिन्टोसमाल्टो को क्या हो गया। इस तरह दूसरी रात भी उसने रोते धोते चिल्लाते बितायी।

सुबह को जब रानी उसे लेने आयी तो उसे ले कर चली गयी और बेचारी बीटा को अपनी चाल खेल कर दुखी छोड़ गयी।

सुबह को पिन्टोसमाल्टो शहर के बाहर बागीचे में अंजीर तोड़ने गया तो उसको एक चमार मिला जो जहाँ बीटा को ठहराया गया था उसी के पास वाले

कमरे में रहता था। जो कुछ बीटा बोल रही थी उसका उसको एक एक शब्द याद था।

तब उसने पिन्टोसमाल्टो से वह सब कहा जो बीटा ने रात में कहा था। अब पिन्टोसमाल्टा कुछ कुछ समझदार होता जा रहा था सो जब उसने चमार की बातें सुनीं उसे कुछ कुछ लगा कि मामला क्या रहा होगा। उसने सोच लिया कि अबकी बार वह रानी का दिया हुआ कुछ भी नहीं पियेगा।

बीटा ने तीसरी और आखिरी कोशिश की। उसने तीसरी कहावत बोली "स्कातोला मातोला" यानी सूरज चमकता है तो तुरन्त ही काफी सारी सिल्क, सोना, कढ़े हुए स्कार्फ और एक सोने का प्याला वहाँ आ गये।

रानी खुद भी इतनी सारी चीज़ें अपने आप नहीं ला सकती थी सो जब शाही स्त्रियों उन्हें देखा तो फिर जा कर रानी से कहा। रानी फिर आयी फिर से वही सवाल किया जो उसने दूसरी चीज़ों के लिये किया था और लड़की ने भी वही जवाब दिया जो उसने पहली चीज़ों के लिये दिया था।

रानी ने सोचा कि इस बेवकूफ लड़की की इच्छा पूरी करने में मेरा क्या नुकसान है सो उसने फिर उसी शर्त पर वह सब कपड़ा सोना आदि उससे ले लिया और उसे पिन्टोसमाल्टो के कमरे के दरवाजे के पास सोने की इजाज़त दे दी।

जब रात आयी तो रानी ने पिन्टोसमाल्टा को सोने से पहले फिर से सो जाने वाली दवा दी पर इस बार उसने उसे पिया नहीं बल्कि कोई बहाना बना कर वह कमरा छोड़ कर चला गया। बाहर जा कर उसने उसे थूक दिया और अपने कमरे में आ कर सो गया।

रात को बीटा आयी और अपना रोज का गाना गाने लगी कि कैसे उसने चीनी और बादाम मिला कर गूँध कर उसको बनाया। फिर कैसे उसके सोने के बाल बनाये। और उसकी ऑखें और दॉत मोती और कीमती पत्थरों से बनाये हैं।

किस तरह से वह अपनी ज़िन्दगी के लिये उसका कर्जदार है जो उसने बहुत सारे देवताओं से बहुत दिनों तक प्रार्थना कर के मॉगी है। आखीर में उसने बताया कि फिर वह किस तरह से उससे चुरा लिया गया।

फिर कैसे वह मुश्किलें उठा कर उसे ढूँढने निकली है। दो रातें तो उसने यहॉ भी बिता दी हैं। इसके लिये उसने दो खजाने दिये थे और अब अपने तीसरे और आखिरी खजाने को दे कर वह अपनी आखिरी रात बिताने आयी है। इसके बाद भी उसने एक शब्द भी इससे सुना नहीं। अब उसकी आशाओं और ज़िन्दगी की यह आखिरी रात है।

इस रात तो पिन्टोसमाल्टो जागा हुआ था सो उसने यह सब कुछ सुना जो उसने कहा। पर उसको लगा कि जैसे यह सब सपना था। वह उठा और उसे गले लगा लिया।

रात जब तारों के नाच को बताने के लिये आने लगी तो वह तुरन्त ही रानी के कमरे में गया जहाँ वह गहरी नींद सो रही थी। पिछले महीनों की परेशानी उठाने के बदले में उसने वहाँ से वे सारी चीज़ें लीं जो वह बीटा से लायी थी उसने उसकी मेज में से रत्न और पैसे लिये और अपनी पत्नी को साथ ले कर वहाँ से तुरन्त ही चल दिया।

दोनों बीटा के पिता के घर आये जहाँ उनको वह सही सलामत मिल गया। वह उनको देख कर एक **15** साल के बच्चे की तरह से खुश हो गया।

पर रानी को जब न तो भिखारिन लड़की दिखाायी दी न पिन्टोसमाल्टो दिखायी दिया न लड़की से लिया हुआ सामान ही कहीं दिखायी दिया तो वह तो अपने बाल नोचने लगी और कपड़े फाड़ने लगी और इस कहावत को याद करने लगी —

जो खुद धोखा देता है उसे अगर कोई दूसरा धोखा दे तो उसे शिकायत नहीं करनी चाहिये

28 5–4 सुनहरी जड़[116]

कोई आदमी जो बहुत ज़्यादा उत्सुक होता है और उससे ज़्यादा जानने की इच्छा रखता है जितना कि उसको जानना चाहिये वह हमेशा ही अपनी किस्मत के कमरे में आग लगाने के लिये दियासलाई हाथ में लिये चलता है। और जो दूसरे के मामलों में टॉग अड़ाता है वह अपने मामलों में हमेशा ही हारता है। क्योंकि सामान्य रूप से जो खजाना ढूँढने के लिये गड्ढा खोदते हैं वह खुद ही किसी दिन गड्ढे में गिर जाते हैं जैसा कि इस कहानी में एक माली की बेटी के साथ होता है।

एक बार की बात है कि एक माली था जो इतना गरीब था कि वह कुछ भी करता पर अपने परिवार के लिये ठीक से रोटी भी नहीं जुटा पाता था। सो उसने अपनी तीन बेटियों को तीन छोटे सूअर दिये जिनको वे पाल सकें ताकि वे अपने लिये कुछ दहेज इकट्ठा कर सकें।

पास्कूज़ा और सिसे[117] जो दो बड़ी बेटियॉ थीं अपने अपने सूअरों को पास के मैदान में चराने ले गयीं। पर वे पारमैटैला[118] जो उनकी सबसे छोटी बहिन थी वे उसको अपने साथ नहीं ले गयीं और उसे वापस भेज दिया।

सो पारमैटैला अपने सूअर को चराने के लिये एक जंगल में ले गयी जहॉ साये धूप की बेरहमियों से लड़ने के लिये खड़े थे। वहॉ से

[116] The Golden Root. (Tale No 28) Day 5, Tale No 4
Compare it to “Cupid and Psyche”

[117] Pascuzza and Cice – names of the two elder daughters of the gardener

[118] Parmetella

वह एक घास के मैदान में चली गयी। उस मैदान के बीच में एक फव्वारा लगा हुआ था जैसे किसी सराय की मालकिन ठंडा पानी बेचने के लिये खड़ी हो। उसकी चॉदी जैसी जीभ सबको ठंडे पानी के लिये बुला रही हो।

वहॉ पहुँच कर उसको एक पेड़ दिखायी दे गया जिसकी सोने की पत्तियॉ थीं। उसने उसमें से एक पत्ती तोड़ ली और उसको अपने पिता के पास ले गयी। उसके पिता ने उसे **20** डकैट से भी ऊॅची कीमत पर बेच दिया। उसने उसकी हालत के कम से कम एक छेद को भरने में सहायता की।

जब उसने पारमैटैला से पूछा कि वह उसे कहॉ से मिली तो वह बोली — "पिता जी आप इसे रखें और कोई सवाल न पूछें क्योंकि इससे हमारी खुशकिस्मती बर्बाद हो सकती है।"

अगले दिन जब वह फिर घर लौट कर आयी तो उसने फिर वही किया। अब वह रोज ऐसा ही करने लगी जब तक कि उस पेड़ की सारी पत्तियॉ खत्म नहीं हो गयीं। ऐसा लगता था जैसे कि पतझड़ की हवाओं ने उस पेड़ की पत्तियों को उड़ा दिया हो।

उसके बाद उसने देखा कि उस पेड़ की एक बड़ी सी सोने की जड़ थी। उसने उसे उखाड़ने की कोशिश की पर वह उसे अपने हाथों से नहीं उखाड़ सकी। सो वह घर गयी और एक कुल्हाड़ी ले आयी। उससे उसने जड़ के चारों तरफ खोदा फिर पेड़ के तने को हाथ से ऊपर उठा लिया।

उसने वहॉ क्या देखा? उसने देखा कि वहॉ तो एक बड़ा सा गड्ढा था जिसमें एक सुन्दर पत्थर की बनी सीढ़ियॉ नीचे तक चली गयी थीं।

पारमैटैला को बहुत उत्सुकता हुई सो वह उस सीढ़ी से नीचे उतर गयी। वहॉ जा कर वह एक बड़ी और गहरी गुफा में पहुॅच गयी। वहॉ वह एक मैदान में आ गयी जहॉ एक बहुत सुन्दर महल खड़ा था जहॉ सोने और चॉदी के रास्ते थे। जहॉ भी वह देखती थी वहॉ उसको मोती और दूसरे कीमती जवाहरात दिखायी देते थे।

जब पारमैटैला आश्चर्य में भरी यह सब देख रही थी तो उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि इतना सुन्दर महल होते हुए भी वहॉ कोई नहीं था। फिर वह एक कमरे में चली गयी।

उसने देखा कि उसमें बहुत सारी तस्वीरें लगी हुई थीं उन पर बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ें बनी हुई थीं – जैसे खास कर के आदमी की अज्ञानता को बहुत अच्छा समझा गया था। जिसने तराजू पकड़ रखी थी उसी के साथ अन्याय हो रहा था। भगवान बदला लेने के लिये लोगों को घायल कर रहा था।

उसी कमरे में एक बहुत ही शानदार मेज लगी थी जिस पर खाने पीने का सामान रखा हुआ था। वहॉ किसी को न देख कर वह मेज पर खाना खाने बैठ गयी।

जब वह खाना खा रही थी तो एक बहुत सुन्दर गुलाम वहॉ प्रगट हुआ और उससे बोला — “यहीं ठहरना। यहॉ से जाना नहीं

क्योंकि मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ और तुम्हें दुनियाँ की सबसे खुश स्त्री बना कर रखूँगा।"

डरते हुए भी पारमैटैला को यह सौदा बुरा नहीं लगा। उसने उसको हाँ कर दी। तुरन्त ही हीरों जड़ी एक गाड़ी उसको दी गयी जिसको चार सुनहरे घोड़े खींच रहे थे। उनके पन्ने और लाल जड़े पंख थे। जो उसको हवा में घुमाने के लिये उड़ चले।

सोने के कपड़े पहने हुए बहुत सारे बन्दर उसकी सेवा में रखे गये। उन्होंने उसको सिर से पैर तक सजा दिया जिससे अब वह एक रानी लगने लगी।

जब रात आयी और सूरज ने छोटे छोटे कीड़ों से बच कर भारत की नदियों पर सोने जाने के समय अपनी रोशनी बुझा दी गुलाम ने पारमैटैला से कहा — "अब तुम इस बिस्तर में सोने के लिये चली जाओ पर याद से सोने से पहले मोमबत्ती बुझा देना। मेरे कहे पर ध्यान देना नहीं तो तुम्हारा बहुत बुरा होगा।"

पारमैटैला ने वैसा ही किया जैसा कि उससे कहा गया था। पर जैसे ही उसने अपनी आँखें बन्द कीं उसने देखा कि उस हब्शी ने अपने आपको एक सुन्दर नौजवान में बदला और उसके पास आ कर लेट गया।

पर अगली सुबह जब सुबह आसमान के खेत में अंडे ढूँढने गयी तो नौजवान उठा अपने पुराने रूप में आया और पारमैटैला को आश्चर्य और उत्सुकता में पड़ा छोड़ कर वहाँ से चला गया।

अगले दिन की रात को भी जब पारमैटैला सोने गयी तो वह पिछली रात की तरह से मोमबत्ती बुझाने के बाद ही बिस्तर पर लेटी। उस रात भी वह नौजवान फिर वहाँ आया और सोने के लिये उसके बराबर में आ कर लेट गया।

जैसे ही वह सोया कि पारमैटैला उठी उसने एक मोमबत्ती जलायी और उसे हाथ में लिये लिये उसके चेहरे से चादर हटायी और देखा तो काला रंग तो हाथी दाँत में बदल गया था और कोयला चौक में बदल गया था। उसका तो मुँह खुला का खुला रह गया।

जैसे वह मुँह खोले उसको देखती रही और प्रकृति के काम की तारीफ करती रही नौजवान की आँख खुल गयी। उसने पारमैटैला को डाँटना शुरू किया — "ओ मेरी दुश्मन। तुम्हारी इस देखने की उत्सुकता की मुझे सात साल की सजा भुगतनी पड़ेगी। पर अब इसे भूल जाओ और यहाँ से भाग जाओ। मेरी आँखों के सामने से दूर हो जाओ। तुमको नहीं मालूम कि तुमने कौन सी खुशकिस्मती खो दी है।"

यह कह कर वह वहाँ से पारे की तरह गायब हो गया।

बेचारी लड़की ने सिर जमीन तक झुका कर महल छोड़ दिया ठंडा और डर से भरा। जब वह बाहर आयी तो उसे एक परी मिली जिसने उससे कहा — "मेरी बच्ची। मुझे तुम्हारी बदकिस्मती पर बड़ा अफसोस है। ओ नाखुश लड़की। तुम एक कसाईखाने की

तरफ जा रही हो। जहाँ तुम एक बाल भर चौड़े पुल पर से गुजरोगी। तुमको उस खतरे से बचाने के लिये लो ये सात अटेरन लो ये सात अंजीर लो और एक शीशी शहद लो और ये सात जोड़ी लोहे के जूते लो।

ये जूते तुम पहन लो और यहाँ से बिना कहीं रुके चलती चली जाओ जब तक ये फट न जायें। तब तुमको एक मकान के छज्जे पर सात स्त्रियाँ खड़ी मिलेंगी। वे ऊपर से नीचे तक सूत कात रही होंगी। उनका धागा लाश की एक हड्डी के चारों तरफ लिपट रहा होगा। वहाँ पहुँच कर तुम बिल्कुल चुपचाप छिपी हुई खड़ी रहना।

जब उनका धागा नीचे आये तो उसमें से हड्डी निकाल लेना और एक शहद लिपटा अटेरन उसमें बाँध देना। जहाँ उसका बटन होता है वहाँ एक अंजीर लगा देना। सो जैसे ही वे स्त्रियाँ अपने अपने अटेरन ऊपर खींचेंगी और शहद चखेंगी वे कहेंगी —

जिसने भी मेरा अटेरन मीठा बनाया है
बदले में उसकी किस्मत अच्छी होगी

यह कहने के बाद वे एक दूसरे के बाद कहेंगी — "ओ तो वह तुम हो जो हमारे लिये मीठी चीज़ ले कर आयीं।"

तो तुम यही कहना — "नहीं, क्योंकि तुम मुझे खा जाओगी।"

वे कहेंगी — "हम अपनी चम्मच की कसम खाते हैं कि हम तुम्हें नहीं खायेंगे।"

पर तब भी तुम उनकी बात नहीं मानना। वे फिर कहेंगी — "हम अपने थूक की कसम खाते हैं कि हम तुमको नहीं खायेंगे।"

पर तुम तब भी उनकी बात नहीं मानना। वे फिर कहेंगी — "हम अपनी झाड़ू की कसम खाते हैं कि हम तुमको खायेंगे नहीं।"

तुम तब भी उनका विश्वास नहीं करना। वे फिर कहेंगी — "हम अपनी बालटी की कसम खाते हैं कि हम तुमको नहीं खायेंगे।"

पर तुम तब भी उनकी बातों में नहीं आना। तुम एक शब्द भी नहीं बोलना नहीं तो तुम्हें अपनी जान खोनी पड़ेगी। वे फिर कहेंगी — "हम गरज बिजली की कसम खाते हैं कि हम तुमको नहीं खायेंगे।"

तब तुम हिम्मत कर के ऊपर चढ़ जाना क्योंकि उस समय वे तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगी।"

जब पारमैटैला ने यह सुना तो उसने लोहे के जूते पहने और चलती चली गयी। पहाड़ों के ऊपर घाटियों में से हो कर।

इस तरह वह सात साल तक चलती रही तब कहीं जा कर उसके लोहे के जूते फटे। तभी वह एक बड़े मकान के सामने आयी जिसमें एक छज्जा लग हुआ था। उसने देखा कि उस पर सात स्त्रियॉ खड़ी हुई सूत कात रही हैं। उसने वही किया जो परी ने उससे कहा था।

काफी देर बाद उन्होंने गरज बिजली की कसम खायी तब वह उनके सामने आयी और ऊपर चढ़ गयी। तो सातों स्त्रियाँ बोलीं — "ओ गद्दार। तो वह तू ही है जिसकी वजह से हमारे भाई को हब्शी की शक्ल में हमसे दूर दो बार सात सात साल गुफा में रहना पड़ा।

पर छोड़ो। हालाँकि तुम बहुत होशियार हो जो तुमने कसम खिला कर हमारी जबान बन्द कर रखी है तुमको पहला मौका मिलते ही दोनों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। पर सुनो अब तुम यह करो।

तुम इस गड्ढे के पीछे छिप जाओ। अभी हमारी माँ आयेगी जो तुमको देखते ही निगल जायेगी। तुम खड़ी हो कर उसको पकड़ लेना और कस कर पकड़े रहना। उसे तब तक नहीं छोड़ना जब तक वह गरज बिजली की कसम न खा ले कि वह तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा।"

परमैटैला ने वैसा ही किया जैसा उससे उन स्त्रियों ने करने के लिये कहा था। ओग्रैस[119] ने आग के फावड़े की, चरखे की, धागे की रील की, खूँटी आदि की कसमें खाने के बाद गरज बिजली की कसम खायी।

तब पारमैटैला ने उसको छोड़ा और उसके सामने आयी। उसको देख कर वह बोली — "तूने इस बार तो मुझे पकड़ लिया पर ध्यान रखना ओ गद्दार। पहली बारिश के दिन ही मैं तुझे लावा भेज दूँगी।"

---

[119] Ogress – feminine of Ogre

एक दिन जब ओग्रेस पारमैटैला को खाने का मौका ढूँढ रही थी तो उसने 12 थैले बीज लिये – मटर चना मसूर राजमा लूपिन[120] आदि और उन सबको मिला दिया और पारमैटैला से कहा कि वह उन सबको अलग अलग कर दे ताकि एक से बीज एक साथ हो जायें। यह सब शाम तक हो जाना चाहिये। अगर न हुआ तो तो मैं तुझे टार्ट[121] की तरह से खा जाऊँगी।"

बेचारी पारमैटैला उनको बीनने बैठ गयी और रोते हुए बोली — "ओ माँ। यह सोने की जड़ तो मेरे लिये दुश्मन हो गयी। जबसे मैंने एक काले चेहरे को गोरा होते देखा तबसे तो मेरे लिये सब कुछ काला हो गया।

मैं तो बर्बाद हो गयी मेरा तो किया धरा सब बेकार हो गया। मेरे पास तो अब कोई सहायता भी नहीं है। मुझे तो अभी ऐसा लग रहा है जैसे मैं ओग्रेस के मुँह में हूँ। यहाँ तो कोई नहीं है जो मेरी सहायता करे या जो कोई मुझे कोई सलाह दे या कोई मुझे तसल्ली दे।"

---

120 A kind of seed. See its picture above

121 Tart is a western sweet – sweet and sour.

जब वह इस तरह से रो रही थी तो लो गरज बिजली वहाँ आ पहुँचा क्योंकि जादू से उसको जो शहर से बाहर निकालने वाला शाप दिया गया था वह अब खत्म हो चुका था।

हालाँकि वह पारमैटैला से गुस्सा था तब भी अभी तक उसका खून पानी में नहीं बदला था। उसने उसको दुखी देखा तो उससे कहा — "ओ गद्दार तुम क्यों रोती हो।"

तब उसने उसको उसकी माँ के बुरे व्यवहार के बारे में बताया और उससे विनती की कि वह उसको मर जाने दे। उसको उसे खा जाने दे। पर गरज बिजली ने उसको समझाया — "शान्त हो जाओ अपने दिल को सँभालो क्योंकि जैसा उसने कहा है वैसा नहीं होगा।"

कह कर उसने वे सारे बीज फैला दिये और बहुत सारी चींटियों को बुलाया जो वहाँ आ कर उन सब बीजों को अलग अलग ढेर में इकट्ठा करने में लग गयीं। पारमैटैला ने फिर उनको थैलों में भर दिया।

जब शाम को ओग्रैस घर लौटी और देखा कि उसका काम तो हो चुका है तो वह तो बहुत निराश हो गयी और चिल्ला कर बोली — "उस कुत्ते गरज बिजली ने मेरे साथ यह चाल खेली है पर मैं तुझे बच कर नहीं जाने दूँगी। यह ले यह मोटा कपड़ा ले इनसे **12** गद्दे बनाये जा सकते हैं। शाम तक इन गद्दों में पंख भर देना नहीं तो मैं तेरी चटनी बना दूँगी।"

बेचारी लड़की ने वह कपड़ा ले लिया और जमीन पर बैठ कर रोने लगी। उसकी दोनों आँखों से फव्वारे निकल रहे थे। पर उसी समय गरज बिजली वहाँ प्रगट हो गया और बोला — "ओ गद्दार तुम क्यों रोती हो। मत रो। यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं तुम्हें किनारे लगाऊँगा।

तुम अपने बालों को खोल दो। बारहों गद्दों को जमीन पर फैला दो और फिर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू करो कि चिड़ियों का राजा मर गया है फिर देखना कि क्या होता है।"

पारमैटैला ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था। लो देखो सारा आसमान चिड़ियों से काला हो गया। उन्होंने अपने पंख फड़फड़ाते हुए अपने बहुत सारे पंख नीचे गिरा दिये। एक घंटे में ही सारे गद्दे पंखों से भर गये।

शाम को जब ओग्रैस घर आयी तो बारहों गद्दे तैयार देख कर वह तो गुस्से से भर गयी। वह बस करीब करीब फट ही पड़ी — "इस गरज बिजली ने मुझे तंग करने की सोच रखा है। पर मुझे बन्दर की पूँछ में बाँध कर घसीटा जाये अगर मैं इसको बच कर भाग जाने दूँ तो।'

तब उसने पारमैटैला से कहा — "तू जल्दी से मेरी बहिन के घर चली जा और उससे मेरा बाजा माँग ला क्योंकि मैंने इरादा कर लिया कि मैं गरज बिजली की शादी कर दूँगी और फिर हम राजा के लिये एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम करेंगे।"

उसी समय उसने अपनी बहिन के पास भी एक सन्देश भेजा कि जब यह लड़की तुम्हारे पास बजा माँगने के लिये आये तो इसको तुरन्त ही पका देना। फिर मैं भी आ कर इस दावत में हिस्सा लूँगी।

पारमैटैला को यह काम पिछले दिये कामों से आसान लगा सो वह बहुत खुश हुई। सोचने लगी कि शायद अब मौसम अच्छा होने वाला है। अफसोस आदमी का फैसला कितना गलत होता है।

वह चल दी। रास्ते में उसे गरज बिजली मिला। उसने उसको जल्दी जल्दी जाते देखा तो बोला — "ओ नीच लड़की। तुम इतनी जल्दी जल्दी कहाँ जा रही हो। क्या तुमको पता नहीं कि तुम मरने के लिये जा रही हो।

तुमने अपने आप ही अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल दी हैं। और चाकू तेज़ कर लिया है। और जहर तैयार कर लिया है। क्या तुमको मालूम है कि तुमको ओग्रैस के पास उसके खाने के लिये भेजा जा रहा है।

पर तुम डरो नहीं और मेरी बात सुनो। लो यह रोटी लो यह घास का गट्ठर लो और यह पत्थर लो। जब तुम मेरी मौसी के घर के दरवाजे पर आओ तुमको वहाँ एक बुलडौग मिलेगा उसको तुम यह रोटी दे देना तो यह उसका मुँह बन्द कर देगी।

कुत्ते के बाद तुम्हें खुला हुआ एक घोड़ा मिलेगा जो तुमको कुचलने के लिये तुम्हारे ऊपर कूदेगा उसको तुम यह घास खिला देना तो उसके पाँव बँध जायेंगे।

आखीर में तुम एक दरवाजे के सामने आओगी जो बराबर खुल भिड़ रहा होगा। तुम उसके सामने यह पत्थर रख देना तो तुम उसके गुस्से से बच जाओगी।

उसके बाद तुम सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर चली जाना। वहाँ तुमको एक बच्चे को लिये हुए एक ओग्रैस मिलेगी। उसी के पास ओवन रखा होगा जो तुमको भूनने के लिये गर्म होगा।

वह तुमसे कहेगी कि लो इस बच्चे को पकड़ लो मैं ज़रा अपने वाद्य ले आऊँ। पर ध्यान रहे वह केवल अपने दाँत तेज़ करने जायेगी ताकि वह तुम्हारे टुकड़े कर सके।

जैसे ही वह जाये तो बिना किसी रहम के उस बच्चे को ओवन में फेंक देना और वे वाद्य उठा लेना जो दरवाजे के पीछे रखे हैं। और ओगरैस के आने से पहले ही वहाँ से भाग निकलना नहीं तो बस तो तुम गयीं। ये वाद्य एक बक्से में रखे हैं। मगर तुम उस बक्से को खोलना नहीं। नहीं तो तुम पछताओगी।"

पारमैटैला ने वही किया जो गरज बिजली ने कहा था। पर जब वह वाद्यों का बक्सा ले कर लौट रही थी तो उत्सुकता से उसने वह बक्सा खोल लिया।

जैसे ही उसने बक्सा खोला तो लो देखो बक्से में से सब निकल कर इधर उधर उड़ गये – बाँसुरी बैग पाइप सब इधर उधर उड़ बजने लगे। पारमैटैला एक बार फिर अपना सिर धुनती खड़ी रह गयी।

इस बीच ओग्रैस सीढ़ियॉ उतर कर ऊपर से नीचे उतरी और पारमैटैला को वहॉ न देख कर वह खिड़की पर गयी और दरवाजे से बोली — "उस गद्दार को कुचल दो।"

पर दरवाजे ने जवाब दिया — " मैं उस लड़की का कोई बुरा नहीं करूँगा। उसने तो मुझे सीधा खड़ा रखा है।"

उसके बाद ओग्रैस ने घोड़े से कहा — "चोर को रौंद दो।"

घोड़ा बोला — "जाने दो उस बेचारी को। उसने तो मुझे घास खिलायी है।"

आखीर में ओग्रैस ने कुत्ते से कहा — "उस रोग को काट ले।"

पर कुत्ता बोला — "मैं तो उसको बाल भर भी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा क्योंकि उसने तो मुझे खाने के लिये रोटी दी है।"

उधर पारमैटैला उन वाद्यों के पीछे भाग रही थी जो उसने बक्सा खोल कर बाहर निकाल दिये थे। गरज बिजली एक बार फिर उसके सामने प्रगट हुआ और उस पर बुरी तरह से नाराज होता हुआ बोला — "ओ गद्दार। क्या तुम अपने आपसे कुछ नहीं सीखोगी? तुम्हारी इस जानलेवा उत्सुकता ने तुम्हें आज इस जगह ला खड़ा किया है।"

उसने एक सीटी बजायी और सारे वाद्य उस बक्से में आ कर इकट्ठा हो गये। उसने कहा "जाओ इनको मेरी मॉ के पास ले जाओ।"

पर जब ओग्रेस ने उसको देखा तो चिल्लायी — "ओ मेरी बेदर्द किस्मत। मेरी तो अपनी बहिन ही मेरे खिलाफ है। वह भी मुझे खुशी देना नहीं चाहती।"

इसी बीच नयी दुलहिन वहाँ आ पहुँची – एक छोटे कीड़े की तरह, बदसूरत, बुरा साया, डरावनी। साथ में उसके सैंकड़ों फूल और पेड़ों की डंडियाँ थीं जिनको देख कर वह ऐसी लगती थी जैसे कोई नयी खोली हुई सराय हो।

ओग्रेस ने उसके लिये एक बहुत ही शानदार दावत का इन्तजाम किया। क्योंकि वह बुराइयों से भरी हुई थी सो उसने अपनी सीट एक कुँए के पास चुनी जहाँ उसने अपनी सात बेटियों को बिठाया। उनके हर एक के एक हाथ में एक एक टार्च लगी थी। पर उसने पारमैटैला को दो टार्चें दीं और उसको कुँए के किनारे पर बिठा दिया।

यह सब उसने इसलिये किया था ताकि कभी उसको नींद का झटका लगे और वह कुँए में गिर जाये।

जब खाना इधर से उधर परसा जा रहा था तब उनका खून गर्म होने लगा। तो गरज बिजली जिसका नयी दुलहिन को देख कर जी खराब हो गया था पारमैटैला से बोला — "ओ गद्दार। क्या तुम मुझे प्यार करती हो?"

पारमैटैला बोली — "छत तक।"

वह बोला — "अगर तुम मुझे प्यार करती हो तो मुझे एक चुम्बन दो।"

पारमैटैला बोली — "नहीं। तुम्हारे पास तो एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी है। भगवान तुम्हारे लिये उसकी 100 साल तक रक्षा करे और तन्दुरुस्त रखे और तुम्हारे बहुत सारे बेटे हों।"

तब नयी दुलहिन बोली — "यह तो साफ दिखायी दे रहा है कि तुम बहुत सीधी हो। तुम अगर 100 साल की भी हो जाओ तो भी ऐसी ही सीधी रहोगी और एक कपटी की तरह से नाटक करती रहोगी।

तुम एक इतने सुन्दर नौजवान को चुम्बन देने के लिये मना कर रही हो जबकि मैं तो एक चरवाहे को दो चेस्टनट के बदले में अपना चुम्बन लेने देती।"

यह सुन कर दुलहा तो गुस्से में भर गया और मेंढक की तरह फूल गया सो उसका खाना तो गले में ही अटका रह गया। खैर वह एक बनावटी हँसी हँसा और वह कड़वी गोली निगल ली। उसने सोचा यह हिसाब तो वह बाद में सिलटेगा।

पर जब मेजें वहाँ से हटा दी गयीं और ओग्रैस और उसकी बहिनें वहाँ से चली गयीं गरज बिजली ने नयी दुलहिन से कहा — "प्रिये तुमने देखा कि इस घमंडी लड़की ने किस तरीके से मेरे चुम्बन को मना कर दिया।"

दुलहिन बोली — “जाने भी दो यह अभी बच्ची है जो उसने एक इतने सुन्दर आदमी को चुम्बन देने से मना कर दिया। मैंने तो एक चरवाहे को केवल दो चेस्टनट के लिये ही अपने आपको चूमने दिया था।”

गरज बिजली अब अपने आपको अपने आपे में नहीं रख सका। मस्टर्ड[122] अब उसकी नाक तक पहुँच चुकी थी। बिजली की सी तेज़ी से उसने एक चाकू निकाला और दुलहिन के शरीर में घुसा दिया। फिर वहीं एक कमरे में गड्ढा खोद कर उसको उसमें गाड़ दिया।

फिर उसने पारमैटैला को गले लगाया और बोला — “तुम तो मेरा रत्न हो। सब स्त्रियों में फूल हो। आदरणीय हो। मेरी तरफ देखो अपना हाथ मुझे दो मेरे पास आओ और मुझे चूम लो क्योंकि जब तक यह दुनियाँ रहती है मैं तब तक तुम्हारा ही रहूँगा।”

अगले दिन जब सुबह हुई सूरज ने अपने आग के घोड़ों को उनकी घुड़साल में जगाया और उनको घास चराने के लिये सुबह की लगायी हुई घास के मैदान में ले गया तो ओग्रैस नये शादीशुदा जोड़े के लिये ताजा अंडे ले कर आयी ताकि नौजवान पत्नी यह कह सके कि “वही खुश है जो शादीशुदा है और जिसकी सास है।”

पर पारमैटैला को अपने बेटे की बाँहों में देख कर और यह जान कर कि क्या हो चुका है वह अपनी बहिन के पास भागी गयी

[122] Mustard is a kind of yellow colored sauce to be eaten with several kinds of food items.

यह सलाह लेने के लिये कि वह इसको अपने बेटे से बचा कर कैसे अपनी ऑखों से दूर करे।

पर जब उसने देखा कि उसकी बहिन ने अपनी बेटी की मौत की वजह से दुखी हो कर अपने आपको ओवन में डाल कर जला लिया तो वह बहुत निराश हो गयी। उसने अपने आपको एक भेड़ में बदल लिया और दीवार से सिर टकराने लगी जब तक कि उसकी खोपड़ी नहीं टूट गयी।

इसके बाद गरज बिजली ने मारपैटैला की अपनी बहिनों से सुलह करवा दी। अब वे सब खुशी से रहने लगे। उन्होंने यह कहावत सच कर दी —

धीरज सब कुछ जीत लेता है।

29 5–5 सूरज चाँद और तालिया[123]

यह तो बहुत ही जानी पहचानी कहावत है कि बेरहम आदमी खुद अपना ही फाँसी लगाने वाला होता है। जो आसमान की तरफ पत्थर फेंकता है अक्सर वह टूटे सिर आता है। जबकि सिक्के का दूसरा पहलू हमको बताता है कि भोलापन अंजीर के पेड़ की लकड़ी की ढाल है जिसके ऊपर बुराई की तलवार को तोड़ा जाता है या उसकी धार मारी जाती है। ताकि जब कोई गरीब आदमी मरने का और दफ़न हो जाने का बहाना बनाता है तो वह फिर से हाड़ माँस का बन कर फिर से ज़िन्दा हो जाये। ऐसी ही बात आप अब इस कहानी में देखेंगे जो मैं अब आप सबको अपनी यादों के बक्से में से निकाल कर सुनाने जा रही हूँ।

एक बार की बात है कि एक बहुत बड़ा लौर्ड था। उसके घर में एक बेटी ने जन्म लिया जिसका नाम उन्होंने तालिया रखा। लौर्ड ने बहुत सारे ज्योतिषियों और विद्वानों को बुला कर उसके भविष्य के बारे में पूछताछ की।

बहुत देर तक आपस में सलाह कर के उन्होंने बताया कि रुई में किसी चीज़ से उसको बहुत खतरा है सो लौर्ड ने एक हुक्मनामा निकलवा दिया कि उसके घर में किसी तरह की रुई न लायी जाये। उसने सोचा कि इस तरह से वह खतरे को सम्भावना को कम कर सकेगा।

जब तालिया बड़ी हो गयी तो एक दिन वह खिड़की पर खड़ी थी। उसने एक बुढ़िया को देखा जो सूत कातती जा रही थी। इससे

[123] Sun Moon and Talia. (Tale No 29) Day 5, Tale No 5

पहले उसने न तो कभी तकली देखी थी और न कभी अटेरन ही देखा था। जब वह बुढ़िया धागे को ऐंठती और घुमाती तो वह उसको देख कर बहुत खुश हो गयी। उसकी उत्सुकता बढ़ गयी तो उसने उसे ऊपर आने के लिये कहा।

जब वह ऊपर आ गयी तो तालिया बुढ़िया के हाथ से अटेरन हाथ में ले कर उसमें से धागा खींचने लगी तो इत्तफाक से रुई में लगा हुआ एक तिनका उसकी उँगली के नाखून के नीचे घुस गया और वह जमीन पर मर कर गिर पड़ी। इसको देख कर बुढ़िया ने जल्दी से अपनी तकली और अटेरन उठायी और तुरन्त ही नीचे चली गयी।

जब पिता ने यह अनहोनी खबर सुनी कि उसकी बेटी तालिया पर इतना बड़ा पहाड़ टूट पड़ा है तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा। कुछ देर रोने के बाद में उसने तालिया के शरीर को महल में ब्रोकेड की छतरी के नीचे बिठा कर उस महल के सब दरवाजे बन्द कर दिये।

उसो वह महल ही छोड़ दिया जो उसके ऊपर इतनी बदकिस्मती ले कर आया था ताकि उसके दिमाग से उसकी सारी यादें निकल जायें।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि एक राजकुमार शिकार खेलने के लिये निकला। एक बाज़ उसके हाथ से बचने लिये उस महल की खिड़की पर जा कर बैठ गया जिसमें तालिया लेटी हुई थी।

जब राजा ने यह देखा कि चिड़िया उसके पुकारने पर भी नहीं आयी तो उसने सोचा कि शायद उस महल में कोई रहता हो उसने अपने नौकरों को दरवाजे पर खटखटाने के लिये भेजा।

जब इस खटखटाने का भी कोई जवाब नहीं मिला तो उसने अपने नौकरों को एक सीढ़ी लाने के लिये कहा ताकि वह खुद उस महल में अन्दर जा कर उसे देख सके।

सीढ़ी आ गयी तो वह उस पर चढ़ कर महल के अन्दर पहुँचा। उसने सारा महल देखा। पर वहाँ तो उसको कोई ज़िन्दा आदमी नहीं मिला यह देख कर तो वह हक्का बक्का सा खड़ा रह गया।

आखिर वह एक कमरे में आया जिसमें तालिया लेटी हुई थी वह वहाँ लेटी हुई ऐसी लग रही थी जैसे किसी ने उस पर जादू डाल दिया हो।

जब राजा ने उसको देखा तो उसको पुकारा पर बेकार क्योंकि वह फिर भी सोती ही रही जागी ही नहीं। उसने उसको कितनी भी ज़ोर से पुकारा पर वह नहीं बोली और न ही उसने अपनी आँखें खोलीं।

कुछ देर तक तो वह उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करता रहा फिर वह अपने राज्य अपने महल लौट आया। वहाँ आ कर वह वह सब भूल गया जो उसके साथ महल में हुआ था।

इस बीच, मुझे पता नहीं, कहीं से घूमते घामते दो जुड़वाँ बच्चे – एक लड़का और एक लड़की महल में आ पहुँचे। वे दोनों जवाहरात जैसे लगते थे। वहाँ उन्होंने तालिया को जादू की दशा में पड़े देखा तो पहले तो वे डर गये क्योंकि उन्होंने उसको उठाने की कोशिश की पर वह उठी ही नहीं।

पर फिर हिम्मत से लड़की ने तालिया की एक उँगली अपने मुँह में डाल ली कि हो सकता है कि उसके काटने से तालिया जाग जाये। इत्तफाक से यह वही उँगली थी जिसमें रुई का तिनका फँसा हुआ था सो इससे हुआ क्या कि तालिया की उँगली में फँसा हुआ तिनका निकल गया।

जैसे ही तिनका निकला वैसे ही वह जाग गयी। उसको लगा जैसे वह किसी गहरी नींद से जाग कर उठी हो। जब उसने ये दोनों रत्न देखे तो उसने उनको बहुत प्यार किया। उसने उनको अपने गले से लगाया और अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार किया।

पर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह उस घर में इन दो बच्चों के साथ अकेली थी। कोई अदृश्य हाथ उनके लिये खाना पानी ले आते थे।

कुछ समय बाद राजा को तालिया का ध्यान आया तो वह एक दिन मौका निकाल कर जब वह शिकार के लिये गया तो तालिया के पास भी गया। जब उसने उसे जागा हुआ पाया और उसके साथ दो सुन्दर बच्चे भी देखे खुशी के मारे उसकी तो बोली ही नहीं निकली।

फिर राजा ने तालिया को बताया कि वह कौन था तो दोनों को एक अच्छा साथ और दोस्ती हो गयी। वह वहाँ कई दिनों तक रहा और जब वह वहाँ से चला तो यह वायदा कर के चला कि वह लौट कर आयेगा और उसे यहाँ से ले जायेगा।

जब राजा अपने राज्य चला गया तो वह तालिया और बच्चों को ही याद करता रहता। वह जब खाता तब भी तालिया का नाम उसकी जबान पर रहता और जब वह सोने जाता तभी भी वह तालिया सूरज और चाँद[124] को याद करता रहता।

राजा की सौतेली माँ थी। उसके शिकार पर बहुत दिनों तक बाहर रहने से उसको कुछ शक हो गया कि उसका बेटा इतने दिनों तक कहाँ रहता है और जब वह उसको तालिया सूरज और चाँद पुकारते सुनती तो उसका गुस्सा ऊपर चढ़ जाता।

एक दिन उसने राजा के सेक्रेटरी से कहा — "देख लो तुम बहुत बड़े खतरे में हो। तुम एक कुल्हाड़ी और एक पत्थर के टुकड़े के बीच में हो। मैं तुम्हें बहुत अमीर कर दूँगी बताओ कि किसने मेरे

[124] Sun and Moon were the names of the twins.

सौतेले बेटे को मोहित कर रखा है। पर अगर तुम मुझसे सच छिपाओगे तो तुम्हें पछताना पड़ेगा।

सेक्रेटरी को एक तरफ तो डर लगा दूसरी तरफ उसको लालच हुआ। वह लालच जो इज़्ज़त की आँखों पर पट्टी बाँध देता है। वह लालच जो न्याय को अन्धा कर देता है। वह लालच जो घोड़े की पुरानी नाल[125] में विश्वास पैदा कर देता है। सेक्रेटरी ने रानी माँ को सब कुछ सच सच बता दिया।

यह सुन कर रानी माँ ने सेक्रेटरी को राजा का नाम ले कर तालिया के पास भेजा कि राजा बच्चों को देखना चाहते हैं इसलिये उन्होंने उनको बुलाया है।

तालिया को यह सुन कर बहुत खुशी हुई और उसने उनको राजा के पास भेज दिया। रानी माँ ने रसाइये को बुला कर उन बच्चों को खाने में पकाने के लिये कहा। और कहा कि वह उनको कई तरह से बनाये और उसके नीच बेटे को खाने के लिये दे।

रसोइया बहुत नर्म दिल आदमी था। दो छोटे सुनहरे बच्चों को देख कर उसको उन पर दया आ गयी। उसने उनको अपनी पत्नी को दे दिया और कहा कि वह उनको छिपा कर रखे।

फिर उसने दो हिरन के बच्चे मारे और उनको अलग अलग तरीके से बना कर खाने में परोसा। जब राजा आया तो रानी ने रसोइये से उन पकवानों को लाने के लिये कहा। राजा उनको बड़े

[125] Translated for the word “Horse Shoe”

शौक से खाने लगा। “ओह मेरे बाबा की कसम यह तो बहुत ही स्वादिष्ट है।”

और रानी बराबर यही कहती रही — “खाओ खाओ। तुम जानते हो कि तुम क्या खा रहे हो।”

पहले तो राजा ने इस बात की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जो कुछ उसने कहा पर वह जब बार बार यही दोहराती रही तो राजा बोला — “माँ मुझे मालूम है कि मैं क्या खा रहा हूँ क्योंकि तुम यह सब अपने घर से तो लायी नहीं।”

फिर भी जब रानी माँ का गाना खत्म नहीं हुआ तो गुस्से के मारे अपने गुस्से को शान्त करने के लिये वह पास के बने एक घर में चला गया।

इस बीच रानी माँ अभी वह जो कुछ भी कर के चुकी थी उससे सन्तुष्ट नहीं थी सो उसने सेक्रेटरी को फिर बुलाया और उसको तालिया को लाने के लिये कहा कि उसको राजा ने बुलाया है।

तालिया ने जब यह सुना तो वह भी खुशी खुशी अपनी आँखों की रोशनी देखने के लिये राजा के पास चल दी। उसको तो पता ही नहीं था कि वहाँ धुँआ उसका इन्तजार कर रहा था।

पर जब वह रानी माँ के सामने आयी तो रानी माँ ने भयानक चेहरा बना कर और बोली में वाइपर साँप का जहर भर कर उससे कहा — “आइये मैडम धोखेबाज। तुम तो बहुत ही सुन्दर शरारत

करने वाली हो। तुम तो वह बेकार की घास हो जिसने मेरे बेटे को आकर्षित कर रखा है और मेरे लिये मुसीबत खड़ी कर दी है।”

जब तालिया ने यह सुना तो वह उससे माफी मॉगने लगी पर रानी मॉ तो उसकी कोई बात सुनने वाली नहीं थी। उसने ऑगन में एक बहुत बड़ी आग जलवायी और कहा कि तालिया को उस आग में फिंकवा दिया जाये।

बेचारी तालिया ने देखा कि उसका समय खराब हो गया है सो वह रानी मॉ के सामने उसके पैरों पर गिर पड़ी और उससे विनती की कि उसको अपनी पीठ पर से कुछ कपड़े उतारने का समय दिया जाये।

रानी मॉ ने उस पर दया दिखाने के लिये नहीं बल्कि उसके कपड़े लेने के लिये जिन पर सोने और मोतियों का काम हुआ था बोली — “मैं तुम्हें इजाज़त देती हूँ तुम अपने कपड़े उतारो।”

तालिया ने कपड़े उतारने शुरू किये। जैसे जैसे वह अपने कपड़े उतारने लगी तो हर कपड़े के उतारने पर एक ज़ोर की आह भरती।

पहले उसने अपना शाल उतारा फिर उसने अपनी जैकेट उतारी जब वह अपना पैटीकोट उतारने लगी तो उन्होंने उसे पकड़ लिया और आग में फेंकने जा ही रहे थे कि तभी राजा ऊपर आ गया। उसने वह दृश्य देखा तो रानी से उसकी सफाई मॉगी।

जब उसने अपने दोनों बच्चों के बारे में पूछा और सुना कि उसकी सौतेली माँ ने उनको मरवा दिया है तो राजा बहुत बहुत बहुत ही निराश हो गया। उसने तुरन्त ही अपनी माँ को उसी आग में फेंक देने का हुक्म दे दिया जिसमें वह तालिया को फिंकवाने वाली थी।

उसके बाद वह रसोइये को आग में फिंकवाने वाला था कि रसोइया राजा के पैरों पर गिर पड़ा और बोला — "यह सच है जनाब। मैंने जो सेवा आपकी की है मुझे उसके बदले में कुछ और नहीं चाहिये सिवाय इसके कि मुझे जलते हुए अंगारों की भट्टी में फेंक दिया जाये।

मुझे नुकीले औजार से मारा जाये। मुझे इससे ज़्यादा और कोई मनोरंजन नहीं चाहिये कि मैं आग में भूना जाऊँ। मुझे और कोई आदर भी नहीं चााहये कि मेरी राख रानी की राख के साथ मिला दी जाये।

पर मुझे रानी माँ, जो इन बच्चों को मारना चाहती थी के हुक्म देने पर भी कि इनको पका दो और इनके स्वदिष्ट पकवान बना दो आपके बच्चों को बचाने और उनको आपके पास लाने का यह इनाम तो नहीं हो सकता।"

जब राजा ने यह सुना तो वह तो दंग रह गया। उसे लगा वह सपना देख रहा था। जो कुछ उसने सुना उस पर तो वह विश्वास ही नहीं कर सका। उसने रसोइये से कहा — "अगर यह सच है कि

तुमने मेरे बच्चों की जान बचायी है तो तुम मेरा विश्वास करो कि मैं तुम्हें इतना मालामाल कर दूँगा कि तुम अपने आपको दुनियाँ का सबसे खुश आदमी समझोगे।"

जब राजा यह कह रहा था रसोइये की पत्नी दोनों बच्चों को ले कर वहाँ आ गयी। राजा उनको देख कर बहुत खुश हुआ और वह तीनों के साथ चारों तरफ घूम घूम कर खेलने लगा।

फिर उसने रसोइये को बहुत सारा इनाम दिया और उसको महल की देखभाल करने वाला बना दिया। उसने तालिया से शादी कर ली। तालिया भी अपने पति और बच्चों के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी रही।

उन्होंने माना कि —

जिसकी किस्मत साथ देती है उसके सिर पर नींद में भी आशीर्वाद बरसते रहते हैं

30 5–8 नैनीलो और नैनैला[126]

उस आदमी को दुख ही दुख है जो अपने बच्चों के लिये उनकी ज़िन्दगी में उनकी सौतेली माँ ला कर उसमें एक गवर्नैस[127] ढूँढता है। असल में तो उसके रूप में वह तो केवल उनकी बर्बादी की एक वजह ले कर ही आता है। अभी तक कभी कोई ऐसी सौतेली माँ नहीं रही जिसने दूसरे के बच्चों को प्यार से देखा हो। और अगर कभी इत्तफाक से ऐसी कोई माँ मिल भी गयी तो उसको तो चमत्कार ही कहा जायेगा या फिर सफेद कौआ।

पर उन सब लोगों के अलावा जिनके बारे में आप लोगों ने सुना है मैं एक और बेदर्द सौतेली माँ की कहानी सुनाती हूँ जो दूसरी कहानियों में जोड़ी जा सकती है। जिसको कि आप उसके लिये ठीक सजा समझेंगे जो उसने पैसे से खरीदी।

एक बार एक भला आदमी था जैनूचियो।[128] उसके दो बच्चे थे नैनीलो और नैनैला जिनको वह अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करता था। पर मौत उसकी पत्नी की आत्मा को उसके शरीर के पिंजरे में से निकाल कर ले गयी।

उसके बाद उसने एक बेरहम स्त्री से शादी कर ली जिसने घर में कदम रखते ही ऊँचे घोड़े पर सवारी करना शुरू कर दिया। उसने कहा — "क्या मैं यहाँ पर दूसरी स्त्री के बच्चों की देखभाल करने आयी हूँ। मैंने यह काम बड़ा अच्छा ले लिया है जिसमें मैं हमेशा मुसीबत में रहूँ और लोग मेरी हँसी उड़ायें।

[126] Naniello and Nenella. (Tale No 30) Day 5, Tale No 8

[127] Governess is of higher status than a nanny.

[128] Jannuccio

मैं तो ऐसी जगह आने से पहले अपनी गर्दन तोड़ लेती जहाँ मुझे खराब खाना पीना मिलता हो और रात को सोने को भी ठीक से न मिलता हो। यह भी कोई ज़िन्दगी है। मैं तो यहाँ पत्नी की तरह से आयी हूँ नौकर की तरह से नहीं।

पर मुझे इनसे बचने का कोई न कोई तरीका तो सोचना ही पड़ेगा वरना तो ये मेरी जान ले कर रहेंगे। एक बार लाल पड़ जाना ज़्यादा अच्छा है बजाय सैंकड़ों बार पीला पड़ने के। या फिर मैं हमेशा के लिये घर छोड़ कर चली जाऊँगी।"

बेचारे पति ने जिसको इस स्त्री से प्यार था इससे कहा — "शान्ति से शान्ति से। गुस्सा मत हो क्योंकि चीनी तो प्यारी होती है। कल सुबह मुर्गे की बाँग से पहले ही मैं तुम्हारे गुस्से को ठंडा करने के लिये उनको यहाँ से हटा दूँगा।"

सो अगली सुबह सुबह ने जब पूर्वीय खिड़की की तरफ अपनी लाल चादर फैला दी तब जैनूकियो ने बच्चों को लिया – एक को एक हाथ से पकड़ा और दूसरे को दूसरे हाथ से। और एक टोकरी भर कर खाने के लिये कुछ अच्छी चीज़ें लीं और जंगल की तरफ चल दिया।

वह उनको एक जंगल में ले गया जहाँ बीच और पोपलर के बहुत सारे पेड़ लगे हुए थे। वहाँ पहुँच कर जैनूकियो ने कहा — "मेरे प्यारे बच्चो। तुम लोग यहाँ जंगल में ठहरो और आराम से खाओ पियो। पर अगर तुम्हें किसी चीज़ की जरूरत हो तो राख

की इस लाइन के साथ साथ चले आना यह तुम्हें सीधे तुम्हारे घर ले आयेगी।”

फिर उसने उन दोनों को चूमा और रोता हुआ घर चला आया।

पर उस समय जब रात के सिपाही सब प्राणियों को प्रकृति का टैक्स देने के लिये बुलाते हैं यानी आराम करने के लिये बुलाते हैं दोनों बच्चों को जंगल में अकेले डर लगने लगा। वहाँ नदी का पानी रास्ते में आये पत्थरों को अपने रास्ते में आने के लिये इतनी ज़ोर से और बार बार मार रहा था कि उससे तो कोई हीरो भी डर जाता।

सो उन्होंने राख वाली लकीर पकड़ी और अपने घर चल दिये। जब तक वे अपने घर पहुँचे तब तक आधी रात हो चुकी थी। जब उनकी सौतेली माँ पैस्कोज़ा[129] ने उनको देखा तो उसने एक स्त्री की तरह से दया से बर्ताव नहीं किया बल्कि पूरे गुस्से में भर कर किया।

हाथ मलते हुए पैर पटकते हुए डरे हुए घोड़े की तरह से आवाज निकालते हुए वह बोली — “अरे ये कहाँ से आ गये। क्या घर में इनसे बचने का कोई तरीका नहीं है। क्या यह ठीक है कि तुमने इन्हें यहाँ रख कर मेरी जान लेने का फैसला कर ही लिया है। जाओ और इन्हें यहाँ से ले जाओ।

मैं तो मुर्गे की बाँग देने तक और मुर्गियों के बोलने तक का इन्तजार नहीं करने वाली। और नहीं तो देख लो कि मैं कल सुबह ही अपने माता पिता के घर चली जाऊँगी क्योंकि तुम मेरे लायक ही

[129] Pascozza – name of the stepmother

नहीं हो। मैं तुम्हारे लिये केवल बहुत सारी बढ़िया चीज़ें इसलिये ही ले कर नहीं आयी हूँ कि मैं तुम्हारे बच्चों की नौकरानी बनूँ और ये बच्चे भी वे जो मेरे अपने नहीं हैं।”

बेचारा जैनूकियो ने जब देखा कि मामला कुछ ज़रा ज़्यादा ही गर्म हो रहा है तो उसने दोनों छोटे बच्चों को लिया और फिर जंगल वापस लौट गया। उसने उन्हें फिर से टोकरी भर कर खाना दिया और कहा — “मेरे प्यारे बच्चो तुमने देखा कि मेरी यह पत्नी कैसी है जो मेरे घर में तुम्हें बर्बाद करने और मेरे दिल में कीलें चुभोने आयी है। यह तुमसे नफरत करती है।

इसलिये मेरे बच्चो तुम लोग यहीं जंगल में ही रहो जहाँ पेड़ ज़्यादा दया करने वाले हैं। वे तुम्हें सूरज से छाया देंगे। जहाँ नदी ज़्यादा दान करने वाली है जो तुमको बिना जहर का पानी देगी। धरती तुम पर ज़्यादा दया करेगी वह तुमको हरी मुलायम घास का बिछौना बिछायेगी।

और जब तुम्हें खाने की जरूरत होगी तो तुम यह भूसे की लाइन के साथ साथ आ जाना जिसे मैंने तुम्हारे लिये एक सीधी लाइन में बिछा दिया है। तुम्हें जब भी कुछ लेना हो तभी तुम चले आना।”

इतना कह कर उसने उनकी तरफ से मुँह फेर लिया ताकि बच्चे उसके आँसू न देख सकें और वहाँ से चला आया।

जब नैनीलो और नैनैला ने टोकरी में रखा खाना खा लिया तो उन्होंने घर लौटना चाहा। पर अफसोस वह भूसा जो उनका पिता जमीन पर बिखेर कर आया था वह तो उनकी बदकिस्मती ने खा लिया था। इसलिये वे रास्ता भूल गये।

वे वहाँ कई दिनों तक घूमते रहे। वे चेस्टनट और ओक के फल जो जमीन पर गिर जाते थे खा कर अपना समय काटते रहे।[130]

पर भगवान सब सीधे लोगों की रक्षा करता है से इत्तफाक से एक दिन एक राजकुमार शिकार खेलने उस जंगल में आया। नैनीलो ने हाउंड कुत्तों की आवाज सुनी तो वह तो बहुत डर गया और जा कर एक पेड़ के खोखले तने में छिप गया। नैनैला भी भागी और जंगल के बाहर आ गयी। अब वह समुद्र के किनारे थी।

उसी समय इत्तफाक से उसी समय कुछ समुद्री डाकू ईंधन लेने के लिये समुद्र तट पर उतरे थे। उन्होंने नैनैला को देख लिया और उसे उठा कर ले गये। जहाज़ के कप्तान ने उसको अपने घर ले जा कर अपनी पत्नी को दे दिया और वे उसे अपने बच्चे की तरह पालने लगे।

इस बीच नैनीलो को जो एक पेड़ के खोखले तने में छिप गया था कुत्तों ने घेर लिया। वे कुत्ते इतनी ज़ोर ज़ोर से भौंक रहे थे कि

[130] See the Chestnut and Oak fruit (Acorn) above. Chestnut is above and Acorn is below.

राजकुमार को अपने आदमियों को यह देखने के लिये भेजना पड़ कि वे इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों भौंक रहे थे।

जब उसको एक सुन्दर सा बच्चा मिल गया जो यह भी नहीं बता सका कि उसके माता पिता कौन हैं तो उसने अपने एक शिकारी से उसे अपने घोड़े की जीन पर बिठाने के लिये कहा और उसे महल ले गया। वहाँ वह उसकी बड़े अच्छे से देखभाल करने लगा।

उसने और दूसरे कामों के साथ उसको कई काम सिखाये जैसे खोदने वाले का[131]। तीन चार साल में ही वह खोदने की कला में इतना होशियार हो गया कि वह जोड़ों से ले कर बाल तक बहुत अच्छे खोदता था।

इस समय यह पता चला कि उस जहाज़ के कप्तान को जो एक समुद्री डाकू था और नैनैला को अपने घर ले गया था लोगों ने कहा कि पकड़ा जाये। पर अदालत के क्लर्कों ने जो उसको समय रहते यह बता दिया था सो वह अपने पूरे परिवार के साथ भाग गया था।

यह तो किस्मत में लिखा था सो वैसा ही होना था कि जिसने समुद्र में जुर्म किये थे तो उसको अपने जुर्मों की सजा समुद्र के ऊपर ही भुगतनी चाहिये थी। सो जैसे ही वह एक छोटी नाव में बैठ कर समुद्र में उतरा बहुत तेज़ हवाऐं चलीं लहरें उफनने लगीं नाव डूब गयी और सब लोग समुद्र में डूब गये।

---

[131] Translated for the word “Carver”

सब सिवाय नैनैला के। क्योंकि उसका तो कोई डाके की चीज़ों में कोई हिस्सा नहीं था जैसे डाकू की पत्नी और बच्चों का था।

वह सुरक्षित रही क्योंकि तभी एक जादू पड़ी मछली आयी जो वहीं नाव के आसपास तैर रही थी और उसको निगल गयी। छोटी बच्ची को लगा कि अब उसके दिन पूरे हो गये हैं। कि अचानक उसने मछली के अन्दर एक आश्चर्यजनक चीज़ देखी – सुन्दर मैदान बढ़िया बागीचा और उसमें एक शानदार महल जिसमें उसकी जरूरत के अनुसार सब कुछ था।

तभी मछली उसको एक चट्टान के पास ले गयी जहाँ इत्तफाक से राजकुमार गर्मियों की जलती हुई गर्मी से छुटकारा पाने के लिये और समुद्र की ठंडी हवा का आनन्द लेने के लिये आया हुआ था।

वहाँ एक दावत की तैयारी हो रही थी तो जब वे लोग तैयारी कर रहे थे तो नैनीलो बाहर छज्जे पर एक पत्थर पर चाकू तेज़ करने के लिये आ कर खड़ा हो गया। उसको बहुत गर्व महसूस हो रहा था कि उसको अपने दफ्तर से मान मिला था।

नैनैला ने उसको मछली के गले में से देखा तो चिल्लायी — "भैया भैया तुम्हारा काम खत्म हो गया है। मेजें भी सबके लिये लग गयी हैं पर मैं यहाँ मछली में बैठी उसाँसें ले रही हूँ। बिना तुम्हारे तो मैं मर ही जाऊँगी।"

पहले तो नैनीलो ने इसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया पर राजकुमार जो एक दूसरे छज्जे पर खड़ा था उसने भी इसे सुना तो

उस तरफ घूमा जिधर से आवाज आ रही थी तो उसे एक मछली दिखायी दी।

और जब उसने वे शब्द दोबारा सुने तब तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उसने अपने कई नौकर उधर भेजे कि क्या वे म्छली को पकड़ कर किनारे पर ला सकते थे।

आखिर भैया भैया की आवाज जो बराबर आ रही थी सुन कर राजकुमार ने अपने सब नौकरों से पूछा कि उनमें से किसी की कोई बहिन खो गयी है क्या।

इसका जवाब नैनीलो ने दिया कि उसने कुछ सपने जैसा याद है कि जंगल में राजकुमार से मिलने से पहले उसकी एक बहिन थी। पर उस दिन के बाद से उसने अपनी बहिन के बारे में कुछ नहीं सुना।

तब राजकुमार ने उसको मछली के पास यह कहते हुए भेजा कि शायद यह उससे सम्बन्धित हो। जैसे ही नैनीलो मछली के पास पहुँचा मछली ने अपना सिर उठा कर चट्टान पर रख दिया और अपना मुँह छह हथेली के बराबर खोल दिया।

नैनैला उसमें से बाहर निकली – इतनी सुन्दर जैसे कोई अप्सरा। वह ऐसे बाहर निकली जैसे किसी जादूगर ने कोई मन्त्र पढ़ा हो और वह जानवर के मुँह से निकल आयी हो।

जब राजकुमार ने उससे पूछा कि यह सब कैसे हुआ तो उसने अपने दुखों की कहानी का एक हिस्सा, अपनी सौतेली माँ की

नफरत के बारे में सुना दिया। पर वह अपने पिता का नाम और अपने घर का पता किसी तरह भी याद नहीं कर सकी।

राजकुमार ने तुरन्त ही मुनादी पिटवा दी कि जिस किसी ने भी नैनीलो और नैनैला नाम के दो बच्चे जंगल में खोये हों वह शाही महल आये। वह वहाँ एक खुशखबरी सुनेगा।

जैनूकियो जिसने अब तक अपनी ज़िन्दगी दुख और निराशा में काटी थी क्योंकि वह हमेशा यही सोचता रहा था कि उसको बच्चों को कोई भेड़िया खा गया होगा। यह मुनादी सुन कर बहुत खुश खुश शाही महल चल दिया।

वहाँ पहुँच कर उसने कहा कि उसके दो बच्चे जंगल में खो गये थे। फिर उसने राजकुमार को पूरी कहानी बतायी कि किस तरह से वह उनको जंगल में छोड़ने के लिये मजबूर हो गया था तो राजकुमार ने उसे बहुत डॉटा उसको खरदिमाग कहा कि उसने एक स्त्री को अपनी एड़ी तब तक उसकी गरदन पर रखने इजाज़त दी जब तक वह अपने इन रत्न जैसे बच्चों को जंगल में न छोड़ आता।

पर अपने इन शब्दों से जैनूकियो का दिमाग खराब करने के बाद राजकुमार ने फिर उस पर धीरज का मरहम लगाया। उसको उसके दोनों बच्चे दिखाये।

पिता ने उनको देखते ही अपने सीने से लगा लिया और उनको आधा घंटे तक चूमता रहा फिर भी उसका मन नहीं भर रहा था। तब राजकुमार ने उसे अपनी जैकेट निकालने के लिये कहा और उसे

एक लौर्ड की तरह से कपड़े पहनवाये। फिर उसने की जैनूकियो की पत्नी को बुलवाया।

उसने उसे दोनों सुनहरे बच्चे दिखाये और पूछा कि ऐसा कौन हो सकता है जो ऐसे बच्चों को कोई नुकसान पहुँचाने की अपने मन में भी लाये उनकी ज़िन्दगी को खतरे में डालने की बात तो बिल्कुल ही अलग है।"

पत्नी ने जवाब दिया — "अपनी तरफ से मैं उसको एक बक्से में बन्द करूँगी और किसी पहाड़ से नीचे लुढ़का दूँगी।"

राजकुमार ने कहा — "ऐसा ही हो। बकरी ने खुद ही अपनी सजा बता दी है। अब जल्दी करो। तुमने सजा सुना दी है अब तुम इतने सुन्दर सौतेले बच्चों के साथ बुराई करने के लिये सजा भुगतने के लिये तैयार हो जाओ।"

इतना कह कर उसने अपना हुक्म पालन करने का हुक्म दिया। उसने अपने लोगों में से एक सबसे अमीर आदमी को चुना और नैनैला को उसे दे दिया। और एक दूसरे अमीर आदमी की बेटी को नैनीलो को दे दिया और उनको अपने पिता के साथ अपनी ज़िन्दगी बसर करने के लिये काफी सम्पत्ति दे दी। अब उनको किसी चीज़ की कोई जरूरत नहीं थी।

सौतेली माँ को एक बक्से में बन्द कर दिया गया। जब तक उसकी साँस रही तब तक वह रोती चीखती रही —

वह जो शरारत करता है वह शरारत में ही गिरता है
कोई तो समय आता है जब सब का फैसला होता है

31 5–9 तीन सन्तरे[132]

किसी विद्वान आदमी ने यह ठीक ही कहा है कि “जो कुछ तुम जानते हो वह सारा मत कहो और न वह सारा कहो जो तुम कर सकते हो।” क्योंकि दोनों ही बातें तुम्हें खतरे में या किसी अनदेखी बरबादी में डाल सकती हैं। जैसा कि आप लोग अभी सुनेंगे कि जिसने एक गरीब लड़की को उसकी ताकत में जितना नुकसान पहुँचाना था पहुँचाया पर फिर वह इतने बुरे तरीके से अदालत में आयी कि उसको अपने जुर्म की सजा अपने आप ही बतानी पड़ी और उसको वही सजा देनी पड़ी जिसकी वह हकदार थी।

लौंग टावर के राजा के एक बेटा था जो उसकी ऑख का तारा था। उसी पर उसकी सब आशाऐं टिकी हुई थीं। वह उस दिन का बेचैनी से इन्तजार कर रहा था जब वह उसकी शादी करेगा। पर राजकुमार शादी के बिल्कुल खिलाफ था और इतना जिद्दी था कि जब भी उसकी पत्नी की बात की जाती तो वह अपना सिर ना में हिला देता और वहॉ से सैंकड़ों मील दूर चला जाता।

जब राजा ने अपने बेटे को ऐसा जिद्दी और शादी के खिलाफ देखा तो उसको लगा कि उसका वंश तो आगे चलने का ही नहीं। वह बहुत उदास हो गया। वह बहुत गिरा गिरा सा महसूस करने लगा और उसका उत्साह जाता रहा। इतना ज़्यादा जितना कि किसी सौदागर को उसके खरीदार के दिवालिया होने पर भी नहीं होता या फिर वह किसान जिसका गधा ही मर गया हो।

[132] The Three Citrons. (Tale No 31) Day 5, Tale No 9

न तो राजा के ऑसू ही राजकुमार को पिघला सके और ना ही दरबारियों की कोई प्रार्थना ही उसको मना सकी। न विद्वानों का समूह ही उसके दिमाग को बदल सका।

उन सबने राजकुमार को उसके पिता की इच्छा लोगों की मॉगें और उसका अपना मतलब बताया कि वह उस शाही खानदान का आखिरी आदमी था और वंश को आगे चलाने के लिये उसका शादी करना जरूरी था।

क्योंकि कैरैला[133] और एक जिद्दी खच्चर जिसकी चार अंगुल मोटी खाल थी की जिद के सामने उसने अपना पैर जमा दिया। किसी भी बेरहमी के लिये उसके कान बन्द कर दिये।

पर अक्सर ऐसा होता है कि जो सदियों में भी नहीं होता वह एक घंटे में हो जाता है। इस समय यह कोई नहीं कह सकता है कि यहॉ रुक जाओ या वहॉ जाओ।

तो एक दिन ऐसा हुआ जब सब खाना खा रहे थे तो राजकुमार नयी बनी हुई चीज़ का एक टुकड़ा काट रहा था। साथ में वह मेज पर बैठे लोगों की बातचीत भी सुनता जा रहा था कि चीज़ काटते समय उसकी ॲगली कट गयी। उसकी ॲगली से दो बूॅद खून उस चीज़ पर गिर पड़ा।

इसने वहॉ एक इतना सुन्दर रंग बना दिया कि या तो वह प्यार की सजा थी या फिर भगवान की इच्छा थी पिता को धीरज देने की

---

[133] Carella – name of the Prince

कि राजकुमार को एक पागलपन सवार हो गया कि वह शादी करेगा तो किसी ऐसी सफेद और लाल रंग की लड़की से करेगा जैसा कि खून पड़ी चीज़ का था।

यह बात जब उसने अपने पिता से कही — “सर जब तक मुझे कोई ऐसी लड़की नहीं मिल जायेगी जो इस चीज़ के रंग जैसी लाल और सफेद हो मैं शादी नहीं करूँगा।

अब आप सोच लीजिये। अगर आप मुझे ज़िन्दा और ठीक देखना चाहते हैं तो आप मुझे वह सब दीजिये जिसकी मुझे जरूरत हो और मुझे दुनियाँ में जाने की इजाज़त दें ताकि मैं ऐसी लड़की को ढूँढ सकूँ वरना मैं तिल तिल कर के मर जाऊँगा।”

राजा ने जब उसका यह पागलपन भरा इरादा सुना तो उसको लगा कि उसका घर तो गिर रहा है। उसके चेहरे पर रंग आने जाने लगे पर जल्दी ही वह सँभल गया।

जैसे ही वह बोलने की हालत में हुआ उसने कहा — “मेरे प्यारे बेटे। मेरी ज़िन्दगी की जान। मेरा दिल मेरा जिगर। मेरे बुढ़ापे की लाठी। तुम्हारे दिमाग के यह किस पागलपन ने तुमको यह फैसला करने को कहा है।

क्या तुम्हारी इन्द्रियों ने काम करना बन्द कर दिया है या तुम्हारी अक्ल चरने गयी है। या तो तुम्हें सब चाहिये या फिर कुछ भी नहीं चाहिये। पहले तो तुम इसलिये शादी ही नहीं करना चाहते थे कि

मुझे कहीं कोई वारिस न मिल जाये और अब तुम मुझे दुनियाँ से ही भगाने के लिये बेचैन हो।

तुम कहाँ जाओगे। कहाँ घूमोगे। अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करोगे। और अपना मकान अपना चूल्हा अपना घर छोड़ोगे। तुम नहीं जानते कि जो लोग इधर उधर घूमते फिरते हैं उनके ऊपर क्या क्या मुसीबतें आती हैं।

बेटा अपने इस पागलपन को छोड़ दो। समझ से काम लो और मेरी ज़िन्दगी को खराब करने की कोशिश मत करो। यह मकान नीचे गिर जायेगा। मेरी गृहस्थी बिखर जायेगी।"

पर राजा के ये और दूसरे शब्द भी राजकुमार के इस कान में गये और दूसरे कान से निकल गये और समुद्र में जा गिरे।

बेचारे राजा ने यह देख कर कि उसके बेटे को किसी भी तरह नहीं समझाया जा पा रहा वह तो ऐसा हो गया था जैसे कौआ घंटाघर पर। सो उसने राजकुमार को मुट्ठी भर डौलर दिये दो तीन नौकर दिये और विदा कहा।

उसको लगा जैसे उसके शरीर से उसकी जान निकल गयी हो। बहुत ज़ोर ज़ोर से रोते हुए वह छज्जे की तरफ चला और वहाँ से अपने बेटे को तब तक जाते देखता रहा जब तक वह उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया।

राजकुमार अपने दुखी पिता को निराश छोड़ कर मैदानों और खेतों जंगलों पहाड़ों घाटियों और कई देशों से हो कर जल्दी जल्दी

चल दिया। वह अपनी ऑखें हमेशा खुली रखता कि कहीं उसको अपनी चाहने वाली चीज़ मिल जाये।

कई महीनों बाद वह फ्रांस के समुद्री किनारे पर आया जहॉ उसने अपने नौकरों को दुखते हुए पैरों के साथ एक अस्पताल में

छोड़ा और वह जिनोआ[134] की नाव में अकेले ही चढ़ कर जिब्राल्टर की खाड़ी[135] की तरफ चल दिया।

वहॉ पहॅुच कर उसने एक बड़ा जहाज़ लिया और इन्डीज़[136] की तरफ चल दिया। वह हर राज्य में हर प्रान्त में हर शहर में हर गली में उसे ढूॅढता जा रहा था जिसकी मूरत उसके दिल में बसी हुई थी।

घूमते घूमते वह ओग्रेसेज़[137] के टापू में आ पहॅुचा। उसने वहॉ लंगर डाल दिया और उतर गया। वहॉ उसको एक बुढ़िया मिली जो अपने बुढ़ापे की वजह से बहुत ही मुरझा गयी थी।

---

[134] Genoa – a renowned city of Italy

[135] Strait of Gibralter – located between the Southern coast of Spain and the Northernmost point of Morocco of Africa

[136] Towards Malayasia, Singapore, Indonesia Island

[137] Ogress is the feminine of Ogre

उसने उससे अपनी बात कही कि वह उस देश में क्यों आया था। जब बुढ़िया ने उसका पागलपन सुना कि वह किन किन खतरों से खेलता हुआ अपनी इच्छा को पूरा करने के लिये वहाँ तक आया है तो वह तो आश्चर्य से खड़ी की खड़ी देखती ही रह गयी।

वह बोली — "जल्दी करो मेरे बेटे जल्दी करो। क्योंकि अगर मेरी तीन बेटियाँ तुमको देख लेंगी तो मैं तुम्हारी जान बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकती।

आधा ज़िन्दा आधा भुना हुआ एक तलने वाली कड़ाही ही तुम्हारी अर्थी होगी और उनका पेट तुम्हारी कब्र। पर तुम यहाँ से किसी खरगोश की तरह से तेज़ी से भाग जाओ। अब तुम जो कुछ ढूँढ रहे हो तुम उससे ज़्यादा दूर नहीं हो।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह तो बहुत डर गया। डर के मारे वह वहाँ से अपनी पूरी गति से भाग लिया और ऐसा भागा कि कि किसी दूसरे शहर में ही पहुँच कर दम लिया।

वहाँ पहुँच कर वह एक और बुढ़िया से मिला जे पिछली बुढ़िया से भी ज़्यादा बदसूरत थी। उसने उस बुढ़िया को भी अपनी कहानी सुनायी तो उसने राजकुमार से कहा — "अगर तुम मेरी बच्चियों का नाश्ता नहीं बनना चाहते तो तुम यहाँ से तुरन्त भाग जाओ। तुम यहाँ से सीधे चले जाओ तो तुम जो ढूँढ रहे हो तुम्हें वह मिल जायेगा।"

यह सुन कर राजकुमार वहाँ से भी उस कुत्ते की तरह से भाग लिया जिसकी पूँछ में कोई केटली बँधी हुई हो। भागते भागते वह एक दूसरी बुढ़िया से मिला जो एक पहिये के ऊपर बैठी हुई थी।

उसके हाथ में छोटी छोटी पाई और कुछ मिठाइयों से भरी टोकरी थी जिन्हें वह कुछ गधों को खिला रही थी जो बाद में नदी के किनारे पर हंसों को ठोकर मार रहे थे।

जब राजकुमार बुढ़िया के पास आया तो उसने बुढ़िया को सैंकड़ों बार सलाम किया और उसे अपने घूमने की पूरी कहानी बतायी। इस बुढ़िया ने उससे दया का बर्ताव किया और अपने मीठे शब्दों से उसको तसल्ली दी। बाद में उसे इतना बढ़िया नश्ता कराया कि जिसके बाद वह उँगलियाँ चाटता रह गया।

खाने के बाद उसने उसको तीन सन्तरे दिये जो ऐसा लगता था कि अभी अभी पेड़ से तोड़े गये हों। उसने राजकुमार को एक बहुत सुन्दर चाकू भी दिया और कहा — "अब तुम्हारी मेहनत खत्म हुई अब तुम इटली वापस लौट जाओ। तुम जो ढूँढ रहे थे वह अब तुम्हारे पास है।

जब तुम अपने राज्य के पास पहुँच जाओ तो जो भी पहला फव्वारा तुमको मिले वहाँ रुक जाना और एक सन्तरा काटना। उसमें से एक परी निकलेगी और कहेगी "मुझे पानी दो।" ध्यान रखना कि पानी तैयार रहे वरना वह पारे की तरह से गायब हो जायेगी।

पर अगर तुम दूसरी परी के मामले में ऑखें खुली रख कर जल्दी नहीं करोगे और ध्यान नहीं दोगे तो देखना कि तीसरी परी तुमसे बच कर न भाग जाये। उनको तुरन्त ही पानी देना पड़ेगा। तुमको तुम्हारी मन पसन्द पत्नी मिल जायेगी।

बुढ़िया की ये बातें सुन कर तो वह बहुत ही खुश हो गया। उसने बुढ़िया के बालों वाला हाथ सैंकड़ों बार चूमा जो बिल्कुल हैजहौग की पीठ जैसा था।

फिर उसने उससे विदा ली और अपने देश की तरफ चल दिया। वह समुद्र के किनारे आया और पिलर्स औफ हरकुलिस[138] की तरफ रवाना हो गया। वह वहाँ आया।

हजारों तूफान और खतरे उठा कर वह बन्दरगाह तक आ गया जो उसके अपने राज्य से अभी एक दिन दूर था कि उसने एक बहुत सुन्दर कुंज देखा जहाँ ऊँचे ऊँचे पेड़ों ने घास के लिये छाया का महल बना रखा था ताकि सूरज उन्हें देख न सके।

वह एक फव्वारे पर रुका जो अपने क्रिस्टल की जीभ से लोगों को उनके होठ ताजा करने के लिये न्यौता दे रहा था। वहाँ वह पौधों और फूलों के बने कालीन पर बैठ गया।

[138] Pillars of Hercules – means Strait of Gibraltar, which used to be called the Pillars of Hercules during Plato's time.

तब उसने चाकू उसके म्यान में से निकाला और पहला सन्तरा काटना शुरू किया ही था कि वहाँ बिजली की चमक की तरह तुरन्त ही एक लड़की आ खड़ी हो गयी। वह दूध जैसी सफेद थी और स्ट्रौबैरी जैसी लाल था।

प्रगट होते ही उसने कहा "मुझे पानी दो।"

राजकुमार तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह तो उस लड़की की सुन्दरता में ही कैद रह गया। इससे वह उसको तुरन्त ही पानी नहीं दे सका। इस पर वह लड़की एक पल में ही गायब हो गयी।

यह राजकुमार के सिर पर एक थप्पड़ था या नहीं इस बात का किसी और को फैसला करने दो कि जिसको कोई इतने दिनों से चाह रहा हो वह उसके हाथ में आ जाये और पल में ही उसके हाथ से निकल जाये तो उसे कैसा महसूस होता है।

उसके बाद राजकुमार ने दूसरा सन्तरा काटा तो जो अभी हुआ था वही सब उसके साथ दोबारा भी हुआ। यह उसकी खोपड़ी पर एक और थप्पड़ था। वह रो पड़ा। उसकी दोनों आँखें दो फव्वारे बन गयीं।

वह फव्वारे के सामने रोते रोते बोला — "हे भगवान मैं इतना बदकिस्मत क्यों हूँ। मैं उसे दो बार खो चुका हूँ जैसे मेरे हाथ बँध

गये हों। जबकि मुझे ग्रे हाउंड[139] की तरह से भागना चाहिये था और मैं यहाँ पत्थर बना बैठा रहा। पर हिम्मत रख अभी तो एक सन्तरा और बाकी है और तीन तो खुशकिस्मती का नम्बर है। अब यह चाकू या तो मुझे अप्सरा देगा या फिर मेरी जान लेगा।"

यह कह कर उसने तीसरा सन्तरा भी काट दिया। जैसे ही उसने सन्तरा काटा तीसरी अप्सरा प्रगट हो गयी। उसने भी यही कहा "मुझे पानी दो।"

अबकी बार राजकुमार ने उसको तुरन्त ही पानी दे दिया और लो देखो वहाँ एक बहुत सुन्दर अप्सरा खड़ी थी क्रीम जैसी सफेद पर लाल धारियाँ। एक ऐसी चीज़ जो दुनियाँ में कभी देखी नहीं गयी। इतनी सुन्दर जो कही नहीं जा सकती जिसका किसी से मुकाबला नहीं सबसे ज़्यादा शान वाली।

उसके बाल सुनहरी थे जिनसे प्रेम के बाण निकल निकल कर दिलों पर तीर चला रहे थे। ऐसा चेहरा जिसे प्रेम के देवता ने लाल रंग से रंग दिया था। वह भोलीभाली आत्मा जिसको इच्छाओं की फाँसी पर लटका दिया हो।

उन दो आँखों में जिनमें सूरज ने जिनसे देखने वाले के दिल में आहों के राकेट को आग लगाने के लिये दो फुलझड़ियाँ लगा दी हों। वीनस यानी प्रेम की देवी ने उसके होठों को गुलाब दे दिये जिनके काँटों से हजारों दिल घायल हो जायें।

---

139 Grey Hound is a species of dog which is used in hunting to chase animals because it runs very fast.

एक शब्द में कहो तो वह सिर से पॉव तक इतनी सुन्दर थी कि वैसा प्राणी कहीं और कभी नहीं देखा गया। राजकुमार को तो पता नहीं क्या हो गया था। सन्तरे के बच्चे को देख कर वह तो बस ठगा सा खड़ा रह गया था।

उसने अपने आपसे पूछा “क्या तुम जागे हुए हो या सोये हुए हो सियोमैटीलो। या तुम्हारी ऑखों को धोखा लग गया है। पीले छिलके में से यह कितना सुन्दर प्राणी निकला है। खट्टे रस से कितना मीठा फल। सन्तरे के बीज से कितनी सुन्दर लड़की निकली है।”

काफी देर के बाद उसे लगा कि वह सपना नहीं देख रहा था सच ही था। उसने परी को गले लगा लिया। उसको सैंकड़ों बार चूमा और हजारों बार उससे प्यार के शब्द कहे जिनमें अनगिनत चुम्बन भी शामिल थे।

फिर राजकुमार ने कहा — “प्रिये मैं तुम्हें इस तरह बिना कुछ पहनाये हुए जो तुम्हारे जैसी सुन्दर स्त्री के लायक हों और बिना दासियों के जो एक रानी के साथ होनी चाहिये अपने पिता के राज्य में नहीं ले जा सकता।

तो तुम इस ओक के पेड़ पर चढ़ जाओ जहॉ ऐसा लगता है कि प्रकृति ने तुम्हारे लिये एक छिपने की जगह बनायी हुई है। यहॉ बैठ कर तुम मेरे लौटने का इन्तजार करो क्योंकि मैं बस बहुत जल्दी ही एक ऑसू के सूखने से पहले ही तुम्हारे लिये कपड़े और नौकर ले कर वापस आता हूँ और तुम्हें घर ले जाऊँगा।”

उसके बाद कुछ रस्मों के बाद वह वहाँ से चला गया।

अब हुआ ऐसा कि एक स्त्री मालकिन अपनी एक काली दासी को से पानी भरने के लिये भेजा तो वह कुँए पर पानी भरने आयी। इत्तफाक से उसकी नजर पानी में पड़ी एक लड़की की परछाईं पर पड़ी।

उसने सोचा कि वह परछाईं उसी की है तो वह आश्चर्य से चिल्ला पड़ी — "ओ बेचारी लूसिया। मैं यह क्या देख रही हूँ। मैं इतनी सुन्दर और मालकिन मुझे यहाँ भेजती है? नहीं नहीं अब मैं इससे ज़्यादा सहन नहीं कर सकती।"

कह कर उसने अपने घड़ा तोड़ दिया और घर लौट गयी। जब उसकी मालकिन ने पूछा "तुमने यह शरारत क्यों की?"

तो वह बोली — "मैं अकेली गयी थी घड़ा पत्थर पर गिर कर टूट गया।"

उसकी मालकिन ने इस कहानी विश्वास न करते हुए भी विश्वास कर लिया। अगले दिन उसको एक सुन्दर छोटा घड़ा दिया जिसको उसने पानी भर कर लाने के लिये कहा। सो वह फिर वहाँ लौटी।

उसने फिर से पानी में वह सुन्दर शक्ल की परछाईं देखी तो फिर वह बोली "मैं कोई बदसूरत दासी नहीं हूँ। मैं कोई चौड़े पैर वाली बतख भी नहीं हूँ। मैं तो उतनी ही सुन्दर हूँ जितनी मेरी मालकिन। मैं अब फव्वारे पर नहीं आऊँगी।"

कह कर उसने वह सुन्दर घड़ा **70** टुकड़ों में तोड़ दिया और शिकायत करती हुई घर चली गयी। घर जा कर वह अपनी मालकिन से बोली — "वहॉ एक गधा आया था मेरा घड़ा कुॅए पर गिर गया और टुकड़े टुकड़े हो गया।"

अबकी बार मालकिन से नहीं रहा गया उसने एक झाड़ू उठायी और उससे दासी को इतना पीटा कि उसको उसका दर्द बहुत दिनों तक रहा।

उसके बाद उसने उसको एक चमड़े का थैला दिया और कहा — "जा भाग और अपनी गर्दन तोड़ ले। ओ अभागिन दासी। ओ टिड्डे की टॉग वाली। ओ काली बीटिल[140]। जा भाग और मुझे यह थैला भर कर पानी ला कर दे वरना मैं तुझे कुत्ते की तरह से टॉग दूॅगी और तेरी बहुत पिटायी होगी।

दासी वहॉ से फिर चली गयी क्योंकि वह पहले की मार देख चुकी थी और अब डर रही थी। जब वह चमड़े के थैले में पानी भर रही थी तो उसने पानी में वह परछाईं फिर से देखी तो वह बोली "मैं बेवकूफ यहॉ पानी भरूॅ? इससे अच्छा तो अक्लमन्दी से जीना है। इतनी सुन्दर लड़की इतनी बुरी मालकिन की सेवा क्यों करे।"

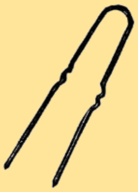

इतना कह कर उसने अपने सिर में से एक हेयर पिन निकाली और उससे उसने चमड़े के थैले में बहुत सारे छेद

[140] A kind of insect. See the picture of one of its kind above.

कर दिये जो अब किसी बागीचे में जो सैंकड़ों छेद वाले किसी पानी देने वाले बर्तन की तरह दिखायी दे रहा था।

जब परी ने यह देखा तो वह हॅस पड़ी। दासी ने जब हॅसी की आवाज सुनी तो उसने ऊपर देखा तो उसको वहॉ एक परी दिखायी दी तो वह बोली "ओहो। तो वह तुम हो जिसने मुझे पिटवाया पर चिन्ता मत करो।"

फिर वह परी से बोली — "तुम वहॉ क्या कर रही हो ओ सुन्दर लड़की।"

परी जो बहुत ही शालीन थी उसने उसको वह सब बता दिया जो वह जानती थी और जो कुछ राजकुमार के साथ हुआ था। जिसका वह हर घंटे हर पल बढ़िया कपड़ों और दास दासियों के साथ आने का इन्तजार कर रही थी कि वह आयेगा और उसे अपने पिता के राज्य ले जायेगा। फिर वहॉ वे साथ साथ खुश खुश रहेंगे।

जब उस दासी ने जिसके दिमाग में बुराई भरी थी यह सब सुन तो उसने सोचा कि यह इनाम तो वह खुद ले सकती है। सो उसने परी से कहा — "तो तुम अपने पति का इन्तजार कर रही हो तो मैं ऊपर आती हूॅ और तुम्हारे बालों में कंघी कर देती हूॅ।"

परी बोली — "आओ तुम्हारा पहली मई की तरह स्वागत है।"

और दासी पेड़ के ऊपर चढ़ गयी। परी ने भी उसको अपना गोरा हाथ दे कर उसको ऊपर चढ़ने में सहायता की। परी का गोरा हाथ दासी के काले पंजों में ऐसा लग रहा था जैसे काली ऐबोनी के

खॉचे में क्रिस्टल का शीशा जड़ा हुआ हो। जैसे ही उसने बालों में कंघी करनी शुरू की उसने अचानक ही अपनी हेयर पिन उसके सिर में घुसा दी।

परी तुरन्त ही दर्द से चिल्लायी "फाख्ता फाख्ता" और एक पल में ही फाख्ता बन कर उड़ गयी। इसके बाद दासी ने अपने कपड़े निकाल दिये उनकी एक गठरी बनायी और उसे एक मील दूर फेंक दिया। और फिर वह उस पेड़ पर ऐसे बैठ गयी जैसे कोई जैट की मूर्ति पन्ने के घर में बैठी हो।

कुछ ही देर में राजकुमार एक बहुत बड़े लावा लश्कर के साथ लौटा तो उसने देखा कि जहॉ वह दूध का बर्तन छोड़ कर गया था वहॉ तो मछली के अंडों का अचार रख हुआ था।

कुछ पलों के लिये तो वह उसे देख कर हक्का बक्का खड़ा रह गया। फिर उसने उससे पूछा — "इतने बढ़िया कागज पर यह स्याही का धब्बा किसने बनाया। इस पर तो मैं अपनी ज़िन्दगी का सबसे चमकीला दिन लिखना चाहता था। इस नये पेन्ट किये गये घर पर किसने दुखों की छाया डाल दी है जिसमें मैं खुशी खुशी अपनी ज़िन्दगी बिताना चाहता था।

ऐसा कैसे हुआ कि जहॉ मैं चॉदी की खान छोड़ कर गया था जो मुझे अमीर और खुश बना देती वहॉ मुझे यह कसौटी पत्थर[141] मिला है।"

पर राजकुमार को आश्चर्य में पड़ा देख कर चालाक दासी बोली — "आश्चर्य मत करो ओ राजकुमार। मेरे ऊपर कोई जादू डाल गया है जिससे मैं सफेद लिली से काले कोयले जैसी हो गयी हूॅ।"

बेचारे राजकुमार ने देखा कि इस शरारत के लिये वह कुछ कर नहीं सकता सो उसने अपना सिर लटका लिया और इस गोली को किसी तरह निगल गया। उसने दासी को पेड़ से नीचे उतरने के लिये और फिर उसे नये कपड़े पहनने के लिये कहा।

फिर वह दुखी हो कर नीचा सिर किये दासी को साथ लिये हुए अपने राज्य की तरफ चल दिया। राजा रानी उनके स्वागत के लिये अपने महल से छह मील आगे तक आये थे। उन्होंने उनका स्वागत इतनी ही खुशी से किया जितनी खुशी से कोई बन्दी अपनी फॉसी की सजा सुनता है।

यह देख कर कि उनके बेटे ने यह कैसा चुनाव किया है। जो इतनी दूर तक इतने दिनों तक इधर उधर घूमता रहा और जो सफेद फाख्ता लाने गया था वह किस तरीके से काला कौआ ले कर घर लौटा है उनका दिल खुश नहीं था।

[141] Translated for the word "Touchstone" – Touchstone is a kind of black stone on which jewlers examine the gold by rubbing it on it.

पर क्योंकि वह कुछ कर नहीं सकते थे सो उन्हांने बच्चों को अपना ताज दिया और कोयले के चहरे पर सुनहरा ताज रख दिया।

जब वे लोग बड़ी बड़ी दावतों की तैयारी कर रहे थे। रसोइये बतखों की सफाई में सूअरों को मारने में मेमनों को तैयार करने में मॉस को पीसने में बर्तनों को ठीक करने में और दूसरे हजारों अच्छे अच्छे पकवान बनाने में लगे हुए थे कि एक बहुत सुन्दर फाख्ता रसोईघर की खिड़की पर आ कर बैठ गयी और बोली —

"ओ रसोइये मुझे सच सच बताना राजा और दासी आज क्या कर रहे हैं।"

पहले तो रसोइये ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया पर जब वह दोबारा लौटी तिबारा लौटी और अपना वही सवाल दोहराया तो वह यह आश्चर्यजनक बात बताने के लिये खाने के कमरे की तरफ दौड़ा गया।

जब दासी ने यह सुना तो उसने उसको तुरन्त ही पकड़ने और मार कर पकाने का हुक्म दे दिया। सो रसोइया वापस गया और किसी तरह से फाख्ता को पकड़ा और उसके साथ वही किया जो दासी ने कहा था।

उसके पंख निकलने के लिये उसने चिड़िया को उबाला। उबाल कर उसका पानी और पंख उसने खिड़की से बाहर एक क्यारी डाल दिया। तीन दिन में ही उसमें एक सन्तरे का पेड़ उग आया जो बहुत जल्दी ही अपने पूरे साइज़ तक बढ़ गया।

अब ऐसा हुआ कि एक दिन राजा ने एक खिड़की से अपने बागीचे को देखा तो वहॉ उसने एक पेड़ देखा जिसे उसने वहॉ पहले कभी नहीं देखा था। उसने तुरन्त ही रसोइये को बुला कर पूछा कि उस पेड़ को वहॉ किसने और कब लगाया।

जैसे ही उसने रसोइये से पूरा हाल सुना वह समझ गया कि यह सब क्या मामला था। उसको मरने का सा दुख हुआ। उसने तुरन्त ही हुक्म दिया कि उस पेड़ को कोई न छुए बल्कि उसकी बहुत ही अच्छी तरह से देखभाल की जाये।

कुछ दिनों बाद उसमें तीन सन्तरे लगे। बिल्कुल वैसे ही जैसे बुढ़िया ने सियोमैटीलो के दिये थे। जब वे बड़े हो गये तो उसने उनको तोड़ लिया। वह उनको अपने कमरे में ले गया। पास में पानी का एक बर्तन रख लिया।

फिर उसने उन सन्तरों को काटना शुरू किया। पहले और दूसरे सन्तारों में से पहले की तरह परियॉ निकलीं जब वह तीसरा सन्तरा काटने लगा तो उसमें से निकली परी को उसने पीने के लिये पानी दिया।

लो देखो उसके सामने तो वही परी खड़ी थी जिसको वह पेड़ के ऊपर बिठा कर छोड़ कर आया था। तब उसने उस दासी के साथ साथ जो कुछ किया था वह सब बताया।

अब जो खुशी राजकुमार को उसे दोबारा देख कर मिली उस खुशी को कौन कह सकता है। उस समय वह जिस खुशी से उछल

कूद रहा चिल्ला रहा था उसे कौन बता सकता है। क्योंकि राजा तो खुशी के समुद्र में तैर रहा था और उसकी लहरों पर स्वर्ग का आनन्द ले रहा था।

उसने परी को गले लगाया फिर उसका हाथ पकड़ कर उसको कमरे के बीच में ले गया जहाँ दरबारी और सारे लोग दावत के लिये जमा थे। वहाँ उसने उसको मिलवाया।

तब राजा ने सबको एक एक कर के बुलाया और उनसे पूछा कि उसको कौन सी सजा दी जाये जिसने इतनी सुन्दर लड़की को नुकसान पहुँचाया हो।

एक ने कहा कि ऐसे आदमी के गले में सन की रस्सी डाल देनी चाहिये। दूसरा बोला उसको पत्थरों का नाश्ता कराना चाहिये। तीसरा बोला उसकी खूब पिटायी की जाये। चौथा बोला कि उसको जहर पिला देना चाहिये। पाँचवा बोला उसके सीने पर चक्की ब्रूच की तरह से लगा देनी चाहिये।

किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ तो उसने काली रानी को बुलवाया और उससे भी यही सवाल पूछा। उसने कहा — "ऐसा आदमी तो जला देने के लायक है। और उसकी राख किले की छत से चारों तरफ उड़ा देनी चाहिये।"

जब राजा ने उसके मुँह से यह सुना तो बोला — "तुमने तो अपने पैर पर अपने आप ही कुल्हाड़ी मार ली। तुमने तो अपने ही पकौड़े बना लिये। तुमने चाकू तेज़ किया और जहर मिला लिया।

तुमने तो अपना ही इतना नुकसान किया है जितना कोई और नहीं कर सकता। तुम बेकार की जीव हो।

तुमको पता होना चाहिये कि यही वह सुन्दरी है जिसे तुमने हेयर पिन से घायल किया है। यही वह फाख्ता है जिसे तुमने मार देने और पकाने का हुक्म दिया था।

अब तुम बताओ कि तुम क्या कहती हो। यह सब तुम्हारा ही किया धरा है और कोई भी जो बुरा करता है उसको बदले में बुराई की ही आशा रखनी चाहिये।”

सो उसने अपने एक नौकर को उसको पकड़ने और जलती हुई लकड़ियों के ऊपर फेंक देने के लिये कहा। और फिर उसकी राख किले की छत पर से चारों तरफ बिखेर देने के लिये कहा।

उसने यह सच साबित कर दिया —

जो कॉटे बोता है उसे नंगे पैर नहीं जाना चाहिये

32 अन्त[142]

सभी लोग सियोमैटैला[143] की आखिरी कहानी सुनते रहे। कुछ ने उसके कहानी कहने के ढंग की तारीफ की जबकि दूसरे लोग उसके सोचने के ढंग के बारे में फुसफुसाये कि राजकुमारी की मौजूदगी में किसी दूसरे दास के बुरे कामों बारे में ऐसा नहीं कहना चाहिये था और खेल को रोकने का खतरा नहीं लेना चाहिये था।

पर लूसिया[144] तो खुद कॉटों पर बैठी हुई थी। जितनी देर तक यह कहानी चली वह सारा समय बेचैनी से इधर उधर हिलती रही। वह इतनी बेचैन थी कि यह बेचैनी उसके मन में उठने वाले तूफान से कहीं ज़्यादा थी।

कहानी में दूसरे दास की तरफ देख कर उसको उसमें अपनी शक्ल दिखायी दी। वह खुशी से वहॉ से उठ कर जा सकती थी पर अपनी उस इच्छा की वजह से जो गुड़िया ने उसके मन में उपजायी थी कि वह कहानियॉ सुने वह उन कहानियों से बच नहीं सकी।

इसके अलावा वह टैडियो[145] को भी किसी शक का मौका नहीं देना चाहती थी सो उसने वह कड़वी गोली निगल ली। उसने सोचा कि वह इसका बदला किसी और समय और किसी और जगह

---

[142] The Conclusion. (Tale No 32) Night 5, Tale No 32

[143] Ciommetella

[144] Lucia

[145] Taddeo

लेगी। पर टैडियो ने जो अब तक इस आनन्द का शौकीन हो चुका था ज़ोज़ा को इशारा किया कि अब वह अपनी कहानी सुनाये।

सो सबको नम्रता से रस्में निभाने के बाद ज़ोज़ा बोली — "माई लौर्ड राजकुमार। सच हमेशा से ही नफरत को जन्म देता रहा है और मैं यह नहीं चाहूँगी कि आपकी आज्ञा का पालन कर के मैं यहाँ किसी को भी जो भी ये सब मेरे आसपास बैठे हुए हैं नाराज करूँ।

पर मैं झूठ बोलने की भी आदी नहीं हूँ और न ही कहानी गढ़ना जानती हूँ। इसलिये अपनी आदत और स्वभाव की वजह से मैं सच बोलने के लिये मजबूर हूँ।

हालाँकि कहावत तो यही कहती है कि "सच बोलो और किसी से मत डरो।" फिर भी मैं यह जानते हुए भी कि राजकुमारी जी की मौजूदगी में सच कोई सुनना नहीं चाहता मैं डरते हुए बोलती हूँ कि कहीं ऐसा न हो कि मेरी कोई बात आपको बुरी लग जाये।"

टैडियो बोला — "तुम्हें जो कुछ कहना हो वह आराम से कहो क्योंकि तुम्हारे सुन्दर होठों से जो कुछ भी निकलेगा मीठा ही होगा।"

टैडियो के ये शब्द दासी के दिल को छेद गये। जैसे कि सबने यानी काले और गोरे दोनों ने "आत्मा की किताब"[146] देख ली हो। और उसने इन कहानियों से बचने के लिये अपने हाथ की एक उँगली कटा दी होती।

---

[146] Book of Soul

क्योंकि उसकी आँखों के सामने सब कुछ अपने चेहरे से भी ज़्यादा काला होता जा रहा था। वह डर रही थी कि यह आखिरी कहानी किसी धोखाधड़ी की शुरूआत है और इस बादलों वाली सुबह से वह सारा दिन कितना बुरा होगा यह जान सकती थी।

इस बीच ज़ोज़ा ने अपने दुख की कहानी शुरू से आखीर तक कह कर सबके ऊपर अपने मीठे शब्दों का जादू डालना शुरू कर दिया था। उसने अपने स्वाभाविक दुख से शुरू कर के सारी तकलीफों के सहने का वर्णन, स्त्री का शाप, उसका तकलीफों भरा इधर उधर घूमना, फव्वारे तक आना, उसका ज़ोर ज़ोर से रोना और वह बदनसीब नींद जिसने उसको बर्बाद कर दिया।

ज़ोज़ा की पूरी कहानी सुनते हुए और नाव को भटकते हुए देख कर दासी चिल्लायी — "बस करो। चुप हो जाओ। अपनी जबान काबू में रखो वरना मैं फिर किसी चीज़ के लिये जिम्मेदार नहीं होऊँगी।"

पर टैडियो को समझ में आ गया कि मामला क्या था। वह अब चुप नहीं रह सका सो अपना मुखौटा हटाते हुए और जीन नीचे फेंकते हुए चिल्लाया — "उसको अपनी कहानी खत्म करने दो और यह सब तमाशा खत्म करो। मुझे काफी बेवकूफ बनाया जा चुका है। और अगर जो मैं सोच रहा हूँ वह सच है तो अच्छा होता कि तुम कभी पैदा ही नहीं हुई होतीं।"

उसके बाद अपनी पत्नी के धमकी देने के बाद भी उसने ज़ोज़ा को अपने कहानी जारी रखने के लिये कहा। और ज़ोज़ा जो इस इशारे का इन्तजार ही कर रही थी अपनी कहानी आगे सुनानी शुरू की। कि किस तरह से दासी ने वह घड़ा लिया और इस तरह से उसकी अच्छी किस्मत छीन ली थी।

यह कहते कहते वह रो पड़ी और ऐसे रोयी कि वहाँ बैठे सब लोग उसके साथ रो पड़े।

टैडियो जो ज़ोज़ा के आँसुओं और दासी की चुप्पी से सारा मामला समझ गया। उसने लूसिया को बहुत डाँटा और हुक्म दिया कि उसको गर्दन तक ज़िन्दा गाड़ दिया जाये ताकि वह एक दर्द भरी मौत मर सके।

उसने ज़ोज़ा को गले लगा लिया। उसको राजकुमारी और पत्नी का दर्जा दिया। उसने वुड वैली के राजा को भी दावत में बुलाया।

इस नये सम्बन्ध ने दासी का बड़ापन और इन कहानियों का आनन्द खत्म कर दिया। आपका भी इन्होंने भला भी किया होगा और आपकी तन्दुरुस्ती को भी बढ़ाया होगा। आप भी अब इसे न चाहते हुए भी उठा कर रख दें जैसे मैं रख रहा हूँ। दुखी होते हुए और मुँह में शहद ले कर अब मैं आपसे विदा लेता हूँ।

Translations of Il Pentamerone

This Italian collection of folk-tales, now known as Il Pentamerone was first published at Naples, and in a Neapolitan dialect that kept it out of northern European tradition for two centuries, by Giambattista Basile, Conte di Torrone, who is believed to have collected them chiefly in Crete and Venice, and to have died in the 1630s.

Originally it was called Lo Cunti de li Cunto (The Story of Stories, 1634). Published posthumously, it became known as the Pentamerone by 1674 and eventually influenced the form of fairytales in Europe. The frame-story is of a group of people passing time by sharing stories, as in the Decameron and other European collections of tales. The Pentamerone tells 50 tales over five nights.

The following illustrated version only contains 32 of the tales, follows the translation by John Edward Taylor published in 1847, and was published by Macmillan and Co, London 1911. The Pentamerone, despite being an influential classic, seems to have been largely ignored by translators and publishers. Full text was translated by Sir Richard Burton in 1893 and is available online in public domain

First Published in Neapolitan language in 1634 and 1636 by Giambattista
First translation in German language, in 1846, by Felix Liebrecht
Second translation in English language, in 1847, by John Edward Taylor – 32 tales
Third translation in English language, in 1893, by Sir Richard Burton – 50 tales
Fourth translation in Italian language in 1925, by Benedetto Croce
Fifth translation in English language in 1934, by Norman Penzer (from Croce's version)
Sixth translation in modern English in 2007, by Nancy L Canepa
later released as Penguin Classics in 2016
Seventh translation in Hindi language in 2022, by Sushma Gupta

Thus its four English translations are available now. These Italian tales predate Charles Perrault by at least 50 years and the Grimm Brothers tales by 200 years. The original book is not as well known today since it was originally written in the difficult Neapolitan dialect and was not translated into English until 1847 and that was by John Edward Taylor. At that time he translated its selective 32 tales only.

Full List of Stories of Il Pentamerone

The Red titles are in volume 1,
the Blue titles are in volume 2, and
the Black titles are in volume 3.

The First Day

1. "The Tale of the Ogre"
2. "The Myrtle"
3. "Peruonto"
4. "Vardiello"
5. "The Flea"
6. "Cenerentola" – translated into English as Cinderella
7. "The Merchant"
8. "Goat-Face"
9. "The Enchanted Doe"
10. "The Flayed Old Lady"

The Second Day

1. "Parsley" – a variant of Rapunzel
2. "Green Meadow" – author says that this title was changed to "Three Sisters"
3. "Violet"
4. "Pippo" – a variant of Puss In Boots
5. "The Snake"
6. "The She-Bear" – a variant of Allerleirauh
7. "The Dove" – a variant of The Master Maid
8. "The Young Slave" – a variant of Snow White
9. "The Padlock"
10. "The Buddy"

The Third Day

1. "Cannetella"
2. "Penta of the Chopped-off Hands" – a variant of The Girl Without Hands
3. "Face"
4. "Sapia Liccarda"
5. "The Cockroach, the Mouse, and the Cricket"
6. "The Garlic Patch"
7. "Corvetto"
8. "The Booby"
9. "Rosella"
10. "The Three Fairies" – a variant of Frau Holle

The Fourth Day

1. "The Stone in the Cock's Head"
2. "The Two Brothers"
3. "The Three Enchanted Princes"
4. "The Seven Little Pork Rinds" – a variant of The Three Spinners
5. "The Dragon"
6. "The Three Crowns"
7. "The Two Cakes" – a variant of Diamonds and Toads
8. "The Seven Doves" – a variant of The Seven Ravens
9. "The Raven" – a variant of Trusty John
10. "Pride Punished" – a variant of King Thrushbeard

The Fifth Day

1. "The Goose"
2. "The Months"
3. "Pintosmalto" – a variant of Mr Simigdáli
4. "The Golden Root" – a variant of Cupid and Psyche
5. "Sun, Moon, and Talia" – a variant of Sleeping Beauty
6. "Sapia" – given under the title “The Wise Woman”
7. "The Five Sons"
8. "Nennillo and Nennella" – a variant of Brother and Sister
9. "The Three Citrons" – a variant of The Love for Three Oranges

Classic Books of European Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone.**
No 33 By Giovanni Boccaccio. 100 tales

1550 **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales. Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकों की पूरी सूची के लिये इस पते पर लिखें ः :
hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्ऩ। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल विहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights’ Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books “Romantic Tales of the Panjab” and “Indian Nights’ Entertainment”. **1903 and 1892** respectively.
पंजाब की लघु कथाऐं —।

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहॉ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षो तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहॉ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहॉ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहॉ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहॉ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहॉ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022